अवधी कहावतें

डॉ० इन्द्रप्रकाश पाण्डेय

रचना प्रकाशन
४५ए खुल्दाबाद, इलाहाबाद-१

प्रथम सस्करण १९७७

•

प्रकाशक
जीत मल्होत्रा
रचना प्रकाशन
४५ ए, खुल्दाबाद,
इलाहाबाद 1

•

मुद्रक
इलाहाबाद प्रेस
३७०, रानी मंडी,
इलाहाबाद

मूल्य पच्चीस रुपये

स्नेहमयी छोटी बहन सुधा को

भूमिका

कहावत शब्द को ठीक से समझने के लिए उसकी व्युत्पत्ति आवश्यक नहीं है। शिक्षित अशिक्षित समान रूप से कहावत के अर्थ को ठीक समझते हैं और कहावतों का उचित सदर्भों में प्रयोग करते हैं। अशिक्षित समाज में कहावतों का अधिक प्रयोग किया जाता है। अस्तु कहावतों का प्रचलन जितना ग्रामीण समाज मे होता है उतना नागरिक समाज में नहीं। अफ्रीका के कुछ समुदायों मे कहावतों का प्रयोग पचायतों में नजीरों के रूप में किया जाता है। कहावतों को प्रमाण रूप में प्रस्तुत करके पक्ष विपक्ष में निर्णय लिया जाता है। शिक्षित समाज में कहावतों को उतना अधिक महत्व प्राप्त नहीं है। साहित्यिक भाषा में शैली के परिष्कार की दृष्टि से कहावतों का अभाव मिलेगा। यह एक आधुनिक प्रवृत्ति है जो कहावतों के प्रयोग को पुरानापन मानती है। साधारण बातचीत में भी गाँव के लोग जितना कहावतों का प्रयोग करते देखे जाते हैं उतना नगर के लोग नहीं। इतना ही नहीं कहावतों में कुछ ग्रामीणता की गध आने लगी है अत उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से भी देखा जाता है। परिष्कृत रुचि वाला व्यक्ति अपने कथन की पुष्टि के लिए कहावतों का प्रयोग न करके कुछ अन्य साहित्यिक अथवा विद्वानों के कथनों के उद्धरण प्रस्तुत करता है। उसे उद्धरण उस पसन्द हैं परन्तु कहावतों से परहेज। फिर भी कहावतों का विशेष महत्व है और प्राय अनेक नागरिकों एव विद्वानों की सक्षिप्त सूक्तियाँ कहावतों का रूप धारण करती जा रही हैं। कहावतों के उद्भव का एक महत्वपूर्ण स्रोत साहित्य भी है। तुलसीदास की सैकड़ों चौपाइयों का प्रयोग कहावतों के रूप में आज भी होता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से इस विषय का अच्छा अध्ययन किया जाना चाहिए कि अवध क्षेत्र की ग्रामीण जनता किस सीमा तक कहावतों के अनुसार आचरण करती है। यह भी अध्ययन का रोचक विषय हो सकता है कि कहावतों से इस क्षेत्र के लोगों की भाषा और अभिव्यंजन शैली कहाँ तक प्रभावित है, और आधुनिक नागरिक प्रसाद के सन्दर्भ मे कहावतों का कितना विकास या ह्रास हुआ है। रेडियो के सरक्षण में कहावतों की सुरक्षा कहाँ तक हो सकी है।

लोक संस्कृति को शिक्षित समाज की स्वीकृति प्राप्त होने पर दो महत्वपूर्ण परिणाम होते हैं एक तो यह कि ग्रामीण समाज अपने सास्कृतिक रूपों को

समुचित मह व देने लगता है और उसके सरक्षण का प्रयत्न करता है और दूसर उसी आधार पर नये-नये ढग से वतमान रूपो म सशोधन एव परिवधन करन लगता है। भोजपुरी प्रदेश म ये दोनो स्थितियाँ द्रष्टव्य हैं और वहाँ नवीन ताक साहित्य एव सस्कृति का विकास होता जा रहा है। अवधी क्षेत्र की ग्रामीण जनता म अभी अपन सास्कृतिक रूपो के प्रति वह आत्मविश्वास नही पैदा हो सका है जो लोक सस्कृति के सरक्षण एव विकास के लिये आवश्यक है। साहि यिक हिन्दी और नागरिक सस्कृति के विशेष प्रभाव के कारण लोक सास्कृतिक परम्परा क्षीण होती जा रही है। इस विषय का समुचित अध्ययन होना चाहिए और इस पृष्ठभूमि मे कहावता के महत्व पर समुचित विचार करना चाहिये। यदि ग्रामीण जनता में अपनी प्रादेशिक सस्कृति के प्रति उचित सम्मान एव स्वाभिमान न होगा तो निश्चित ही हीन भावना के कारण प्रादेशिक सस्कृति और उसकी परम्परा का ह्रास होगा।

अवध क्षेत्र म, ध्यान देने की बात है कि नगरो की सख्या अपेक्षाकृत अधिक है जिसका प्रभाव ग्रामीण जनता पर बराबर पडता रहता है। अत अवध क्षेत्र की ग्रामीण जनता निरन्तर नागरिक एव औद्योगिक विकास के प्रभाव मे अपनी प्रादेशिक परम्पराओ को भूलती जा रही है। दूसरी बात जो ध्यान देने की है वह यह कि अवध क्षेत्र ने अपनी प्रादेशिक भावना को त्यागकर हिन्दी के व्यापक क्षेत्र के साथ अपनी भावना को समन्वित कर दिया है। भोजपुरी बोलनेवाले जिस प्रादेशिक स्वाभिमान के साथ आपस म भोजपुरी बोलते हैं उसी स्वाभिमान और स्वाभाविकता के साथ अवध क्षेत्र के व्यक्ति अवधी नही बोलते। 'पत्नी या खडी बोली के हित मे अवध क्षेत्र ने अपेक्षाकृत अधिक समपण कर दिया है, जिससे अवध क्षेत्र की ग्रामीण जनता म अवधी के प्रति वाछनीय सम्मान भाव नही रह गया है इसलिये अवधी लोक साहित्य म नागरिकता और खडीबोली की साहित्यिकता का विशेष प्रभाव पडा है। अत कहावतो के प्रयोग मे भी काफी कमी आ गई है।

कहावतो के उद्भव एव विकास के सम्बन्ध मे कोई एक निश्चित सिद्धान्त नही बनाया जा सकता। मानव जीवन के कुछ कायकलाप एव गतिविधि ऐसा सामान्य रूप धारण कर लेता हैं जिनके आधार पर कुछ साधारणीकृत सत्यो का उद्भव होता है। इन्हा साधारणीकृत व्यापारो की स्वीकृति एव कथन कहावतो का मूलाधार हैं। कहावतों म केवल ऐसे सत्यो की स्वीकृति मात्र ही नहीं होता बल्कि उस वाछनीय तत्वों का कथन भी होता है जिन्हे समाज मूल्यवान मानता है। अत कहावतें जहा एक ओर यथार्थवादी जीवन के निरीक्षण पर आधारित

का प्रयोग पुरुष वर्ग द्वारा साधारणतः नहीं किया जायेगा। 'फूहड़ उठी दुपहरी सोय, हाथ बढ़निया दो'हेसि रोय', 'फूहड़ पीत चूल्हा कि मटकावैं कूल्हा, 'वरु न बिअइ छठी खातिर धान कूट', सगी सासु का सासु न बैहैं धावइन जीजी पैया लागी 'सासु ते बर नऊने नाता ऐसि बहुरिया न देय विधाता' इत्यादि। ये समी कहावतें घरलू कामकाज एवं सम्बन्धों पर आधारित हैं जिनका सीधा सम्पर्क पुरुष वर्ग से नहीं है। ऐसा कोई नियम या निषेध नहीं है कि पुरुष वर्ग इन कहावतों का प्रयोग नहीं कर सकते परन्तु उन्हें इनके प्रयोग का अवसर नहीं मिलता। मतलब यह है कि इन कहावतों का सम्बन्ध स्त्रियों के जीवन एवं कार्यकलापों से है जिनका क्षेत्र घर की चहारदीवारी है—चौपाल भी नहीं।

इसी प्रकार कुछ कहावतें केवल पुरुष वर्ग तक ही सीमित हैं जिन्हें स्त्रियाँ नहीं कहतीं। इनका सम्बन्ध केवल पुरुष वर्ग के अनुभवों से है। 'अपनि मराई केहि ते कही पर मसोसा कै दै रहा' 'गाड़ि चिया असि हाथिन का वयाना'—इन दोनों कहावतों का सम्बन्ध लौंडेबाजी से है जो पुरुषवर्ग की मानसिक विकृति की ओर संकेत करती हैं। शालीनता एवं भद्रता के कारण स्त्रियाँ इन कहावतों का प्रयोग नहीं करतीं यद्यपि इन कहावतों की व्यंजना उनके लिए भी उपयोगी हो सकती है। इसी प्रकार 'अनाड़ा चाँपिया बूरि कै खराबा' कहावत का प्रयोग भी साधारणतः स्त्रियाँ नहीं करतीं। स्वाभाविक है कि स्त्रियाँ अपना निन्दा वाली कहावतें नहीं कहतीं। जैसे — शूद्र गवाँर ढोल पसु नारी ई सब ताडन की अधिकारी तिरिया चरित जानै न कोई खसम मारि कै सती होई इत्यादि कहावतें पुरुषों द्वारा ही कही जाती हैं।

इस दृष्टि से अध्ययन करने पर कुछ और भी कहावतें ऐसी मिलेंगी जिनका क्षेत्र प्रारम्भ से ही सीमित था या कालान्तर में परम्परा के कारण सीमित हो गया है। किसी भी सांस्कृतिक रूप का अध्ययन उसके सन्दर्भ में ही किया जाना चाहिए। उसके आदर्श रूप पर भी समुचित विचार करना चाहिए परन्तु वर्तमान स्थिति पर ध्यान रखते हुए विचार करना अधिक उपयोगी होगा। अतः यहाँ पर एक ऐसी स्थिति की ओर संकेत किया गया है जो कुछ सामाजिक तत्वों को स्पष्ट करती है। वस्तुतः कहावतों के आधार पर सामाजिक आदर्शों एवं मान्यताओं को समझा जा सकता है और उनके वर्तमान आचरण की व्याख्या की जा सकती है।

बहुत सी कहावतें अनेक कारणों से भुला दी जाती हैं और बहुत सी नई कहावतें नये सन्दर्भों के उपयुक्त प्रकट हो जाती हैं। एक बार कहावतों के सङ्कलन एवं समुचित अध्ययन के बाद विकास की इस प्रक्रिया पर भी ध्यान दिया जा

ग्रता पर भी संक्षेप में विचार कर लेना समीचीन होगा।

कुछ कहावतें ऐसी होती हैं जिनमें जातियों पर कटाक्षपूर्ण एवं विनोदपूर्ण ए होती हैं। हमारे देश में तो अनेक जातियाँ एवं उपजातियाँ हैं, और प्राय जातियों में एक दूसरे के प्रति विद्वेष की भावना भी रहती है। तुर्कों के प्रति श्वास की भावना ऐतिहासिक स्थितियों पर आधारित है। यहाँ पर तुर्कों तात्पर्य मुसलमानों से है जिन्होंने अनेक बार भारत पर हमले किए और भारत कई शताब्दियों तक शासन किया। हिन्दुओं को इन शताब्दियों में अनेक प्रकार कष्टपूर्ण स्थितियों में गुजरना पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने यह कहना किया चाहे कूकुर विष सुरसरा, तऊ न कर विश्वास तुरुकका।' इसी कार गंगापुत्रों के बारे में कहावत है गंगासुतम् कभी न मित्रम्, जब मित्रम् तब गमम्। 'गंगासुत कभी न सच्चा जो सच्चा हरामी का बच्चा।' जातिगत भेदभाव ऊँच नीच की भावना भी प्रमुख है। एक उदाहरण प्रस्तुत है 'बिरइन माँ जस ौं रैयत माँ सरदाना। कायस्थों में सक्सेनाओं को सबसे नीचा स्थान दिया गया। कुछ अन्य उदाहरण भी बड़े रोचक हैं 'अम्मा नाम्मू बनिया गरु दावी ते य। कायथ कौआ करहगा मुर्दा हूँ ते लेय।' इसमें बनिया का लोभ और यस्थ की निर्ममता प्रकट है। 'आगे कनागत फूले काँस बाह्मन उछलैं नौ नौ ाँस।' इसमें ब्राह्मण का मजाक बनाया गया है। 'कबहूँ पाडे घिउ पूरो कबहूँ टक उपास' पाडे समुदाय पर कटाक्ष है। 'नगरा म ताना मूद उताना। शूद्र ग के लोगों की निन्दा की गई है। 'पीरर पात बराबर डार धरके कै बिटिया गरके वे बोरे।' या प्रमुख ब्राह्मणों में आरर (कुलीन) और धाकर दो वग ाते हैं। धाकर जो छोटे होते हैं उनकी लड़की बड़े घर ब्याह करे यह आकर कायकुब्जों को अच्छा नहीं लगता। जातिगत, ऊँचनीच और भेदभाव संबंधी तमाम कहावतें हैं। इनके अतिरिक्त अनेक छोटी छोटी कविताएँ हैं जिनके द्वारा एक दूसरे का मजाक बनाया जाता है। इसी प्रकार क्षेत्र एवं गाँवों से सम्बन्धित कहावतें या कविताएँ होती हैं जिनका सकलन यहाँ पर नहीं किया गया है।

कहावतों का सम्बन्ध ग्रामीण जीवन से अधिक है इसलिए स्वाभाविक है कि कृषि सम्बन्धी बहुत सी कहावतें हों। और क्योंकि कृषि का सीधा सबध मौसम से है इसलिए मौसम पर जो अनेक कहावतें हैं जिनमें से कुछ को इस ग्रंथ में संकलित किया गया है। प० राम नरेश त्रिपाठी ने ग्राम साहित्य में ऐसी तमाम कहावतों को प्रस्तुत किया है। उनमें अधिकांश कहावतें घाघ और भड्डरी

के नाम से प्रस्तुत की गई हैं। यहाँ पर घाघ और भडडरी की कतिपय ऐसी ही कहावतों को प्रस्तुत किया गया है जो अवधी क्षेत्र में प्रचलित हैं। क्षेत्र की मौखिक परम्परा में प्रचलित कहावतों के उद्भव एवं विकास के अध्ययन में घाघ एवं भडडरी जैसे अनुभवी एवं बुद्धिमान व्यक्तियों का बड़ा हाथ होता है परन्तु इन लोगों की सभी उक्तियाँ न तो प्रचलित हो पाती हैं और न कहावत का काम ही देती है। सक्रिय मौखिक परम्परा ही लोक साहित्य का प्रमुख लक्षण है।

हमारे देश में ही नहीं बल्कि समस्त संसार में खेती के लिए वर्षा का विशेष महत्त्व है। अन्य सिंचाई के साधनों के अभाव में वर्षा का महत्त्व और बढ़ जाता है। अतः वर्षा संबंधी कहावतें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। अनेक आधारों पर खेती के लिए आवश्यक वर्षा के संबंध में भविष्य वाणियाँ की गई हैं, जिनमें से अधिकांश विश्वासमात्र हैं। वर्षा के संबंध में भविष्यवाणी का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है केवल बादलों के रंग और वायु की दिशा है। फिर भी जनता में ये विश्वास व्यापक रूप से मान्य हैं। खेती के लिए अनुकूल तथा प्रतिकूल मौसमों और हवाओं के लिए भविष्यवाणियाँ इन कहावतों में की गई हैं। इन कहावतों का आधार निरीक्षणगत अनुभव है जो हमेशा सही नहीं सिद्ध होता। फिर भी हवा के रुख से कुछ उत्प्रेक्षाएं अवश्य की जा सकती हैं जिनके प्रति कहावतों में विश्वास व्यक्त किया गया है।

उत्तरभारत में पुरवा हवा से ही अधिकांश पानी बरसता है क्योंकि बंगाल की खाड़ी से उठने वाले मानसूनों से ही यहाँ पानी बरसता है। अतः आषाढ़, सावन, भादों में जब मानसून आते हैं तो पुरवा हवा के जरिए ही। इसीलिए कहावत है कि 'आम्बाभोर चलै पुरवाई तौ जा यो बरखा रितु आई।' चमक पच्छिम उत्तर ओर, तो जा या बरखा है जोर। बादल घिरकर उत्तर पश्चिम में चमकने लगें तो वर्षा की संभावना बन जाती है। ऐसी सामान्य मान्यता है कि जेठ महीने में भयंकर गर्मी होनी चाहिए नहीं तो वर्षा कम होगी। 'जै दिन चलै जेठ पुरवाई तै दिन सावन सूखा जाई।' अर्थात् पुरवा हवा में नमी होती है। इस नम हवा के कारण जेठ के फल फीके हो जाते हैं। खरबूजों की मिठास चली जाती है। कुछ तरकारियाँ भी इस हवा में खराब हो जाती हैं। पुरवा हवा का प्रभाव नमी के कारण फल फूल पर विपरीत पड़ता है। पुर्वा हवा में गर्भाधान का निषेध है। 'जो फागुन मास बहै पुरवाई तो आया गोहूँ गरुइ धाई।' अर्थात फल्गुन महीने में पुरवाई हवा के चल जाने से गेहूँ में पाई लग जायेगी क्योंकि हवा में नमी के कारण गेहूँ पूरी तरह नहीं सूख पाते। इसीलिए मृगशिरा नक्षत्र, जो ज्येष्ठ महीने में होता है तप, तो वर्षा ठीक होगी। कहावत है, 'तपै

मिगमिरा नोय तो बरखा पूरन होय।' दिन म बादल आएँ और रात म निकल जायें अर्थात तारे चमकने लगे ता वर्षा नही होगी। कहावत है— दिन मों बादर राति मों ओस तो जाना बरखा सो काम।' अगर आकाश लाल पीला होने लगे ता भी वर्षा का आना नही करनी चाहिए। 'लाला पियर जो हाय अकास तौ नाही बरखा कै आस।' परन्तु साथ ही यह कहावत भी है कि लाल मर ताल।' इसी प्रकार वर्षा सम्बन्धी अनेक कहावते हैं। अन्य ऋतुओ से सम्बन्ध रखने वाला कहावतें भी हैं जिनका प्रभाव खेती पर होता है। 'हथिया पूछि डोलावै घर बैठ गेहूँ खावै', उदित अगस्त पथ जल सोखा', 'चीत के बरस तीनि जायँ सोथी, मास, उखार' इत्यादि।

कृषि सम्बन्धी कुछ कहावतो का पालन पूर्ण विश्वास के साथ किया जाता है। कारण भी स्पष्ट है—कृषि सम्बन्धी अनुमान एवं निष्कर्ष अटकलो पर नही अनुभवो पर आधारित हैं। इस क्षेत्र म अनुभव के आधार पर लोगो को निश्चयात्मक जानकारी है, अत कहावतो म अधिक सार है। कुछ कहावतें हैं—'पाचै आयु पचासै महुआ तीस बरस मों अमिली का कहुआ।' पाँच वर्ष म आम पच्चीस म महुआ और तीस में इमली फलने लगती है जो ठीक है। 'पाँसि परै ता खेत नाही तो कूडा रेतु।' अर्थात बिना खाद के खेत मे धूल ही धूल होगी और कुछ भी पैदा न होगा। खेत म अच्छी उपज के लिए अच्छी खाद पर्याप्त मात्रा म आवश्यक है। 'बिछरे जात पुरान किया तेहि क खेती छिया छिया। जिसके खेत दूर दूर होने गए हों, बीज पुराना हो तो खेती अच्छी नही होगी। गेहूँ के खेत के लिए खेत की मिट्टी को मैदे की तरह मुलायम और चने के लिए ढेल रखने चाहिए। 'मैदे गोहूँ ढेलै चना।' किसान को खेत जोतने बोने म देर नही करनी चाहिए। जिसके खेत अगहर होते हैं उसको खेती अच्छी होती है, जो पिछड़ जाता है उसके खेत मे कुछ भी नही होता। कहावत है 'आग क खेती आगे आगे, पाछे क खेती भागिन जागै।' 'अगहर खेती अगहर मार कहैं घाघ ते कबहूँ न हार।' वह किसान भाग्यवान समझा जाता है जिसके धान बालो के बोझ से गिर जाएँ और वह अभागा जिसके गेहूँ गिर। धान गिरै सुभागे का गेहूँ गिरै अभागे का।' पछुवा हवा मे, जिसम नमी होती ओसाने के लिए अच्छी होता है क्योंकि दाना पूरा तरह से सूख जाता है। यथा पछुवा हवा ओसावै, घाघ कहैं घुन कबौं न लागै।' इस प्रकार कृषि सम्बन्धी कहावतें इस सकलन म प्रस्तुत हैं।

कुछ कहावतें पुरानी परम्पराओ और विश्वासों म उत्पन्न हो जाती हैं। जितना हो समाज प्राचीन होता है उतना ही अधिक परम्पराएँ एवं रीतिरिवाज प्रचलित हो जाती हैं जिनके समर्थन के लिए कहावतें भी निर्मित हो जाती हैं

पुरोहितो द्वारा सचालित समाज मे और भी अधिक ऐसी धारणाए घर कर लेती हैं जिनका पालन धार्मिक कृत्य बन जाता है। अनेक प्रकार के शकुन विचारों का जन्म होता है जिनपर ध्यान दिए बिना एक कदम मुश्किल हो जाता है। हमारे समाज म इस तरह विश्वासो की प्रचुरता है। सुर विचार करने वाले लोगो की भी कमी नही है। दायें सुर म भोजन करना बाए म पाखाना जाना, किस दिशा की ओर पैर करके सोना, किस दिन यात्रा न करना इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण विश्वास ह। इनसे सम्बन्ध रखने वाली कतिपय कहावतो को प्रस्तुत किया जाता है। नकटे काने आदमी को देखने म अपशकुन होता है। अपनि नाक कटाय दूसर का असगुन करै और तीन कोस तक मिलै जो काना नीट पलै सो बडा सयाना। नए कपडे कब पहनने चाहिए इसका भी विचार है। यथा 'कपडा पहनै तीनि बार बुद्ध, बृहस्पति, शुक्रवार अटके विटके इतवार। यात्रा के समय दिगशूल भद्रा इत्यादि पर बहुत विचार किया जाता है। बुधवार को लडकी अपनी ससुराल के लिए कभी नही बिदा की जायगी। बुधवार खाली दिन माना जाता है। यात्रा क सम्ब ध मे निम्न कहावत महत्वपूर्ण है मगल बुध उत्तर दिसि कालू सोम सनीचर पूरब न चालू जो चलै (बृहस्पतिवार) का दक्खिन जाय बिना गुनाह पनही खाय। एक पक्ष म यदि चन्द्र और सूय ग्रहण पडे तो समझना चाहिए कि राजा मरेगा या साहूकार। एक पाख दुई गहना राजा मरै कि सुहना। प्रयाग का तीथ रूप म बडा महत्व है परतु ऐस भाग्य कम ही लोगो के होते हैं जिन्ह प्रयागराज के दशन प्राप्त हो अस्तु कहावत है—कुकुरी परागै चली। चोटि चली पराग नहाय। इस प्रकार की विधि निषेध सम्बन्धी सैकडो कहावतें हैं जिनके अनुसार ग्रामीण समाज आज भी सचालित होता है।

समाज नीति सम्ब धी कहावतो की सख्या भी बहुत अधिक है। सांस्कृतिक एव धार्मिक मूल्यो के अनुपालन के लिए और सामाजिक जीवन म सफलता एव प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए ऐसे अनेक नीति वाक्य प्रस्तुत किए गए हैं जिनसे व्यक्तियो को माग दशन प्राप्त होता है। गिरधर वृन्द रहीम तुलसीदास इत्यादि कवियो ने नीति सम्बन्धी हजारो दोहे और कुण्डलियो की रचना की है जिनको कहावतो क रूप म उद्धृत किया जाता है। हिन्दी का नीति साहित्य बहुत समृद्ध है। डा० भोलानाथ तिवारी ने इस विषय को लेकर बहुत सुन्दर प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। इस प्रकार की कहावतो म उपदेश होते हैं जो समाज के आदर्शवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं और कुछ नीति वाक्य बहुत ही यथार्थवादी होते हैं जो व्यक्ति को सावधान करने के लिए बडी उपयोगी सलाह देते हैं। कुछ उदाहरणो मे इस कथन की पुष्टि हो जायेगी। अब पछताए का होत है जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।' काम बिगड़ने पर पछताने स कोई लाभ नही। पहले से सावधान

रहना चाहिए। कुछ और यथार्थवादी नीति कहावतें देखिए —'आठ गाव के चौधरी बारह गाँव के राव अपन काम न आवें तो ऐसी तैसी मा जाये।' 'आलस नींद किसान नासै, चोर नासे खाँसी, आखिन कीचर वमवा नासै बावै नासै दासी।' खेती की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए कहा गया है, उत्तम खेती मध्यम बान निखिद चाकरी भीख निदान। खाय के परि रहै मारि के टरि रहे। 'खेती पाती, बीनती औ घोडे कै तग, अपन हाथ सवारिये लाख लोग हाय सग।' 'समरथ का नाहि दोस गोसाइ। तुलसीदास जी न आदर्श प्रेम को वडो यथार्थवादी भाषा म विश्वास के साथ रखा है। उपदेशात्मक यथार्थवादी कहावता की सख्या आदर्शवादी कहावता की अपेक्षा अधिक है जिससे ग्रामीण जनता के वस्तुवादी दृष्टिकोण का परिचय मिलता है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी कहावता का भी अभाव नहीं है। अनेक ऐसी उक्तियाँ प्रस्तुत की गई हैं जिनमे रोगा से बचने के उपाय बताए गये हैं। 'खाय कै मूतै सूतै बायें ता घर वैद क्वों न जाय।' भोजन करके पेशाब करना चाहिए जिससे 'किडनी' पर अवाछनीय दबाव न पडे और बाई करवट लेटना चाहिए जिससे 'लीवर' पर दबाव न पडे और पित्त रस का बढाव उचित मात्रा म प्राप्त होता रहे। इस कहावत म शरीर रचना और रोग निदान पर काफी ध्यान दिया गया है। 'कम खाय गम खाय हाकिम हकीम के पास कबहूँ न जाय।' इस नीति वाक्य म कम खाने की सलाह दी गई है। किस महीने किस किस चीज म शरीर रोगी हो सकता है इस पर भी विचार प्रस्तुत किया गया है। पूरे बारहो महीने का विवरण है। यथा, 'चैते गुरु, बैसाखे तेल, जैठे पथ असाढे बेलु, सावन सतुआ, भादो दही, कुआर करैला, कातिक मही, अगहन जीरा, पूसै धना, माघ मिसिरी, फागुन चना, ई बारह जो देय बचाय वाहि घर वैद क्वों न जाय।' 'भूखे बैर अघान गाडा ता ऊपर मूरी का डाँडा'—यह कहावत भी इसी के अन्तगत आती है क्योंकि इसम बताया गया है कि भूखे पेट बेर, भरे पेट पर गन्ना और तत्पश्चात मूली खाना चाहिए। खाज के बारे म कहावत की घोषणा है कि इसका कोई इलाज नहीं है वह कातिक मास म आती है जो अपने आप आषाढ म चली जाती है। यथा— आवै कातिक जाय असाढ, काह करै गवक हरतार।' इसी प्रकार अनेक ऐसी लोक मान्यताएँ हैं जो स्वास्थ्य सम्बन्धी हैं। स्वच्छता का शुचिता स समन्वित करके स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक आवश्यक बाता को धार्मिक दृष्टि से आवश्यक बना दिया है। इसी प्रकार भोजन सम्बन्धी तमाम विस्तार दिए गये हैं जिनका स्वास्थ्य से सीधा सम्बन्ध है। यहाँ पर कुछ ही कहावता का उदाहरण के रूप म प्रस्तुत किया गया है। यह सकलन पूर्णता का दावा नहीं करता।

इतिहास सम्बन्धी कहावतें सभी भाषाओं में बहुत कम होती हैं। फिर भारतीय भाषाओं में तो और भी कम हैं क्योंकि हमारे देश में इतिहास पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। दो चार नामों का उल्लेख तो हो सकता है परन्तु उस समय की वास्तविक स्थिति को ध्यान में रखकर कहावतों को नहीं प्रचारित किया गया। एक दो उदाहरण प्रस्तुत हैं 'कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली।' इस कहावत में राजा भोज का नाम लिया गया है और उसके वैभव की ओर संकेत किया गया है। 'रामराज्य' शब्द का प्रयोग भी कहावत के रूप में होता है, जिससे राज्य की समृद्धि, निष्पक्ष न्याय एवं समानता का परिचय प्राप्त होता है। महात्मा गांधी ने इस शब्द का खूब प्रचार किया। 'इक लख पूत सवा लख नाती तेहि रावन घर दिया न बाती।' इस कहावत का प्रयोग भी अहंकारी व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसमें संकेत दिया है कि रावण की भाँति सभी का अहंकार समाप्त हो जायेगा। विभीषण का नाम भी देशद्रोह और भ्रातृद्रोह के लिए प्रयुक्त होता है।

कुछ नारे भी प्रायः कहावतों का रूप धारण कर लेते हैं। अवधी क्षेत्र में ऐसे कुछ नारों का मुझे ज्ञान नहीं है परन्तु पंडित नेहरू द्वारा प्रचारित नारा 'आराम हराम है' सभी जगह प्रचलित हो गया है। कुछ कहावतें मशहूर लोक कथाओं में विषयों के शीर्षकों के आधार पर भी बन जाती हैं जैसे 'धान बेचारे भल बूटे साथ चले या ढपोरसंख कान छोड़ कनपटी मा धुनधुन इत्यादि। ये कहावतें, नारों के पुराने पड़ जाने या कथाओं के अप्रचलित हो जाने पर, समाप्त भी हो जाती हैं। इसी प्रकार अन्य स्रोतों से अनेक नई कहावतों की रचना होती रहती है और पुरानी कहावतों का लोप होता रहता है।

कहावतों में प्रायः परिवर्तन भी होते रहते हैं। विशेष रूप से कुछ अश्लील शब्दों वाली कहावतों में अश्लील शब्दों के स्थान पर अन्य योग्य शब्दों को रख दिया जाता है। जैसे कहावत है 'तेली का तेल जले मसालची की गाँड़ि जले।' इस कहावत में अश्लील शब्द के स्थान पर 'पेट' शब्द का भी इस्तेमाल किया जाता है। जिन कहावतों में इस प्रकार के संशोधन सम्भव नहीं वहाँ कहावत वैसी ही बनी रहती है। यहाँ यह बात भी ध्यान देने की है कि अश्लीलता और श्लीलता के सामाजिक मापदण्ड बदलते रहते हैं। प्रायः ग्रामीण समाज अपनी बहुत सी चीजों को अभद्र मान कर छोड़ देता है। क्योंकि उसके समक्ष नागरिक भद्रता के मापदण्ड प्रस्तुत हो गये हैं। इस संकलन में कुछ ऐसी कहावतों को प्रस्तुत किया गया है जिन्हें भद्र समाज में अनुचित माना जाता है। परन्तु यह अश्लीलता समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिये बहुत ही

सहायक सिद्ध होता है। अभी हाल ही मे गालियो पर एक थीसिस स्वीकृत हो चुकी है। पाश्चात्य देशो म slangs' के कोश बनाये गये हैं।

यहीं आगे बढ़कर कहावतो की भाषा एव रचनाशैली पर भी विचार किया जा सकता है। प्राय कहावत बडी ही चुस्त और प्रभावकारी भाषा म होती हैं। सक्षिप्तता और साकेतिकता उनका प्रमुख गुण होता है। कहावत की भाषा म गठन और निश्चितता होती है। जहा छ द के रूप म प्रस्तुत नही की जाती, वहा भी उसकी भाषा म काव्यात्मक गति एव तीव्रता होती है। उनम अलकारो का समुचित प्रयोग किया जाता है। भाषा सम्बन्धी चमत्कार भी प्राय देखने म आते हैं। एक ही क्रिया से चार-चार कर्त्ताओ का समाधान किया जाता है। रूपको और उपमाओ का प्रयोग होता ही रहता है। तुक और छन्द का आवरण भी प्राय मिल ही जाता है। कहावत कथोपकथन के रूप म भी मिलती है। इन सभी विशेषताओ के उदाहरण प्रस्तुत सकलन म मिल जाएँगे। इसीलिय अनेक कहावतो का यथावत् साहित्यिक कृतियो म सम्मान का स्थान मिल जाता है और अनेक साहित्यिक सूक्तियो का प्रयोग कहावतों के रूप मे होने लगता है। तुलसी दास जी अनेक पक्तियो का प्रयोग कहावतो के रूप म होता है। मैंने प्रस्तुत संकलन म तुलसीदास जी की कुछ ही चौपाइयो के उदाहरण दिये हैं जबकि हजारो ऐसी सूक्तियो का प्रयोग ग्रामीण समाज म कहावतो के रूप मे होता है। यही कहावतो का साहित्यिक पक्ष है जिस पर विस्तार से विचार करने की आवश्यकता है।

नाम और गुण विपयय सम्बन्धी कहावतो की अधिकता ने मेरा ध्यान विशेष रूप स खीचा है जिसकी ओर मैं यहाँ सकेत करना चाहता हूँ। 'नाम श्यामसुन्दर मुँह कूकुरि अस', 'नाम पृथ्वीपाल भुइ बिस्वो मरि नाहीं', 'नाम फूल सिंह गाडि चैला असि', 'नाम सुगन्धा पाद का बिलु'। सस्कृत में पापक वाली कहानी भी इसी तथ्य की ओर सकेत करती है जिसम इस विपर्यय का समाधान किया गया है। परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आज तक किसी का समाधान नही हुआ। आज भी 'यथानाम तथा गुण' की अपेक्षा करते हैं और उनकी अपेक्षा पूर्ण नही होती तो निराश होकर इस प्रकार की कहावत का प्रयोग करते हैं। नाम के अनुसार गुणो का होना असभव है फिर भी मानव स्वभाव उसी की अपेक्षा करता है। दूसरे की अलोचना और निन्दा करने का यह बडा सरल साधन है। हम क्षणभर म किसी को भी इस कहावत स धराशायी कर सकते हैं। हमारे स्वभाव म बड़ाऊपुरी की भावना बड़ी प्रबल होती है परन्तु सघर्ष करने की शक्ति उसी मात्रा म नहीं होती अत शीघ्र विजय प्राप्त करने का यह अच्छा तरीका है। वह अपने नामानुसार गुणो न होने के कारण हमारी लाछना सहे।

अंधरी पीस कुकुरी खाय।
मार फका उडि उडि जाय॥

अँधरी यहा पर बेवकूफ और बेशऊर लोगो या स्त्रियो के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस कहावत म लापरवाही और बेशऊरी पर कटाक्ष किया गया है। ये गृहस्थी की वे औरतें हैं जो लापरवाही के साथ काम करती हैं और घर के बनने बिगडने की चिन्ता नही करती। घर म खास तौर से सासुओ को ऐसे बहुत से अवसर मिलते हैं जब वे बहुओ की लापरवाही, बेशऊरी और अल्हडता को देख कर चिंतित हो उठती हैं। उन्ह ऐसा महसूस होता है कि ये बहुए घर-गृहस्थी चौपट कर देंगी क्योकि उन्ह घर की चिन्ता नही है। सासु ऐसी स्थितियो म इन बहुओ को अंधी समझती है जिनके किये हुए का लाभ बाहरी दुष्ट लोग उठायेंगे जो ऐसी घात म ही रहते हैं। और जो बाहर वाले लोग फायदा नही भी उठाते तो भी इन बहुओ के काम ढग ऐसे हैं कि बरबादी अधिक होती है। इस कहावत मे सासु का चिन्तायुक्त दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है। यह कहावत ऐसे ही अवसरो पर प्राय प्रयुक्त होती है। ३।

अधरे क आगे रोव।
अपनेओ दीदा खोव॥

यह एक सामान्य सत्य है जो बहुत ही सीधे सादे ढग से व्यक्त किया गया है। जिस व्यक्ति म हमारे प्रति सहानुभूति नही है उसके समक्ष अपनी पीडा का कथन अन्धे के समक्ष रोने के समान है क्योकि वह हमारे आँसू देख नही सकता और हमारी पीडा का अनुमान नही लगा सकता। ऐसे व्यक्ति के समक्ष रोना व्यर्थ ही नही अपनी आखो के लिए पीडादायक भी है। रहीम ने इसी प्रकार की स्थिति के आधार पर निम्नलिखित दोहे मे और भी अधिक निराशावादी भावना व्यक्त की है 'रहिमन निज मनकी व्यथा मन ही राखो गोय। सुनि अठिलहैं लोग सब बाँटि न लैहैं कोय॥ इस कहावत मे इतनी निराशा नहीं है क्योकि केवल उसी व्यक्ति के समक्ष अपना दुखडा रोना व्यर्थ है जिसम हमारे प्रति हमदर्दी नही, जो हमारे दुखदर्द के प्रति अन्धा है। यह एक प्रकार का नीति वाक्य है। ४।

अधरे के हाथ बटेर।

यह स्पष्टत एक व्यग्योक्ति है। जब किसी व्यक्ति को कोई दुलभ वस्तु मिल जाती है जिसके लिए वह अयोग्य है एव असमर्थ है तब यह कहावत कही जाती है। परन्तु यदि ऐसा ही होता तो यह कहावत व्यग्य न बनती क्योकि तब

वह केवल सत्य का उद्घाटन करती। किसी के योग्य न होने पर भी उसे कुछ मिल जाता है तो यह मौके या भाग्य की ही बात है, और अवसर पानेवाला भी स्वीकार करता है कि संयोगवश उसे यह प्राप्ति हुई है। परन्तु यह कहावत उस समय भी कही जाती है जब योग्य व्यक्ति को उसकी योग्यता के कारण कुछ प्राप्त होती है, परन्तु हम उसकी योग्यता को स्वीकार नहीं करना चाहते हैं। जब हम उसकी प्राप्ति या उपलब्धि का श्रेय उसे नहीं देना चाहते तब हम कहते हैं कि अंधे के हाथ बटेर लग गयी है। यही कटाक्ष, या व्यंग्य है। ५।

अटका बनिया देय उधार।

इस कहावत में मनुष्य के स्वार्थी स्वभाव पर कटाक्ष किया गया है। बनिया स्वार्थ और लोभ का प्रतिनिधि माना गया है। वह लालची है और तब तक कोई चीज नहीं देता जब तक उसका काम चलता रहता है। काम अटक जाने पर स्वार्थ सिद्ध होने पर वह देता है—वह भी उधार। दे नहीं डालता। इस कहावत में वणिक्वृत्ति पर तो कटाक्ष है और बनिया जाति पर लाछन भी है परन्तु इसका संबंध अधिक व्यापक है। यह सभी ऐसे व्यक्तियों पर लागू होती है जो अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए दूसरों का काम करते हैं। अगर उनका काम रुका न हो तो वे दूसरे की चिन्ता नहीं करेंगे। ऐसे लोग सर्वत्र हैं। बनिया तो यहाँ प्रतीक है। यह हमारे जीवन का एक कटु सत्य है कि व्यापारी लोग अपनी धर्मनिष्ठा में मानवीय व्यवहार को प्रायः भूल जाते हैं। और जो परोपकार करते भी हैं तो वह भी विघ्न निवारण के उद्देश्य से तथा आर्थिक धनोपार्जन के लिए। इसीलिए इस कहावत में जनमानस ने बनिये का प्रतीक माना है। ६।

अक्किल ते बोकरी नौ बच्चा देति है।

इस कहावत से प्रतीत होता है कि भारतीय जनमानस पूर्णतः भाग्यवादी नहीं है। वह विधाता के विधान में भी हस्तक्षेप कर अपने लिए अनुकूलता प्राप्त करने की योजना में है। पूर्ण प्राकृतिक कार्य जिसमें मनुष्य बिल्कुल हस्तक्षेप नहीं कर सकता, बच्चा पैदा होने का कार्य है। परन्तु बकरी के अधिक बच्चे हों इसके लिए वह प्रयत्नशील है। इससे स्पष्ट है कि भारतीय भाग्यवादी उन्हीं मामलों में है जिनमें उसका यत्न काम नहीं देता और वहीं भाग्यवादी है जहाँ वह असमर्थ है। यह बुद्धि प्रयोग से अपना हित सिद्ध करना चाहता है। अतः लाटस ईटर्स के नाम से बदनाम होने पर भी और 'दास मलूका' की अजगर की उपाधि को स्वीकार करते हुए भी वह सक्रिय है प्रयत्नशील है। भारतीय जागृत है और समयानुसार एवं आवश्यकतानुसार वह बुद्धिवादी भी है। इस कहावत में बुद्धि

प्रयोग पर बल दिया गया है और उसकी उपयोगिता व्यक्त की गयी है। वृद्ध व्यक्ति पर यह कहावत लागू होती है। ७।

अक्लि न मिल उधार।
प्रेम न बिक बजार॥

यह बडी ही सुंदर कहावत है। अक्ल या बुद्धि उधार या माँगे नही मिलती और प्रेम का क्रय विक्रय नही होता। अर्थात अपनी अक्ल से काम लो उसी पर निर्भर रहो, उसी का विकास करो। काम पडने पर तुम्हारी ही अक्ल तुम्हारे काम आयेगी। उधार माँगने से काम नही चलेगा। इसी पर एक और कहावत याद आ गयी सिखये पूत दरबार जाय। अर्थात दरबार मे कुछ निश्चित बातो के सीख कर जाने से काम नही चलता। उसके लिए स्वतंत्र बुद्धि की आवश्यकता होती है जिसका क्रमश विकास किया जाता है। आत्मनिभरता बौद्धिक क्षेत्र मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वैसे ही प्रेम भी कोई वस्तु नही है जिसे पैसे देकर बाजार से खरीदा जा सकता हो। ये दोनो ऐसे मानवीय सूक्ष्म तत्व हैं जिनके लिए व्यक्ति को अपने भीतर जाना होगा और उन्हे अपने आभ्यंतर म ही पाना होगा। दूसरे पर निभर होकर न हम बुद्धिमान हो सकते हैं और न प्रेम पा सकते हैं। ८।

अक्लि बुधि हरी।
कहौ किच किच करी॥

यह कहावत वक्ता की विनम्रता व्यक्त करती है। वक्ता विनम्रता म कहता है कि उसकी भावना या बुद्धि हर गयी है—मारी गयी है। इस समय कुछ बोलना व्यथ किच किच करना है। हो सकता है कि वक्ता किसी मानसिक क्लेश या अन्य कठिनाई के कारण किंकर्तव्यविमूढ हो गया हो और ऐसी स्थिति म समझदारी की बात सोच पाना असमव पाता हो। इसलिए बोलना व्यथ समझता हो। यह कहावत कम है उक्ति अधिक है जो वक्ता की मानसिक स्थिति को प्रकट करती है। इसमे कहावत का वह तत्व विद्यमान नही है जो कहावत को 'यूनीवर्सल' या सामान्य उपयोगी बना देता है। हो सकता है कि किन्ही कारणो से वक्ता ऊबा हुआ हो और कुछ बोलना पसन्द न करता हो। कभी दूसरा व्यक्ति भी बेकार मे बकझक करने वाले पर इस कहावत का प्रयोग कर देता है। ९।

अकेला चना भाड़ न फोरी।

इस कहावत म सगठन के महत्व को व्यक्त किया गया है। भडभूजें के भाड मे पड कर एक चना कितनी ही जोर की आवाज क्यो न करे, भाड पर कोई असर नही होता। एक व्यक्ति कितनी ही अच्छा क्यो न हो और कितना ही शक्तिशाली क्या न हो पर जब तक उसका साथ देन वाले और लोग एकत्र नही हो जाते तब तक कुछ अधिक महत्वपूण काय सम्पन्न नहीं हो सकता। भाड जैसे अजेय शत्रु को एक तो क्या करोडो चने मिलकर नही फोड सकते। परन्तु फिर भी इस कहावत से यह आशा व्यक्त होती है कि सगठन होने पर यह भी समव हो सकता है। हा अकेले नहीं होगा। यह एक अलकारिक उक्ति है जिससे सहयोग और सगठन की शक्ति की ओर सकेत मिलता है। साथ ही अकेले व्यक्ति की निबलता पर भी सकेत किया गया है। १०।

अगहर खेती अगहर मार।
घाघ कहैं तौ कबहूँ न हार॥

अवधी क्षेत्र मे घाघ का बहुत सी कहावतें प्रचलित हैं। पर इस कहावत मे दो बाता को एक साथ रखा गया है। खेती और मारपीट के मामलो मे पहल करने वाले लाग कभी नही हारते। साधारणत यह ठीक है कि लडाई झगड़े मे पहल करन की नीति को सवत्र श्रेय दिया गया है। अग्रेजी म "offense is the best defence" कहा जाता है। खेता के मामल म हमेशा अगहर होना लाभ दायक नही हाता। फिर भी खेती मे भी आगे या पहले बोनो करने से लाभ की सम्भावना अधिक रहती है। ११।

अजगर कर न चाकरी पछी कर न काम।
दास मलूका कहि गए सबके दाता राम॥

यह मलूकदास निगुण सन्त, का दोहा है जिसम निष्क्रिय कर्म को महत्व दिया गया है। आलस्य के समथन मे इस दाहे का प्रयाग किया जाता है। परन्तु अधिक तर उस समय कहा जाता है कि जब किसी आलसी पर व्यग्य करना होता है। हमारे देश की सयुक्त परिवार प्रथा के अन्तर्गत कुछ आलसी और कामचोर लोगा का परिवरिश होनी रहती है। यह दोहा उन्ही पर व्यग्य रूप है। इस दोहे से सामान्य भारतीय मनोवृत्ति प्रकट नही होता क्याकि इस दोहे का प्रयोग आलस्य के विरोध म व्यग्यात्मक ढग स किया जाता है। कभी-कभी राम या भगवान पर निभरता के पक्ष म भी इस दोह का प्रयोग किया जाता है कि सबके दाता राम

हैं। पशु पक्षिया का निर्वाह आखिर वहा तो कर रहा है। पर तु आलस्य को प्रोत्साहन देन क लिए दाह का प्रयोग नही होता। भारतीय भाग्यवादी वृत्ति की आलोचना करने के लिए इस दोहे को आधार बनाया जाता है। कुछ आलसी लोग अपने लिए उसका उपयोग करते हैं। १२।

अढाई चाउर अलग चुरति हैं।

साथ मिलकर काम न करने वाले पर इस कहावत के द्वारा आक्षेप किया जाता है। ध्यान देने की बात है कि चावला के कम होने पर उनका ठीक से पकना असम्भव है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्यक कार्य अलग अलग करना अव्यवहारिक है। इस अ यवहारिक पृथकता का प्रात्साहन न देने के लिए इस कहावत का प्रयाग किया जाता है। इस कहावत की यही ध्वनि है कि मिल कर काम करो। जो मनमानी, अपने ढग स, सबस पृथक हाकर कुछ करता है उस पर इन शब्दा म आक्षेप किया जाता है। मिलकर काय करन की *व्यवहारिक सीख इन श दो म यक्त हुई है। कृषि प्रधान देश म और सयुक्त परि* वार वाले समाज म इस कहावन की पूण सार्थकता है। जबकि योरोप के लिए इस कहावत म कोई विशप सार नही है क्याकि अढाई चावल अलग पकाने की उनकी आदत है। १३।

अधार्धुध दरबार मा गदहा पजीरी खाय।

जिस राज्य या घर मे समुचित व्यवस्था के अभाव म बिगाड उत्पन हा जाता है तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। पजीरी सत्यनारायण कथा म प्रसाद रूप म बटती है जिसके अधिकारी केवल भक्त होते हैं, परन्तु दु यवस्था के कारण गधे जस अनाधिकारी प्राणी भी पजीरी का भोग करते हैं। व्यवस्था बिगडने पर सबस कम अनाम लोग भी फायदा उठाते हैं। अधा धु ध होन पर गधे जसे मूर्खों की भी बन आती है और वे भी मजे उडाते हैं। घर की व्यवस्था बिगडने पर प्राय लोग इस कहावत का उपयोग करते हैं। इस कहावत मे उस यक्ति की निन्दा छिपी है जो घर की यवस्था का सचालक है। यग्य रूप मे यवस्था के बिगाडने वाल पर कटाक्ष है। रा य के शासन के सम्ब ध मे भी ऐसा कहा जाता है। १४।

अनाडी चोदया बुरि क खराबी।

अश्लील कहावत है परन्तु इसकी चिन्ता किये बिना लोग इसका काफी प्रयोग करते हैं। किसी नौसिखिए आदमी द्वारा किसी काम के बिगाडन पर यह कहावत

कही जाती है। शिक्षित एवं सम्भ्रान्त स्त्रियों द्वारा यह कहावत नहीं कही जाती। अधिकांश अपढ युवकों द्वारा इस कहावत का प्रयोग होता है। फूहड एवं ग्रामीण स्त्रियाँ भी इस कहावत का प्रयोग करती हैं। हमारे देश मे माँ-बहन की अशोभन गालियाँ प्रचलित हैं जिन्हें मुक्त कण्ठ से दोहराया जाता है। उस तुलना मे यह कहावत तो हल्की है और एक तथ्य को स्पष्ट करती है। मानव जीवन मे सुरुचि के साथ साथ काफी कुरुचि भी है। १५।

अपन हाय जगन्नाथ।

जब कोई व्यक्ति अपने आपको सर्वाधिकारी मान कर किसी की भी चीज का बिना अनुमति के मनमाना उपयोग करने लगता है तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। *तात्पर्य यह है कि अपना हाथ जगन्नाथ अर्थात् सारे ससार का* मालिक है। जब बच्चे कोई चीज मनमाने ढग से निकाल लेते हैं तो माताएँ कहावत का प्रयोग करती हैं। स्वेच्छाचारिता की भी इस कहावत के द्वारा आलोचना की जाती है। सम्भव है कि इस कहावत का कुछ सम्बन्ध जगन्नाथ मन्दिर के प्रसाद वितरण से हो। १६।

अपना पदनी उरदन दोखु।

उद की बनी हुई चीजें अधिक खाने से पेट मे अधिक वायु उत्पन्न हो जाती है और खाने वाला व्यक्ति अधिक पादता है। परन्तु ठीक नियम से भोजन इत्यादि न करने वाले या अपच इत्यादि के कारण भी कुछ लोग बहुत पादते हैं और अपनी इस बुराई को छिपाने के लिए उद को दोषी ठहराते हैं। अपने दोषों, या बुराइयों का कारण किसी अन्य को बताते हैं, तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। पाद की गन्दी बात के कारण इस बहुत लोग नहीं भी कहते। परन्तु घरो मे औरतें इस कहावत का प्राय उपयोग करती हैं क्योंकि घर के अनेक लोग किसी न किसी अवसर पर अपने दोषों को छिपाने के लिए किसी अन्य पर दोषारोपण करते रहते हैं। हमारी यह विशेषता है कि हम अपनी भूल या कमी को स्वीकार नहीं करते। अपने दोषों को छिपाने के लिए किसी अन्य को दोषी ठहराना कहावत का मूल लक्ष्य है। १७।

अपनि अपनि डफ्ली अपन अपन रागु।

मिलकर काम न करने की प्रवृत्ति पर यह उक्ति कही जाती है। प्रत्येक व्यक्ति जब मनमाने ढंग से काय करने लगता है, व्यवस्था, एकरूपता एव सहयोग

की चिन्ता नहीं करता तो समझदार लोग इस कहावत से ऐसे लोगों का तिरस्कार करते हैं। संगीत में ताल-स्वर की एकलयता की नितान्त आवश्यकता होती है। बिना इस लय के संगीत उत्पन्न ही नहीं हो सकता। और जब ढपली पर ताल अलग होगा और राग अलग होगा तो संगीत बनेगा ही नहीं। प्रायः कोरस में ऐसा हो जाता है कि ताल और स्वर में बड़ा अन्तर हो जाता है। सबके स्वर पृथक हो जाते हैं। जीवन की सुचारुता भी उसकी सामान्य एकलयता से उत्पन्न होती है। तभी समाज में व्यवस्था हो सकती है। 'अपनि अपनि ढफली अपन अपन रागु' होने से जीवन की व्यवस्था एवं सुचारुता भंग हो जाती है। अतः मिलकर एक व्यवस्था के अनुसार कार्य करना श्रेयस्कर है। यही ध्वनि है। १८।

अपनि नाक कटाय दूसरे का असगुन कर।

ईर्ष्यालु व्यक्ति अपनी दुष्टता का परिचय अपना अहित करके भी देते हैं। दूसरे का अहित ही उनका परम इष्ट है। उसके लिए वे अपने नुकसान की चिन्ता नहीं करते। अपनी नाक कटा कर दूसरे का असगुन करने को तैयार होते हैं। जिस प्रकार अधिकांश लोगों को परनिन्दा में ब्रह्मानन्द प्राप्त होता है उसी प्रकार कुछ लोगों को दूसरे के अहित में आनन्द प्राप्त होता है। इस वृत्ति के मूल में ईर्ष्या है जो इस प्रकार का घृणित कार्य कराती है। परन्तु ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं होती क्योंकि स्वभावतः मनुष्य दूसरे की उन्नति के प्रति ईर्ष्यालु होता है। (आज कल पाकिस्तान भारत का असगुन करने के लिए अपनी नाक कटाने दौड़ रहा है। इस बात का उसे तनिक भी विचार नहीं है कि भारत पर चीनी आक्रमण पाकिस्तान के लिए कम घातक नहीं है। परन्तु अभी तो भारत का अहित उसकी मूल चिन्ता है।) किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ के समय ऐसे विघ्न सांग व्यक्ति अपशकुन माने जाते हैं। १९।

आपनि मराई केहि से कहै।
पेट मसोसा दै दै रहै॥

अपनी भूल और पराजय मनुष्य किससे कहे? अपने मन में सोचता विसूरता रहता है और पछताता रहता है। यह कहावत सादी है पर एक सत्य को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करता है। इस कहावत में शब्द 'मराई' दृष्टव्य है क्योंकि यह गोंड़ मरान का संकेत है। मराना पराजय की भावना व्यक्त करता है। मराना बुरा समझा जाता है, मारना नहीं क्योंकि उसमें विजय की भावना है। मराने में अपमान की भावना है। अपने इस अपमान को व्यक्ति स्वीकार नहीं करना चाहता

परन्तु उसका सन्ताप उसे बेचैन करता रहता है। इस कहावत में यह भाव भी है कि यह अपमानजनक स्थिति उसकी स्वयं की पैदा की हुई है। पहले उसने परिणाम के बारे में विचार नहीं किया और अब अपमानजनक स्थिति के उत्पन्न हो जाने पर उसे क्लेश हो रहा है। इस कहावत में 'होमोसेक्सुऐलिटी' की ओर संकेत है, जिसे सामाजिक दृष्टि से बुरा माना गया है। २०।

अपनी ही पगिया ते नियाओ क लेओ।

अपनी ही स्थिति के अनुभव के आधार पर न्याय करने की माँग इस कहावत में व्यक्त की गयी है। तात्पर्य यह है कि परिस्थिति विशेष के विषय में अधिक सोच विचार की आवश्यकता नहीं है। आप भी ऐसी स्थिति में पड़ चुके हैं और सभी इस प्रकार की परिस्थितियों में कभी न कभी पड़ जाते हैं। यह जीवन है जो विषमताओं से पूर्ण है। न्याय करते समय विचार करना चाहिए कि ऐसी स्थिति में वह स्वयं भी पड़ सकता है। और यदि पड़ जाये तो किस प्रकार का न्याय चाहेगा। स्पष्ट है कि व्यक्ति यहाँ पर सहानुभूतिपूर्ण न्याय की माँग कर रहा है और निर्णय के सारे अधिकार उसी पर छोड़ रहा है। पगिया की ओर संकेत सामाजिक सम्मान की दृष्टि से किया गया है। सजा मिलने पर जो सामाजिक अपमान होगा, उसका ध्यान अपनी पगड़ी या इज्जत की ओर ध्यान देने पर समझ सके। सहानुभूतिपूर्ण न्याय की माँग इस कहावत में है। २१।

अब पछताये का होत है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेतु।

काम बिगड़ जाने पर पछताने से क्या होता है। पश्चाताप से काम बनता नहीं। जब मनुष्य कुछ कर सकता था जिससे दुखपूर्ण स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु तब ध्यान नहीं दिया। बाद में बिगड़ जाने पर पछताने से बिगड़ा काम नहीं बनता। अगर खेत की रखवाली करता तो चिड़िया खेत न चुग पाती नुकसान न होता। परन्तु तब तो कुछ न किया जब आवश्यक था अब खेत चुग जाने पर पश्चाताप से कोई लाभ नहीं। इस कहावत में समय पर काम करने की बड़ी अच्छी सीख है। किसानों का इससे बड़ा नुकसान और क्या हो सकता है कि उनका खेत चुग जाय ? यदि ऐसे महत्वपूर्ण कार्य के प्रति वे बाहोश और सजग नहीं रह सकते तो पछताना ही पड़ेगा और ऐसे पछताने से कोई लाभ नहीं होगा। २२।

अम्वा नीम्बू बानिया गरु दावे रसु देयँ।
कायथ, कौआ करहटा, मुर्दा हूँ ते लेय॥

यह कहावत किसी कवि की उक्ति है। यह अन्य ग्रामीण कहावतो की भाँति सरल और सीधी नही है क्योकि इसमे अनेक अनुभवो का एक विचार मे पिरोया गया है। इसमे ग्राम्य साहित्यिक्ता है, और इसका प्रयोग भी पढे लिखे और अनुभवी लोग ही करते हैं। प्रथम पक्ति मे एक सत्य को व्यक्त किया गया है कि बिना दबाये स्वार्थ सिद्ध नही होता जिस प्रकार बिना दाबे आम, नीबू से रस नही प्राप्त होता उसी प्रकार बनिया से द्रव्य। दूसरी पक्ति मे दृष्टान्त है कायस्थ, कौआ, मुर्दा घाट के डाम से, जो मरे हुए से भी अपना हक वसूल कर लेते हैं। तात्पर्य यह है कि कठोर होकर मनुष्य इस जीवन मे अपने स्वार्थों की सिद्धि करता है। कुछ जाति के लोगो पर कटाक्ष स्पष्ट है। २३।

अरहरि की टटिया, औ गुजराती ताला।

इस कहावत मे व्यग्य और परिहास है। जब साधारण स्थिति का मनुष्य कुछ विशेष बनने के यत्न मे कुछ असाधारण करता है तो लोग उसका मजाक उडाते हैं। एक गरीब आदमी जो झोपडी मे रहता है, अपनी झोपडी के दरवाजे मे ताला लगाता है, तो एक हास्यास्पद स्थिति ही पैश करता है। पहली बात तो यह है कि वह गरीब है। उसके पास ऐसा कुछ भी नही है जिसकी हिफाजत के लिए ताला लगाने की जरूरत हो। दूसरी बात ध्यान देने की है कि टटिया ही इतनी कमजोर है कि उसे तोडा जा सकता है। अरहर की टटिया से कोई हिफाजत नही हो सकती। साधारण वर्षा और धूप से कुछ बचत भले हो हो जाय परन्तु चोर से बचाव नही हो सकता। चोर ताला न तोड कर टटिया के किसी कोने से प्रवेश कर सकता है और चोरी कर सकता है। अस्तु, सुरक्षा सम्बन्धी यह प्रयत्न मूर्खता पूर्ण है। इस कहावत मे दिखावा या प्रदर्शन के भाव पर भी परिहास है क्योकि *गुजराती ताला उस गरीब का प्रदर्शन है कि वह गरीब नही। अशोभन प्रदर्शन* और मूर्खतापूर्ण सुरक्षा के प्रयत्न पर यह अच्छा व्यग्य है। २४।

अहिरिन साथ गडरियौ माते।

अहीरो की मूर्खता अथवा भोलेपन पर काफी परिहास मिलता है। 'अहिर भाग बरगदे माँ लासा। अहिरिन नाचै उठ तमासा। कौऊन न मिलै तो अहिर ते बतलाय।' इत्यादि उक्तियो के प्रति सामान्य धारणा अभिव्यक्त हैं। ये भोले लोग बडी जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं पानी पर चढा दिया तो और भी मूर्खतापूर्ण

व्यवहार करने लगते हैं। बेचारे नहीं समझ पाते कि लोग उन्हें मूर्ख बना रहे हैं। जबकि गडरिया मे अपने प्रति एक आत्मविश्वास और निश्चितता होती है। इस कहावत मे इसी बात पर आश्चर्य प्रकट किया गया है कि अहिरिन के साथ गडरिया भी पगला गये हैं। अर्थात् जब कोई समझदार व्यक्ति के प्रभाव म आकर नासमझी करने लगता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। गडरिये भेडो के सम्पर्क मे रहने के कारण शान्त और सहनशील समझे जाते हैं। सगति का प्रभाव दिखाया गया है। २५।

अहिरिन अपन दही खट्टा नहीं बतावति।

अपनी चीज को कोई बुरा नही कहता भले ही वह अच्छी न हो। जो अपने की परिधि मे आ जाता है वह ममत्व के घेरे मे आ जाता है। अपना कुरूप बेटा भी मा को सर्वाधिक प्यारा लगता है और दूसरे का बहुत सुन्दर बालक भी अपने से अधिक प्रिय नही लगता। फिर यदि अपनी किसी चीज से आर्थिक या अन्य स्वार्थ सिद्ध होता हो तो वह कभी भी उसके लिए बुरा नही होगा। अपनी चीज को बुरा बता कर कोई उससे स्वार्थ सिद्धि नही कर सकता। बेचन का काम तो और भी मुश्किल है। आज के युग म तो इतनी विज्ञापन बाजी हो रही है कि पता लगाना असभव हो गया है कि कौन सी चीज सचमुच अच्छी है। तो बेचारी अहिरिन ही सत्य भाषण से अपना व्यापार क्यो खोए? कुजडिनि अपने बेर क्यो खट्टे बताये? यह स्वाभाविक है कि कोई भी अपनी चीज को बुरा नही कहता। इसीलिए यह कहावत है। २६।

(आ)

आँखि भा फूली नाम कमलनयन।

इस भाव को व्यक्त करने वाली जितनी कहावतें मुझे प्राप्त हैं, उतनी अन्य एक भाव की कहावतें नही मिलती। कुछ नमूने इस पुस्तक म प्रस्तुत हैं। कदाचित् एक कहावत के वजन पर लोगो ने विभिन्न नामो के आधार पर अनेक कहावतें बना डाली होगी। 'यथा नाम तत गुण' के विपरीत भाव की ये कहावतें इस बात

को सिद्ध करती हैं कि नाम के अनुसार व्यक्ति म गुण नही होते। कमलनयन नाम के व्यक्ति की आँख मे चेचक के कुप्रभाव स्वरूप सफेद फूली हो गयी है जिससे उसे दिखायी भी नही देता। इस सबध मे संस्कृत भाषा म पापक की एक रोचक कथा है जो सर्वविदित है। नाम तो किसी बालक का जन्म के कुछ दिनों बाद ही रख दिया जाता है—कभी कभी पहले स ही निश्चित कर लिया जाता है और उसके गुण, लक्षण धीरे धीरे जीवनपर्यंत बनते बिगडते रहते हैं। अत नाम का गुण धर्म से कोई सबध नही है फिर भी लोग परिहास करते ही हैं। २७।

आँखी एकौ नहीं कजरौटा नौ नौ ठइ।

जब आवश्यकता से अधिक प्रबंध या प्रबंध की चिन्ता की जाती है तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। नौ नौ काजल रखने वाली डिबियाँ एकत्र कर ली हैं और काजल भी पर वह लगाया किसके जाये। बच्चा तो घर म एक भी नहीं। बन्ध्या पर एक व्यंग्य है, क्योंकि जितना ही उस पर यह विदित होता जाता है कि उसके पुत्र नहीं होगा उतना ही अधिक वह पुत्र की अभिलाषा करने लगती है। जो जिसको उपलब्ध नहीं है उसे उस चीज की अधिक अभिलाषा होने लगती है। और यह अभिलाषा इतनी बावली या अन्धी हो जाती है कि व्यक्ति को हास्यास्पद स्थिति एक पहुचा देती है। तब लोग उसकी इस स्थिति का मजाक उडाते हैं। जीवन म यह छूछापन मनुष्य को काफी दुखी बनाये रहता है, क्योंकि जो नहा है उसी की अभिलाषा मनुष्य को चक्र म विवर्तित करती रहती है। इस चक्र म पडा मनुष्य इस कहावत की चोट सहता है। किसी कुरूपा की शृङ्गार प्रियता पर भी कटाक्ष है। आवश्यकता न होने पर भी अनेक प्रसाधनों के एकत्रण पर वक्रोक्ति है। २८।

आँखी न दीदा काढ़ैं कसीदा।

असमर्थताओं के बावजूद जब कोई व्यक्ति कुछ करता है तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। कसीदा काढ़ना अंधे व्यक्ति के लिए असभव है परन्तु यदि वह फिर भी कसीदा काढ़ने की कोशिश करता है तो अपने को हास्यास्पद बना लेता है। व्यक्ति मे इतनी समझ की नितान्त आवश्यकता समझी जाती है कि वह अपनी योग्यता और सामर्थ्य को ठीक से समझे। न समझ कर प्रयत्न करने वाले व्यक्ति निराश और दुखी होते हैं। ऐसे दुख से बचने के लिए उसे अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार अपना काम करना चाहिए। केवल अभिलाषा से

काम नही बनता। हर आदमी हर काम कर भी नही सकता। यह मनुष्य को समभना चाहिए। न समभने पर यदि मनुष्य अन्धे की भांति कसीदा काढने की कोशिश करता है तो न केवल निराश होता है बल्कि अपना परिहास कराता है। २६।

आधर न्यौते दुई जने साथ।

यह व्यावहारिक नीति पर आधारित है। अयोग्य एव अनुपयुक्त व्यक्ति को काम सौंपने पर काम बढेगा ही, काम पूरा नही होगा। अन्धे व्यक्ति को यदि भोजन पर आमन्त्रित किया तो दो व्यक्तियो को भोजन कराने की तैयारी रखनी चाहिए क्योकि अन्धे का सहायक भी उसके साथ आयेगा। अत सोच समभ कर ऐसे व्यक्ति को काम सौंपना चाहिए जो काम को पूरा कर सके। यदि प्रबधक व्यक्ति इतनी समभदारी से काम नही लेता कि किसको क्या काम सौंपे तो काम बिगडता ही है और बढता ही है। तब इस कहावत को चरितार्थ करने का अवसर पैदा होता है। राजकाज मे इस समभदारी की बडी आवश्यकता होती है, नही तो शासन व्यवस्था बिगडती है और खर्च बढता है। जैसा आजकल हो रहा है। ३०।

आंधी के आगे ब्याना क बतास।

आँधी की तेज हवा म पखे की हवा का क्या प्रभाव? बडे महत्वपूर्ण व्यक्तियो के सामने साधारण व्यक्तियो का क्या मूल्य? परन्तु जब कभी ऐसा साधारण आदमी कुछ प्रभाव पैदा करने की कोशिश करता है तो अन्य उसका मजाक बनाते हुए कहते है कि आंधी के आगे ब्याना के बतास। दूसरी बात ध्यान देने की है कि उसके इन साधारण प्रयत्नो की आवश्यकता ही नही है क्योंकि पहले से ही उस दिशा मे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली प्रयत्न हो रहा है। चलती हुई मोटर का धक्का देकर चलाने जैसा व्यर्थ प्रयत्न है। आँधी म पखे की हवा उसी प्रकार व्यर्थ और अनावश्यक है। परन्तु कभी कभी कुछ लोग इस प्रकार के व्यर्थ प्रयत्न करते हैं। अपना महत्व स्थापित करने के लिए प्राय लोग इसी प्रकार का मूर्खतापूर्ण कार्य करते हैं। ३१।

आए कनागत फूले कांस।
बाम्हन उछल नौ नौ बास॥

इस उक्ति मे ब्राह्मणो पर व्यंग्य है। कनागत के समय तक वर्षा पूरी हो चुकी होती है और कांस के जगल खूब ऊँचे हो जाते हैं, और फूलने लगते हैं

उसी प्रकार ब्राह्मण भी यजमानों के आगमन पर प्रसन्न होते हैं, क्योंकि श्राद्धों में उन्हें खूब दावतें खाने को मिलती हैं। इन दावतों में हलुआ पूड़ी खीर खूब खाने को मिलती है। स्वाभाविक है कि ब्राह्मण प्रसन्न हों। यह कोई कहावत नहीं है। यह तो ब्राह्मण जाति पर व्यंग्य है जो अनुचित नहीं। इसमें उपमा के साथ एक तथ्य का वर्णन किया गया है। ध्वनि है कि मनुष्य अपनी अनुकूलता पर प्रसन्नता से नाचने लगता है जैसे ब्राह्मण दावतें खाकर। ३२।

आए रहे हरिभजन का ओटै लागि कपास।

जब कोई व्यक्ति अपने निश्चित उद्देश्य से हट कर कुछ और करने लगता है, जो इतना उपयोगी और महत्वपूर्ण नहीं होता, तब इस कहावत का उपयोग किया जाता है। जैसे कोई युवक प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए जाय, और वहां वह पढ़ने की अपेक्षा राजनीति में भाग लेने लगे। मूलोद्देश्य के छूट जाने पर जब कोई साधारण काम मनुष्य करने लगता है तो हरिभजन के स्थान पर कपास ओटने का सा काम करने लगता है। वैसे आज की दृष्टि में केवल हरिभजन की तुलना में कपास ओटना अधिक अच्छा काम है परन्तु धार्मिक समाज में हरिभजन को ही अधिक महत्व प्राप्त है। असली बात लक्ष्य भ्रष्ट होने की है, जो इस कहावत में कही गयी है। ३३।

आगि लगाय जमालो दूरि खड़ीं।

अर्थात् झगड़ा लगा कर अलग हो जाना। हर समाज में कुछ ऐसे दुष्ट लोग होते हैं जिन्हें झगड़ा कराने में बड़ा आनन्द आता है। कदाचित स्त्रियों में यह गुण अधिक होता हो क्योंकि कहावत उन्हीं की है पर पुरुषों में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं। ध्यान देने की बात है कि ये लोग स्वयं झगड़े में शामिल नहीं होते। झगड़ा शुरू हो जाने पर दर्शक की भांति आनन्द लेते हैं। लोगों को ऐसी प्रवृत्ति वाले लोगों से सावधान रहना चाहिए। ३४।

आगि लगाव पानी का दौर।

ये भी दुष्ट लोग हैं जो पहले तो आग लगाते हैं झगड़े कराते हैं फिर बुझाने का झगड़ा शान्त कराने का श्रेय भी लेना चाहते हैं। ऊपर वाली स्थिति में तो आग लगाने वाली जमालो सर्वविदित हैं परन्तु इस कहावत का आग लगाने वाला अधिक होशियार है वह परोपकारी बन जाता है। यह मक्कार व्यक्ति जमालो से अधिक खतरनाक है। समाज को ऐसे लोगों से अधिक

सावधान रहना चाहिए। इसी उद्देश्य से यह कहावत कही गयी है कि आग लगा कर पानी को दौड़ने वाले लोग और भी भयानक हैं। झगड़ा कराने के बाद जब लोग चिकनी चुपड़ी बातें बनाते हैं और बड़े शरीफ बनते हैं तो इस कहावत के शिकार होते हैं। ३५।

आगे क खेती आगे आगे।
पाछे क खेती भागिन जागे॥

अगहर खेती के बारे में यह एक और कहावत है कि आगे यानी पहले से खेती की 'बौनी' बुआई इत्यादि का प्रबंध करने वाला हमेशा मीर होता है, खेती में सफल होता है। पिछड़ कर खेती करने वाले के खेत बहुत भाग्यशाली हों तभी उगते हैं। अर्थात् पिछड़ कर खेती करने वालों के खेतों में बीज कदाचित् ही उगते हैं। बहुत सही बात नहीं है इसलिए यह कहावत बहुत प्रचलित भी नहीं। खेती से संबंध रखने वाली अनेक कहावतों में से यह भी एक महत्वपूर्ण कहावत है। ३६

आगे चौकन पीछे रूख।
यह देखौ बैसन का रूप॥

यह बैसों (ठाकुर) के झूठे रुआब का चित्र है। अपनी धाक जमाये रखने के लिए प्रायः गरीब ठाकुरों को बहुत से दिखावे करने पड़ते हैं। इन्हीं के बारे में सुना गया है कि इनके घरों के सामने तो फाटक होता है—मानो घर नहीं किला हो पर पिछवाड़े से घर में सुअर आते जाते हैं। इस दिखावे की एक कथा और भी है। ठाकुर साहेब भोजन करके उठे तो रोटी का टुकड़ा लेकर कुत्ते को बुलाने लगे। बहुत से कुत्ते एकत्र हो गये परन्तु उन्होंने रोटी किसी कुत्ते को नहीं दी। गुस्से में बोले "दुनिया भर के कुत्ते एकत्र हो गये हमारा ही कलुआ न जाने कहाँ जा मरा।" और रोटी छप्पर में खोंस दी। उनके कुत्ता होता तो आता। बड़प्पन की झूठी शान बनाये रखने की कोशिश पर यह कटाक्ष है। ३७।

आगे नाथ न पाछे पगहा।

पूर्ण रूपेण स्वतंत्र और निश्चिंत व्यक्ति के संबंध में यह उक्ति कही जाती है। जिस प्रकार साँड की नाक में न तो नाथ होती है और न वह रस्सी से बँधा होता है। वह तो सर्वथा मुक्त होता है। उसी साँड की भाँति घर परिवार की समस्याओं एवं चिन्ताओं से मुक्त व्यक्ति समाज में दायित्वहीन जीवन व्यतीत करता है और उचित अनुचित की परवाह नहीं करता। ऐसे बिना नाथे साँड रूपी असामाजिक

है, जो बगाल की खाडी के उठे हुए मानसून के साथ चलता है। इस कहावत मे *आम्बाझोर श - वडा सारगर्मित है। आमो को भोर गिराने वाली तेज हवा जो* पूर्व से आती है। होली के आस पास बैसाख तक सूखी पछुवा हवा बहती है जिसस पेडा के पत्ते झर जाते हैं। चैत वैसाख म आम फूलते फलते हैं। जेठ आषाढ म पुरवा हवा चलन लगती है। और जब लगातार यह हवा काफी दिनो तक चले तो समझना चाहिए कि वर्षा हागी। मौसम सबधी यह एक सकेत है। ४४।

आम्ब के आम्ब और जठुलिन के दाम।

दोहरा फायदा। आमो स हम दोहरा फायदा होता है। आम खान को तो मिलते ही हैं और गुठलियाँ भी बिक जाती हैं। कभी आम की गुठलियाँ खायी जाती थी, अब अधिक नही खायी जाती। पहले तो कहा जाता था चारि माह आम्ब खाव, चारि माह जठुनी चबाव चारि माह काटब ससुरारि के सहारे माँ। तेल के अचार मे पटा हुई आम का गुठली ता बडी सुस्वादु हाती है। आमो के देश म आमो स सबध रखने वाली बहुत सी कहावतें होनी चाहिए। जहाँ किसी स्थिति स दोहरा लाभ उठाया जा सके वहाँ इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। ४५।

आलस नींद किसान नासै, चोर नास खाँसी।
आँखिन कीचर बसवा नास, बाब नास दासी॥

जीवन के विभिन्न पक्षा के निरीक्षण पर आधारित यह एक सारगर्भित दोहा है। आलस्य किसान का खासी चोर की, आखा का कीचड या गन्दगी वेश्या की और दासी साधू की दुश्मन है। बिना परिश्रम के खेती नही हो सकती बिना श्रृङ्गार और सजधज के वेश्या को ग्राहक नही मिल सकते, बिना खामोशी के चोर चोरी नही कर सकता और साधु बिना स्त्री स दूर रहे साधना नही कर सकता। इन चार प्रकार के लोगा से इस कहावत का सबध है। अस्तु इस कहावत का उपयोग चार प्रकार के लोगा स सम्बधित है। बहुत ही प्रभावशाली कहावत है। ४६।

आला त सुकुआरे भई।
घिउ परसत माँ फास गई॥

किसी सासु की उक्ति है किसी बहू के प्रति। बस कोई भी किसी के सम्बन्ध म उपयुक्त सन्दर्भ म कह सकता है। पहले ता बडी तारीफ होती थी और बहू

बडी अच्छी थी। परन्तु इस तारीफ ने कदाचित बिगाड दिया। बहू जो पहले बडी कर्त्ता थी अब बडी सुकुमार बन गयी है। अर्थात कामचोर एवं बहानेबाज बन गया है। अब इतनी सुकुमार हो गयी है कि घी परोसने से हाथ मे फाँसें लगती हैं। जब इस प्रकार किसी म परिवतन हो जाता है और अधिकारी व्यक्ति उसे उचित नही मानते तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं। यह कहावत औरतो की है। पुरुष इसका इस्तेमाल नही करते क्योंकि इसम घरेलू जीवन का एक पक्ष व्यक्त हुआ है। इस प्रकार बहुत सी एसी कहावतें हैं जो कवल पुरुषो द्वारा प्रयुक्त होती हैं। ४७।

आव कातिक जाय असाढ़।
का कर गधक हरतार॥

यह कहावत खाज के बारे म है। यह ऐसा फैलगा रोग है कि जाता नही। इसकी निश्चित अवधि है। कातिक मास म खाज होती है और आषाढ तक रहती है। इस बीच कितनी ही दवाइयो का प्रयोग क्या न किया जाय वह ठीक नही होती। खाज अधिकतर बच्चो को अधिक होती है। खाज के कीडे मुलायम खाल मे ही रहते हैं। गधक हरतार मिलाकर लगाया जाता है परन्तु इसका भी कोई प्रभाव नही होता। अस्तु, इसके सबन्ध म कहावत बन गयी। ४८।

(इ)

इक लख पूत सवा लख नाती।
रावन के घर दिया न बाती॥

यह एक उदाहरण है जनता को सावधान करने के लिए। रावण जैसे प्रतापी चक्रवर्ती सम्राट का घर घमड से ऐसा उजडा कि एक लाख पुत्रो और सवा लाख पोतो के होते हुए भी घर म चिराग जलाने के लिए एक भी न बचा। सारा वंश विनष्ट हो गया। जब रावण के साथ ऐसा हो सकता है तो हम सब तो साधारण प्राणी हैं। रावण के विनाश की कहानी हम सबके लिए एक ज्वलत उदाहरण है कि मनुष्य अपने अहकार से किस प्रकार अपना विनाश कर सकता है। जब कोई

व्यक्ति धन या सत्ता के मद म आकर अनाचार करने लगता है ता इसी कहावत के द्वारा उसे सावधान किया जाता है। ४६।

(उ)

उए अगस्त फूले बन कांस।
अब छांडो बरखा क आस॥

अगस्त नक्षत्र म उदय हो जान और कास फूलने के बाद वर्षा की आशा नही करना चाहिए *क्याकि तब तक वर्षा के महीने सावन भादा बीत चुके होते हैं या* बीत रहे हाते हैं। यह मौसम सब धी सकेत किसाना के लिए है। हमारी खेती वर्षा पर निभर है। अब नहरा क खुद जाने से और टयूबवैल' लग जाने से कुछ सुविधा हो गयी है परन्तु फिर मी हमारी अधिकाश खती वर्षा पर निर्भर है क्योंकि गर्मी मे सूखी धरती साधारण सिचाई से गीली नही होती। ५०।

उतरे जेठ जो बोल दादुर।
कहैं भड्डरी बरसें बादर॥

ज्येष्ठ माम के समाप्त होते जाते यदि मण्डक बोलें तो समझना चाहिये कि बादल पानी बरसायेंगे। भडडरी की कहावतें मी काफी प्रचलित हैं। घाघ की तरह भडडरी मी विख्यात हैं। भडडरी ब्राह्मणो म एक जाति भी होती है जो भिक्षावृत्ति और ज्योतिष के सहारे अपना जीवन पालन करते हैं। अत भडडरी के नाम से प्रख्यात कहावतें किसी एक व्यक्ति की बनाया नही भी हो सकती हैं। भडडरी ज्योतिषी को भी कहते हैं अत भविष्य विचार एव भाषण का काय कोई भी भडडरी कर सकता है। 'कहैं भडडरी'' या 'ऐसा बोले भडडरी' का मतलब यह भी हो सकता है कि ज्योतिषी ऐसा कहता है न कि कोई खास व्यक्ति जिसका नाम भडडरी है। भडडरी के नाम से प्रचलित अधिकाश कहावत इसी प्रकार की है जिनका ज्योतिष स कुछ सम्बन्ध है। अभी तक भडडरी नाम का जीवनवृत्त प्राप्त मी नही हुआ है। मौसम सबन्धी कहावत है। ५१

उत्तिम खेती मध्यम बान ।
निखिद चाकरी भीख निदान ।।

सबश्रेष्ठ काम खेती का, दूसरी कोटि का काम मजदूरी का नौकरी का काम निषिद्ध प्रकार का है अर्थात् बुरा है और सबसे खराब पशा भीख माँगने का है। कोई आश्चय नहीं यदि कृषि प्रधान देश के लाग खेती को सवश्रेष्ठ कहें। परन्तु यह प्रसन्नता की बात है कि यहा भीख मागने का तिरस्कार किया है। हमारे देश मे जहाँ 'ब्राह्मण का धन केवल भिक्षा' कहा गया हो जहा लाखो की सख्या मे भिखारी हो और लगभग एक करोड साधु हो जो भिक्षा पर ही जीवन निर्वाह करते हों, यह कथन महत्वपूण है। मेरा अनुमान है कि यह कहावत उस समय की है जब बहुत से लोग पैसा के लालच मे अपनी खेती का काम छोड कर शहरा की ओर जाने लगे होंगे और समाज की आर्थिक व्यवस्था की ओर लोगा का ध्यान गया होगा। ५२।

उदित अगस्त पथ जल सोखा।

अगस्त नक्षत्र के उदय होने पर वर्षा ऋतु का अन्त समझना चाहिए। रास्तो मे बहने वाला पानी सूख जाता है। गावो की कच्ची गलिया तथा बैलगाडिया की लीको मे पानी भर जाता है। वस्तुत पानी का भी वही माग बन जाता है जो मनुष्यों के जाने का है। परन्तु बरसात समाप्त होने पर रास्ता का पानी सूख जाता है और आवागमन प्रारम्भ हो जाता है। ज्यष्ठ मास म तेज धूप के कारण यात्रा का निषेध है। परन्तु चौमासे मे भी (बरसात) यात्रा वर्जित है। बौद्ध जो हमेशा विचरण करते रहते थे वर्षा ऋतु म सघ विहारा म विश्राम करते थे। अस्तु अगस्त नक्षत्र के उदय होने पर वर्षा ऋतु का अन्त हो जाता है और रास्ते खुल जाते हैं। ५३।

उधार काढि ब्योहार चलाव, टटिय डार तारा।
सारे के सग बहिनी पठव तीनिउ का मुह कारा ।।

यह नीति का दोहा है जिसम उधार लेकर दूसरे का देने, टटिया मे ताला लगाने और साले के सग बहन भेजने को अनुचित कहा गया है। तीसरी बात सामाजिक दृष्टि से काफी रोचक है। साले का वाचिक अधिकार बहनोई की बहन पर होता है और परस्पर मजाक चलता रहता है, अगर उसे सचमुच का अवसर प्राप्त हो गया तो असभव नहीं कि मजाक सत्य म परिणत हो जाये।

साले बहनोई का रिश्ता हमारे समाज में बड़ा ही दिलचस्प है। देखिये—अवधी लोकगीत और परम्परा इन्दु प्रकाश पाण्डेय। ५४।

उलटा बादर जो चढ़ै, विधवा खड़ी नहाय।
घाघ कहैं सुनु भड्डरी, यह बरस वह जाय॥

यह भी नीति का दोहा है जिसमें भड्डरी ने वर्षा सम्बन्धी भविष्यकथन भी किया है। बादल का उलटा चढ़ना (एक बादल दूसरे बादल के ऊपर) और विधवा का खड़ा होकर नहाना इस दोहे में वर्णित है। उलटा चढ़ने वाला बादल अवश्य बरसता है और खड़ा होकर नहाने वाली विधवा अपना सतीत्व खोती है। खड़े होकर नहाने से शरीर के मांसल अवयवों का प्रदर्शन हो जाता है जो किसी व्यक्ति को अपनी ओर आकृष्ट कर सकता है। ऐसी स्थिति विधवा के लिए घातक सिद्ध होता है। विधवा को इस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहिए जिससे वह यौन आकर्षणों से बची रहे। नहीं तो उसका जीवन कलंकित हो जायगा और वैधव्य से भी कठिन एवं कठोर स्थिति उत्पन्न हो जायगी। ५५।

उलटा चोर कोतवालु का डांटै।

अपराध या भूल करने वाला व्यक्ति जब अपनी भूल को स्वीकार करने की अपेक्षा उसी को डाँटने लगता है जो उसकी भूल बतलाता है, तो यह कहावत चरितार्थ होती है। चोर कोतवाल को डांटे ऐसी ही उलटी स्थिति है। प्राय समाज में ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अपने शारीरिक बल के कारण धन के कारण या सत्ता के कारण अनुचित व्यवहार करते हैं। और जब उन्हें बताया जाता है कि उन्होंने भूल की है तो नाराज हो जाते हैं और उस व्यक्ति पर अपना सारा आक्रोश उंडेल देते हैं जो उसकी भूल की ओर संकेत करता है। इसी भाव की और कहावत है— राह माँ हगैं ऊपर ते आँखी गुरेरैं।'५६।

(ऊ)

ऊंचि अटारी मधुर बतास।
घाघ कहैं घर ही कैलास॥

साधारण स्थिति का वर्णन इस दोहे में है। यदि घर की छत ऊंची है और ठण्डी हवा चल रही है तो घर ही कैलाश पर्वत की भाँति सुखद है। ग्रीष्म ऋतु

में अँटारियों में सोने में बड़ा मजा आता है। अटारी शब्द में बड़ा रोमांस है, क्योंकि खुले आसमान के नीचे, फिर भी एकान्त में प्रेमी जनों का मिलन प्रायः अटारी पर ही होता है। ऊँची अँटारी में एक लाभ है कि कोई दूसरी अटारी से देख नहीं सकता और हवा भी अधिक मिलता है। अतः घर ही कैलाश पर्वत की भांति आनन्ददायक हो जाता है। कदाचित ग्रीष्म ऋतु में शीतलता की खोज में हिमालय पर जाने वाले लोगों को ध्यान में रख कर यह बात कही है। ५७।

ऊंट के मुंह का जीरा।

कहाँ विशालकाय ऊंट और कहाँ जीरा? कैसे पूरा पड़ेगा? जब कोई चीज, विशेष रूप से खाने की चीज, किसी के लिए अपर्याप्त होती है तो इस कहावत की उपयोगिता सिद्ध होती है। पता नहीं ऊंट जीरा खाता है या नहीं। और यदि नहीं खाता हो तो कहावत की रोचकता और भी बढ़ जाती है। हमारे प्रदेश में ऊँट का साथ जीरे से अवश्य है क्योंकि बनिये सामान ढोने के लिए ऊँट पालते हैं। बनिये ऊँट पर जीरा भी लादते हैं। हो सकता है प्रारम्भ में इस कहावत का अर्थ भिन्न रहा हो अर्थात् ऊँट के खाने के लिए जीरा नहीं है। परन्तु कालान्तर में स्थूल रूपों के आधार पर अपर्याप्तता का अर्थ प्रकट होने लगा हो। ५८।

ऊंट की चोरी निहुरे निहुरे।

यह कहावत बहुत सुन्दर और रोचक है। कोई चोर ऊंट चुराता है और इस डर से कि कोई उसे चोरी करते देख न ले झुक झुक कर चलता है पर यह नहीं सोचता कि उसकी चोरी छिप नहीं सकती क्योंकि ऊंट तो उसकी भांति नहीं झुक सकता। चोर अपनी समझ में बड़ी चतुराई से काम लेता है परन्तु वह चतुराई परिणाम में मूर्खता ही सिद्ध होती है। अस्तु जब कोई इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण चतुराई दिखाता है तो इस कहावत को सरिपत में आता है। ५९।

ऊंट कौनी करवट बैठी?

इस कहावत के पीछे कहानी है। ऊँट की पीठ पर एक ओर मिट्टी के बर्तन लदे हैं और दूसरी ओर अनाज। यदि ऊँट इस करवँट से बैठा जिधर बर्तन लदे हुए हैं तो बर्तन फूट जायेंगे। यही डर है। उसकी बैठक का हिसाब पहले से नहीं लगाया जा सकता। अतः ऊंट की करवँट भाग्य की भाँति पक्ष में हो सकती है और विपक्ष में भी। जिस प्रकार भविष्य और भाग्य अनिश्चित हैं उसी प्रकार

ऊँट का करवट भी जिससे भाग्य बन बिगड सकता है। इस कहावत मे भाग्य की अनिश्चित का ही उल्लेख है। ६०।

ऊँट चढ़े पै कूकुर काट।

ऊँट पर चढे होने पर कुत्ते उसके पैरा के पास तक पहुँच भी नही सकते। फिर भी वह डरता है कि कुत्ते न काट खायें। चिल्ला रहा है कि कुत्ते काटेंगे। ऊट के सवार को कुत्ते नही काट सकते। तात्पय यह कि मनुष्य का प्राय काल्पनिक भय सताया करता है। इस प्रकार भयभीत होने वाले की भर्त्सना की गयी है। दूसरे अथ मे भी इसे रखा जाता है—वह यह कि जब कोई व्यक्ति धनी और समथ होने के कारण साधारण खतरो से मुक्त होता है परन्तु फिर भी साधारण खतरो की चर्चा करता है, तो कहा जाता है कि आपको इन खतरा का क्या डर ? आप तो इन खतरा से मुक्त हैं। या जब कोई काम न करने के लिए अनेक खतरो की बात करते हुए झूठे बहाने बनाता है, तो कहा जाता है कि ऊँट पर सुरक्षित होने पर भी कुत्ते कैसे काट सकते हैं ? ६१।

ऊट हेरान मटुका माँ ढूढ।

किसी चीज़ के खो जाने पर मन व्यग्र और चिंतित हो उठता है। अक्ल ठीक से काय नही करता। ऊट इतना बडा जानवर मिट्टी के मटके के भीतर नहीं समा सकता। परन्तु अक्ल ऐसी मारी जाती है कि उस अनुपात का ध्यान नही रहता और मूखतापूण काय करने लगता है। ऐसी स्थिति म इस कहावत का प्रयोग किया जाता है जब मनुष्य मानसिक सन्तुलन खो बैठता है और इस प्रकार के हास्यास्पद काय करने लगता है।

ऊँ से सबन्धित कई कहावतें इस बात की द्योतक हैं कि ऊट ग्रामीण क्षेत्र म काफी घुसपैठ चुका है। माल लादने के लिए ऊट का साधारण रूप से इस्तेमाल किया जाता है। ऊट को लेकर इस प्रकार बडी ही सायक कहावतो का प्रचलन हो गया है। ६२।

ऊधो के लेबे मा न माधो के देबे मा।

किसी के मामले म न पडने की बात को इस प्रकार व्यक्त किया जाता है। किसी के झमेले म तटस्थ रहने की स्थिति इन शब्दो म व्यक्त हुई है। जब व्यक्ति अपने को हर प्रकार से निर्दोष सिद्ध करना चाहता है तो कहता है कि मैं तो न ऊधो के लेने म न माधो के देने म। मुझे इससे कोई मतलब ही नही है। उद्धव

और माधव मे गोपिकाओ को लेकर विवाद चलता था। पक्ष लेने पर किसी एक के विपक्ष म हो जाना स्वाभाविक है। चतुर लोग इस प्रकार की दुश्मनी मोल लेने से बचना चाहते हैं, और अपने को किसी भी तरफ शामिल नही होने देते। ६३।

(ए)

एक तो करला ऊपर ते नीम्बि चढा।

करेला कडुआ होता है और नीम भी कडुवी होती है। यदि करेले की बेल नीम पर चढा दी गयी तो करेल की कडवाहट बढ जायगी। नीम की भी कडवाहट उसमे आ जायेंगी। ऐसी स्थिति से बचने का भाव इस कहावत मे है। प्रतिकूल परिस्थिति जब कुछ कारणो से और भी प्रतिकूल हो जाये, दुष्ट व्यक्ति किसी अन्य दुष्ट के ससर्ग से और भी दुष्टता करने लगे तो इस कहावत के अनुसार करेला नीम चढा हो जाता है। ६४।

एकु तौ गडेरिन दूजे पियाजु खाए।

एक दोप के विद्यमान होने पर अतिरिक्त दोप उत्पन्न हो जाये तो इस कहावत को कहा जाता है। भेडा के साथ अधिकाश रहन के कारण गडरिये की औरत पहले ही दुर्गन्धित रहती है, यदि वह प्याज खा ले तो दुर्गन्ध बढ जायेगी। दोप या दुगुण के बढने पर ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। दुर्गन्ध की वजह से ही बहुत लोग प्याज या लहसुन नही खाते। गडरिया अपनी इस दुर्गन्ध के कारण अस्पृश्य हो गया है। उसके पास बैठना किसी को पसन्द नही आता। ऐसी स्थिति म प्याज खाकर वह अपनी दुर्गन्धि बढायेगा। अस्तु, पहले से ही प्रतिकूल स्थिति और प्रतिकूल हो जाये तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ६५।

एकु ते डाइन दुसरे हाथ लुकाठा।

इसम भयकरता के बढे हुए रूप को व्यक्त किया गया है। डाइन पहले ही काफी भयकर मानी जाती है। जब कोई स्त्री अस्त व्यस्त बाला और कपडा को लापरवाही स पहन फूहडपना प्रदर्शित करती है ता चुडल की उपमा पाती है।

पागल स्त्री की भाँति। और यदि चुन्नन या डाइन हाथ में जलता हुआ लुराठा और ले ले तो उसकी भयानकता और भी अधिक बढ़ जायगी। अतः जब स्थिति की भयानकता बढ़ जाती है तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं। ६६।

एकु नीम्बि सब गाँव सितलहा।

गाँवों में ही नहीं नगरों में भी श्रद्धालु स्त्रियाँ शीतला देवी की पूजा करती हैं। शीतलादेवी की पूजा चेचक की देवी के रूप में और भी अधिक होती है। यह पूजा गर्मी के चार महीनों की अष्टमियों को होती है। गर्मी में ही चेचक का प्रकोप विशेष होता है। अतः उनके कोप को शीतल एवं शान्त रखने के लिए चैत की अष्टमी को ही शीतल घट की स्थापना होती है जिसमें गंगाजल भरकर रखा जाता है। उस घट में नीम का टेरौआ रखा जाता है। जब सब घरों में शीतल घट की स्थापना होगी तो सभी को नीम के टेरौआ की जरूरत होगी। एक नीम के होने पर टेरौआ की कमी पड़ेगी। इसी स्थिति से कहावत का अर्थ प्राप्त होता है कि माँग अधिक है परन्तु चीज कम। डिमाण्ड अधिक सप्लाई कम। एक नीम के सारे पत्ते नुच जायगे। टेरौआ=नीम की पत्तियों वाली छोटी डाल। ६७।

एकु तौ बीबी सोनो दूजे कान उतना।

किसी स्त्री के शृङ्गार तथा नाज नखरों पर व्यंग्य किया गया है। एक तो बीबी सुन्दर हैं ही ऊपर से कानों के ऊपर वाले हिस्सों में बालियाँ भी हैं। फिर बीबी सीधे मुह क्या बात करेंगी? इसी नखरे पर कटाक्ष करते हुए इस कहावत की रचना हुई है। सांस्कृतिक दृष्टि से इस कहावत का बाह्य आवरण मुसलमानी है। बीबी शब्द का प्रयोग मुसलमानी घरों में होता है और उतन्ना भी मुसलमान स्त्रियाँ छिदवाती हैं और बालियाँ पहनती हैं। उनके प्रभाव स्वरूप कुछ हिंदू स्त्रियाँ भी उतन्ना छिदाने लगी थी, पर चाँदी की जगह सोने की बालियाँ पहनती थी। अस्तु किसी स्त्री के नाज नखरे या शृङ्गारप्रियता पर व्यंग्य इस कहावत के द्वारा किया जाता है। ६८।

एकु पाख दुई गहना।
राजा मर कि सहना॥

इस कहावत का संबंध ज्योतिष से है। एक पक्ष या पखवाड़े में यदि दो ग्रहण पड़े तो अनिष्ट होता है। या तो राजा मर जाता है या साहूकार। सामन्तो

सभ्यता मे राजा और साहूकार दो ही महत्वपूर्ण व्यक्ति होते थे। राजा के बाद महत्व उस साहूकार या श्रेष्ठी का होता था जो वाणिज्य से धनाढ्य हो गया है। राजा को भी कभी-कभी सेठो का सहारा लेना पडता था। यदि इन दो मे से कोई मरा तो समाज का बडा अहित होता था। अब वे पहले ही समाप्त हो गये हैं और धार्मिकता काफी कम हो गयी है। अत जब कोई यह कहावत कहता है तो छोकरे कह देते हैं—'मरन दो।' ६८।

एक बार जोगी, दुई बार भोगी, तीन बार रोगी।

यह कहावत पाखाने जाने के सम्बन्ध मे है। दिन मे एक बार पाखाना जाने वाला साधक या योगी है। अर्थात् एक बार जाना आदर्श है। दो बार साधारण गृहस्थ लोग जाते हैं जो दो बार खाते हैं—त्यागी या सन्यासी या योगी नहीं हैं जो जीवन का स्वाभाविक रूप बनाये हुए हैं। मनुष्य का स्वाभाविक या प्राकृतिक रूप भोग का ही है। तीन बार पाखाने जाने वाला रोगी होता है यह कोई कहावत नहीं है। इसमे विभिन्न स्थितियो के आधार पर व्यक्तियो की विशेषता प्रकट की गई है जो सर्वथा सही भी नहीं है। ७०।

एकु मियान माँ दुई तरवारी नहा रहि सक्तीं।

एक म्यान में दो तलवारें समायेंगी ही नही। अक्सर प्रेम के मामले म यह कहावत कही जाती है—जब एक के दो प्रेमी हो जाते हैं। इस कहावत के द्वारा यह बात प्रकट की जाती है, कि इस प्रकार दो प्रेमी एक साथ नहीं रह सकते। प्रेम के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रो मे भी जहा व्यक्ति एकाधिपत्य का दावा करता है तो इस कहावत का प्रयोग करता है। चुनौती देते हुए व्यक्ति अपने विपक्षी को सावधान कर देना चाहता है कि या तो वही रहेगा या फिर उसका विरोधी 'रकीब'। दो तलवारें एक म्यान मे एक साथ नहीं रह सकती, परन्तु एक समान दो तलवारें बारी-बारी से एक म्यान में रह सकती हैं। प्रेम के एकाधिपत्य भाव के कारण यह सम्भव नहीं कि कोई एक व्यक्ति दो से प्यार कर सके। एक दिल मे दो प्यार नहीं समा सकता। ७१।

एकु हाड, दुई कूकुर।

दो व्यक्तियो को लडाने के सदर्भ मे इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। दो कुत्तो के बीच मे एक हड्डी डाली जायगी तो स्वाभाविक है कि वे दोनो

लड़ेंगे। अंग्रेजी मे इसी को bone contention कहा गया है। एक चीज पर जब दो अपना अधिकार चाहते हैं तो झगड़े की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ७२।

एकु हाथे तारी नहीं बाजति।

जीवन मे मित्रता या शत्रुता एकतर्फा नहीं हो सकती। यदि प्रेम मे दो पक्ष हैं तो संघर्ष में भी दो हैं। मित्रता शत्रुता एकपक्षी नही हो सकती। दोनो तरफ स जब तक सरगर्मी या उत्तेजना नही प्रकट होगी तब तक न मित्रता हो सकती है और न शत्रुता। यदि कोई भी एक पक्ष ठण्डा होगा—पूर्ण क्रिया प्रतिक्रिया या घात प्रतिघात नही होगा तो मित्रता या शत्रुता के भाव म उत्पन्न नही होगा। और भी बात हैं जो एकतरफा नहीं हो सकती। भलाई बुराई सभी कामो की क्रिया प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। अर्थात् ताली बजानी है तो दो हाथा की जरूरत होगा। कभी कभी लोग चुटकी बजाकर दिखाते हैं। परन्तु चुटकी म भी दो अगुलियो और एक अँगूठे की जरूरत होती है। ७३।

(ऐ)

ऐस सोनु कौने काम का कि कान फाटि जाय।

ऐसे श्रृंगार प्रसाधन भी किस काम के जो श्रृंगार के स्थान पर उस अग की हानि कर दें। प्रदर्शन की उत्तेजना म प्राय औरतें नाक के आभूषण पहनती हैं जिससे उनके चलने फिरने म बाधा पडती है। कान और नाक के भारी आभूषणों से उनके कान नाक फट जाते हैं। कैसी विचित्र स्थिति है कि जो आभूषण जिस अग का श्रृंगार करने के लिए होता है उसी अग को विरूप कर देता है, असुन्दर बना देता है। इस कहावत मे ऐसे प्रदर्शनकारी घातक आभूषणो के उपयोग की निन्दा की गयी है, जो बडो समझदारी की बात है। घातक एव हानिकारक प्रिय वस्तु की निन्दा की गई है। ७४।

ऐसी खेती कर भोर भतरा।
एक दिन खाय तीन दिन अतरा॥

क्रुद्ध पत्नी अपने पति की आर्थिक स्थिति की आलोचना कर रही है। विशेष रूप स उसे अपने पति के काम करने के ढग म एतराज है। व्यग्य मे स्त्री कहती

है कि मेरा भतार (पति) ऐसी बढ़िया खेती करता है कि एक दिन खाने को मिलता है तो तीन दिन भूखा रहना पड़ता है। यह कहावत उस समय कही जाती है, जब कोई व्यक्ति डींगें मार रहा होता है। जानकार सत्य को इस कहावत के माध्यम से प्रकट कर देता है। झूठी शेखी बघारने वाले को ऐसे यथार्थवादी शब्द सुनने पड़ते हैं। ७५।

ऐसी होती कातनहारी।
तौ कहे का रहतीं जाघ (गाडि) उघारी॥

इस कहावत में भी लगभग ऊपर वाली कहावत का ही भाव है। कोई किसी के कत्तापिन की तारीफ करता है तो दूसरा व्यक्ति उसके परिणामों के आधार पर उसकी अयोग्यता सिद्ध कर देता है। इस कहावत मे शेखी मारने, डींगें हांकने की बात नही है। हो सकता है कि व्यक्ति अपने प्रयत्नों में ईमानदार हो परन्तु सफल न हो। प्रयत्न एक बात है और सफलता दूसरी बात। दुनिया परिणामों या सफलता के आधार पर मूल्य निर्धारण करती है। अच्छी कातने वाली, हो सकता है, पूरे कपड़े न पा सके। फिर भी इस कहावत मे कटु व्यंग्य है। ७६।

(ओ)

ओसन के चाटे पियास नहीं बुझाति।

प्यास बुझाने के लिए पानी चाहिए। ओस चाटने से मनुष्य की प्यास नही बुझेगी क्योंकि ओस के बूंदों से पर्याप्त पानी नही मिल सकेगा। जब कोई चीज पर्याप्त नही होती और उससे आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। ७७।

(क)

कटी अंगुरी मा मूतब।

गाँवों मे सामान्यत ऐसी धारणा है कि कटे पर पेशाब कर देने से घाव पकता नहीं, और शीघ्र अच्छा हो जाता है। पेशाब 'एंटीसैप्टिक' दवा का काय

करता है। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति की सहायता कर सकता है—जिसकी अगुली कटी है उसकी अंगुली म मूत कर उसका उपकार कर सकता है। आखिर वैसे भी व्यक्ति पशाव का उपयोग नही करता। यह अच्छा उपयोग है। परन्तु कुछ ऐसे लोग होते हैं कि इस प्रकार अपनी निरर्थक वस्तु से भी किसी का हित नही करना चाहते। तभी इस कहावत का प्रयोग किया जाता है कि वह कटी अगुली म नही मूतेगा। अत्यधिक स्वार्थी के लिए यह कहावत कही जाती है। ७८।

कतौं सुधाइउ त बड दोसू।

गोसाइ जी का नीति वाक्य है कि कभी कभी कुछ अवसरो पर सीधापन बहुत घातक सिद्ध हो जाता है। सीधा अथवा अच्छा होना प्रशसनीय गुण है परन्तु कभी कभी इन गुणो स भी बुरे परिणाम उत्पन्न हो जाते हैं। अत सकेत है कि मनुष्य को हमेशा सीधा भी नहीं रहना चाहिए। उसके सीधेपन स लोग अनुचित लाभ उठाते हैं और घातक स्थितियाँ उत्पन्न कर देते हैं। अत सावधान रहना चाहिए। ७९।

कब ते पूना भगतिनि गइ ?
कथरी ओढि पराग गईं।

पूना गाव की तेज तर्रार लडाका बुढिया है जिसने जीवन भर दुष्टता की और गाँव के जीवन म कटुता भरी। लोगो को विश्वास नही होता कि ऐसी औरत भगतिनी हो जायगी और तीर्थ यात्रा पर प्रयाग जायेगी। ऐसी स्त्री को कैसे चैन मिलेगी जिसने आजीवन उलटे पुलटे काम किये हो। अर्थात दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति अपनी दुष्टता छोड भी दे तो लोगो को विश्वास नही होता। उसके अच्छे कामो मे भी लोगो को चालाकी या दुष्टता की गध आती है। ८०।

कबहूँ पाडे घिउ पूरी कबहूँ कटक उपास।

यहा पाँडे (एक ब्राह्मण समुदाय) पर आक्षेप है। पाड़े लोग इस कहावत के अनुसार व्यवस्था और हिसाब किताब के आदी नही होते। अगर आज उन्हे पैसे मिल गये तो घी म बनी पूडियाँ भी घी से खायेंगे और जब सब समाप्त हो जायेगा तो फाके करेंगे। एक गाँव के एक पाडे के बारे म सुना था कि वे पेडे छील कर खाते थे। एक विशिष्ट समुदाय पर कटाक्ष अधिक है। ऐसे किसी भी व्यक्ति पर इसका उपयोग किया जाता है। ८१।

कमरहीन नर खेती कर।
बरधा मरै कि सूखा पर॥

भाग्यवादी दृष्टिकोण का प्रश्रय देने वाली कहावत है। खेती को लोग जुआ खेलना मानते हैं। भाग्य विपरीत हुआ तो सब ठीक होने पर भी अनाज घर नहीं आता। आता है तो घुन खा जाते हैं। और भाग्य साथ दिया तो केवल बीज छींट देने से ही घर अनाज से भर जाता है। भाग्यहीन व्यक्ति खेती करे तो अनेक दुघटनाएँ हो सकती हैं। सूखा या अनावृष्टि हो सकती है, बैल मर सकता है, इत्यादि। परन्तु किसे पता चल सकता है कि कौन व्यक्ति भाग्यहीन है और कौन भाग्यवान। जीवन मे अच्छा बुरा होता ही रहता है। परन्तु निरन्तर अच्छी घटनाओ के कारण हम किसी को भाग्यवान और बुरी घटनाओ के कारण भाग्यहीन कह देते हैं। ८२।

करनी न करतूत पनारा ऐसो चूत।

लेना-देना, करना धरना कुछ नहीं परन्तु जब बखान बहुत होने लगता है तो स्त्रियाँ ही इस कहावत का प्रयोग करती हैं। जब लड़के के विवाह में लड़की के यहाँ से अपेक्षा से कम सामान आता है तो सासु इस कहावत का प्रायः उपयोग करती हैं। कहावत कहने में उन्हें कोई सकोच नहीं होता। शब्द वाच्यार्थ से अधिक ध्यान व्यग्यार्थ की ओर होता है। इसीलिए ऐसे अशोभन शब्द भी वे सरलता से बोल जाती हैं। स्त्रियों को पुरुष अधिक शालीन और शिष्ट समझा जाता है। परन्तु स्वार्थवश बूढ़ी स्त्रियाँ अपनी उचित मर्यादा और शालीनता भूल जाती हैं। बूढ़ी स्त्रियों की बर्राने अथवा बोलते रहने की आदत पड़ जाती है। उसी रवानगी में वे अनाप शनाप, उचित अनुचित बातती रहती हैं। बहुए रोती रहती हैं। ८३।

करिया अच्छर भंसि बराबर।

निरक्षरता का वर्णन है। काला अक्षर निरक्षर के लिए भैंस के बराबर है। वह भैंस जैसी स्थूल चीज समझ सकता है। काले के नाम पर वह भैंस समझता है क्योंकि भैंस काली होती है। छोटे छोटे, काले काले अक्षर वह नहीं पहचान सकता। किसी निरक्षर व्यक्ति को यह उपाधि प्राय दी जाती है—अरे वह तो काला अक्षर भैंस बराबर है। ८४।

कहाँ राजा भोज औ कहाँ गंगू (भोजवा) तेली।

इस कहावत के द्वारा छोटे-बड़े का अन्तर स्पष्ट किया है। इसमे जिस

अन्तर की ओर सकेत किया गया है वह मूलत आर्थिक है परन्तु अब इतना ध्यान नही दिया जाता। प्राय नम्रतावश व्यक्ति स्वय छोटा बनता है और अपने को राजा भोज की तुलना म भोजवा-या गगू तेली मानता है। भोजवा शब्द अधिक सार्थक है क्योंकि शब्द मात्र के प्रयोग और प्रयोग शैली से अन्तर स्पष्ट हो जाता है। भोज सम्मान पूर्ण है और भोजवा निरस्कार पूर्ण। इसका सम्बन्ध सामाजिक स्तर से भी है। ८५।

कहूँ गाडी पर नाव, नाव पर कबहूँ गाडी।

हमेशा एक सी स्थिति नहीं रहती। नाव बढ़ई द्वारा बनाई जाती है और बैलगाडी म लाद कर नदी किनारे लायी जाती है। वही नाव पानी म इतनी समर्थ हो जाती है कि बैलगाडी को इस पार से उस पार पहुँचा देती है। स्थिति भेद से सामर्थ्य म भी अन्तर आ जाता है जो बिलकुल स्वाभाविक है। इस कहावत के अनुसार ही जगत का व्यवहार है। हमेशा हर स्थिति म एक व्यक्ति पूर्ण समर्थ या असमर्थ नही होता। अत परिस्थितियों को ध्यान मे रख कर आचरण करना चाहिए। नगण्य वस्तु भी कभी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। ८६।

कहूँ क इट कहूँ का रोडा।
भानुमती ने कुनबा जोडा॥

भानुमती का पिटारा प्रख्यात है। कुनबा भी विख्यात हो गया है। परन्तु भानुमती ने इतना बडा कुनबा इकट्ठा कैसे किया ? इधर उधर से। भानुमती की सचय वृत्ति कारगर सिद्ध हुई परन्तु लोगो को यह पसन्द नही आया। अत यह तो स्वीकार किया कि भानुमती ने कुनबा जोड लिया है परन्तु किस प्रकार—? यही आक्षेप है इस कहावत मे। पसन्द न आने वाले ढंग की आलोचना इस कहावत स की जाती है। जब किसी व्यक्ति ने अच्छी बुरी तमाम चीजो को सचित कर लिया जिसम न कोई सुरुचि है और न योजना तो वह भानुमती के पिटारे के समान है। ८७।

कहे ते धोबी गदहा पर नहीं चढ़त।

बडी सटीक कहावत है। मनुष्य जब अपने प्रति सचेतन (Self Conscious) हो जाता है तो वही काम नही करता जो साधारणतया करता रहता है। कोई व्यक्ति प्राय गाता रहता है परन्तु उससे कहो—'एक गाना सुनाओ तो वह पचास बहान बनायेगा। धोबी रोज हो घाट गधे पर बैठ कर जाता है।

किसी ने किसी दिन उससे कह दिया गधे पैर सवार हो कर जाओ—उस दिन वह घाट पैदल गया। वह शर्मा गया। गधे पर बैठना कुछ छोटी बात मानी गयी है। इसलिए धोबी कहने पर गधे पर नहीं बैठता-वैसे बैठता है। मेरा ख्याल है कि कहने पर व्यक्ति (self conscious) हो जाता है। ८८।

काम पाद बहुतेरी, पथु ठ्याल डेढ पसरी।

संयुक्त परिवार में ऐसी स्थितियां बहुत सी उत्पन्न हो जाती हैं जिनमें कुछ व्यक्ति अपने फायदे की अधिक सोचते हैं। दो बातें प्रायः देखने में आती हैं—लोग कामचोरी करते हैं। चाहते हैं काम कोई दूसरा कर दे और दूसरी बात यह कि अच्छा भोजन अधिक मात्रा में मिले। और तो कुछ मिलने वाला है नहीं। अतः व्यक्ति बीमारी का बहाना करके काम से बचने की कोशिश करता है और पथ्य में दूध इत्यादि अच्छी पौष्टिक चीजें खाने की कोशिश करता है। इसी वृत्ति पर कहावत में आक्षेप है। खाने के लिए बीमार नहीं है काम करने के लिए है। ८९।

का करै जौ पतनो जो होय मेहरिया जतनी।

जो स्त्री कुशल, होशियार और समझदार हो तो घर गृहस्थी आराम से चल सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ और बाधाओं को भी वह लांघकर घर में उचित व्यवस्था बनाये रख सकती है। तात्पर्य यह है कि घर का निर्माण और गृहस्थी की व्यवस्था स्त्री पर निर्भर है। यह स्त्री की आदर्श स्थिति है और उसमें गृहस्थी के प्रति जागरूक और क्रियाशील रहने के लिए प्रोत्साहन है। यदि गृहिणी चतुर होगी तो गरीबी का अधिक असर नहीं दिखाई देगा। ९०।

काटौ साँप जहाँ मन भाव।

शत्रु के प्रति पूर्ण आत्म समर्पण की भावना इस पंक्ति में व्यक्त हुई है। पराजय स्वीकार कर लेने पर फिर सभी प्रकार के अपमान सहने ही पड़ते हैं। छोटे बड़े अनुमान में कोई अन्तर नहीं रहता। मन के जीते जीत है—मन के हारे हार। साँप कहीं भी काटे परिणाम एक ही है—मृत्यु। जब कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है, तब मृत्यु स्वीकार्य है—कैसे भी हो। चाहे हाथ में काटे चाहे पाँव में। मनुष्य जब ऐसी स्थिति में पड़ जाता है जिसमें कोई बचाव नहीं तो छोटी शर्तें बेकार हैं। मेरे वृद्ध पिता जी लकवे से पंगु बन गये व प्रायः कहते रहते,

'काटो सांप जहाँ मन भावे'। अब तो शरीर रोगग्रस्त होकर निशक्त हो ही गया है। कितने भी रोग कैसे भी आएँ। मृत्यु कोई भी रूप धारण करके आय। ८१।

कान छेदौत कनो गुड़ खोचया लात कनो।

जब कोई काम विवश होकर करना हो पड़ता है कष्ट या पीड़ा के कारण करने का मन नहीं होता है तब यह कहावत कही जाती है। कनछेदन बच्चा के लिए पीड़ादायक होता है परन्तु छिदाना ही पड़ता है। जिस समय कान छेदन होता है उस समय बच्चे को गुड़ के साथ पूरी खिलायी जाती है जिससे बच्चा स्वाद में पीड़ा भूल जाये। अस्तु एक ओर पीड़ा है दूसरी ओर सुस्वादु भोजन। अर्थात् जीवन में पीड़ा भी सहनी पड़ेगी और आनन्द भी प्राप्त होगा। दुख-सुख जीवन की अनिवार्य विवशताएं हैं। ८२।

काना होय तो कोंचि जाय।

सामान्य रूप से बिना किसी का उल्लेख किये निन्दा या आलोचना की जाये। यदि उस जगह कोई व्यक्ति ऐसा होगा जिसने ऐसी कोई बुराई की है तो वह फौरन उस निन्दा का बुरा मानेगा और विरोध करेगा। ऐसा होते ही वक्ता कहेगा काना होय तो कोंचि जाय। यानी जो अपराधी या दोषी होगा उसको तो बुरा लगेगा ही। इस प्रकार सामान्य में से विशेष अपराधी को अलग किया जा सकता है। इस प्रकार सामान्य रीति से व्यक्त किये गये व्यंग्य अपना बड़ा असर रखते हैं, क्योंकि साधारणतया हम किसी को अपराधी या दोषी तो घोषित कर नहीं सकते। ८३।

कानी के बिआहे मां सौ भंझट।

स्वाभाविक ही है कि काना लड़की के साथ कोई शायद ही विवाह करना चाहेगा। और यदि विवाह पक्का हो भी गया तो होने तक अनेक अड़चन पड़ती हैं क्योंकि वह स्वयं अपशकुन है। किसी शुभ काम में या यात्रा के समय कानी सामने आ जाये तो अपशकुन हो जाता है। एक कहावत है "तीन कोस तक मिलै जो काना लौटि पड़ै सो बना सयाना।" तो कानी के विवाह में सौ भंझटों का होना स्वाभाविक है, क्योंकि वह स्वयं साक्षात् बाधा है। पहले ही कार्य कठिन है और तमाम कठिनाइयाँ बढ़ जायें। ८४।

कानी की सराहै कानी क माय।

सच ही है। कानी को प्रशंसा कौन करेगा? उसकी माँ के सिवाय कोई नहीं। अर्थात् खराब चीज़ की कौन तारीफ करेगा? उसके सिवाय और कोई नहीं जिसकी वह चीज है। अस्तु जब कोई व्यक्ति अपनी खराब चीज की प्रशंसा करता है, तो जानकर लोग इसी कहावत के द्वारा व्यंग्य कसते हैं। ८५।

कानी बिना चैन न आवै कानी देखे जरी जायँ।

किसी कानी लड़की की सहेली है जो कानी को बहुत प्यार करती है। परन्तु कानी उसमें ईर्ष्या करती है क्योंकि कानी को सब अपशकुन मानते हैं और उसका तिरस्कार करते हैं जबकि उसकी सहेली को सबसे स्नेह मिलता। अपनी सहेली के इस सौभाग्य से कानी उससे जलती है। कानी की सहेली की मा अपनी पुत्री के कानी के प्रति इस स्नेह की आलोचना करती है। एक समझदार व्यक्ति बाल सुलभ सरलता एवं भावुकता की निन्दा करता है और जीवन के कटु सत्य की ओर संकेत करता है। हम कभी कभी भावुकतावश अपने भोलेपन में अपने हित को नहीं समझ पाते और अहितकारी स्थितियों को हितकारी समझ कर ग्रहण लेते हैं। ८६।

कानी मन सोहानी।

कानी अपने ऊपर स्वयं रीझी है। उसके सौंदर्य पर और तो कोई रीझने वाला है नहीं। आशय यह है कि कुरूप व्यक्ति जब अपने आपको सुन्दर समझने लगता है तो लोगों की आलोचना सहता है और व्यंग्य वाक्य सुनता है। सच तो यह है कि कुरूप से कुरूप व्यक्ति यदि अपने को सुन्दर नहीं तो कुरूप नहीं मानता। कुरूप मान लेना आत्महत्या के समान है। हर व्यक्ति अपने सौन्दर्य एवं गुणों पर रीझा रहता है। अपने इसी स्वभाव के कारण वह उपर्युक्त कहावत का शिकार हो जाता है। ८७।

का पूत बतनो के भागी?

जो कोई कुछ विशेष में स्वर्ण काम कर नहीं पाता परन्तु बातें खूब बनाता है। तब उस किसी तरफ से यह कहावत सुनने को मिल जाती है। क्या बात बातों से भी गया? अरे कुछ नहीं तो कम से कम बातें तो कर ही सकता है। निकम्मे, बातून एवं शेखीखोर व्यक्ति के लिए यह कहावत कही जाती है। ८८।

का बरखा जब कृसी सुखाने ?

नीति वाक्य है। खेती सूख जाने पर वर्षा होने से क्या लाभ ? अंग्रेजी में 'Doctor after death वाली कहावत इसी प्रकार की है। जब कोई जरूरी बात समय पर न होकर समय बीत जाने पर होती है तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। समयानुकूल कार्य ही अपना महत्व रखते हैं। समय बीत जाने पर मृत्यु के बाद उपचार की भाँति है। ९९।

काबुल माँ सब घोड नहीं होति।

काबुल घोडो के लिए मशहूर है, परन्तु वहाँ सब घोडे ही नही होते हैं। किसी विशिष्ट स्थान, वर्ग या जाति का होने के कारण जहाँ के लोग कुछ विशेष गुणो के लिए मशहूर होते हैं वहा के प्रत्येक व्यक्ति के प्रति यह धारणा बन जाती है कि वह भी उसी प्रकार विशेष गुण सम्पन्न होगा। परन्तु ऐसा नही होता। इसी सत्य का उद्घाटन इस कहावत में है कि यद्यपि काबुल घोडा के लिए प्रख्यात है परन्तु वहाँ गधे भी होते हैं। जब कोई व्यक्ति विशेष अपेक्षा के अनुरूप नही निकलता तो उपर्युक्त कहावत का सत्य प्रकट होता है। प्रयाग विश्वविद्यालय गम्भीर विद्यार्थियों के लिए विख्यात है परन्तु वहाँ भी सभी विद्यार्थी अच्छे नही होते। १००।

काम न काज के अढ़ाई सेर अनाज के।

किसी निकम्मे व्यक्ति की निन्दा की गयी है। काम काज कुछ न करना और खाने के समय सबसे अधिक खाना। संयुक्त-परिवार में इस प्रकार के निकम्मे लोग पलते रहते हैं। वे बेशर्म और नोधस हो जाते हैं। पडे पडे आराम करते हैं— गाँव भर की पचायत करते रहते हैं और डट कर भोजन करते हैं परन्तु कोई काम नही करते। युवको में प्राय इस प्रकार के लोग निकल आते हैं क्योकि विवाह हो जाने के बाद जिम्मेदारियाँ बढ जाती हैं जिनका निर्वाह करना ही पडता है, परन्तु बहुत से विवाहित भी ऐसे निकम्मे मिल जाते हैं। जब तक उनके माता पिता जीवित रहते हैं तब तक तो यह निकम्मापन चल जाता है, पर बाद मे नही चलता। १०१।

को हंसा मोती चुगैं की भूखे रहि जाय।

स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए यह उक्ति है कि जिस प्रकार हंस या तो मोती

ही खायेगा नही तो भूखा रहेगा उसी प्रकार आत्म सम्मान रखने वाले व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध काय नही करेंगे। ऐसे व्यक्तियो म एक आन होती है जिसके विरुद्ध वे नही जायेंगे। वे तकलीफें उठायेंगे परन्तु अपने आदर्शों के साथ समझौता नही करेंगे। हस उसी आत्म सम्मानी आदशवादी व्यक्ति का प्रतीक है जो कष्ट भोगेगा, पर तु अपने आदश से नीचे नही गिरेगा। ऐसे आदर्शवादी लोगो की आजकल सवत्र कमी है। समझौतावाद जीवन का आदश बन गया है। अस्तु यह कहावत केवल कहने भर की रह गयी है, ऐसे स्वाभिमानी व्यक्ति बहुत ही कम मिलेंगे। १०२।

कुँजडिनि अपनि बेर खटटे नहीं बतावति।

उसी तरह की कहावत है जैसी ग्वालिनि अपने दही को खट्टा नही कहती। कोई व्यापारी अपनी चीज की बुराई नही करता चाहे वह कितनी ही बुरी हो। वैसे साधारणतया कोई भी अपनी चीज को बुरा नही कहता, फिर व्यापारी कैसे कहेंगे? उनको तो उस चीज से लाभ उठाना है। पैसे कमाना है। अगर ऐसा करें तो दूसरी कहावत चरिताथ करेगा कि 'घोडा घास से यारी करे तो खाये क्या।' जो व्यापारी ग्राहक स यारी करे तो कमाये क्या? परन्तु यदि व्यापार सच्चाई का हो तब तो यह कहावत नही चलेगी परन्तु ऐसा है कहाँ। १०३।

कुकुरिउ पराग जैहैं तौ पतरी को चाटी?

साधारण काम करने वाले लोग यदि धनिया की भाति, बडे सम्पन्न व्यक्तियो की भाँति व्यवहार करने लगेंगे तो उनका काम कौन करेगा? उनका बडप्पन कैसे चलेगा। यदि कारी या कहार बर्तन चौका न करेंगे तो धनिया को करना पडेगा। उन्हीं सम्पन्न व्यक्तियो की ओर से यह कहावत है, और उन्हीं क पक्ष का *समर्थन* करती है। कुत्ते जूठे पत्तल चाटने के लिए बनाये गये हैं अगर वे पत्तल नहीं चाटगे तो यह काम कौन करेगा? अस्तु इनके दृष्टिकोण से पत्तरी चाटने के लिए समाज में कुछ लोगों को बनाये रहना चाहिए। १०४।

कुछ गुरु ढाल कुछु बनिया।

जब काम करने वाला भी कमजोर हो और काम भी कुछ ऐसा ही हो तो काम बिगडता ही है, बनता नहीं। गुड तो कुछ खराब है ही, और उसकी हिफाजत न की गयी हो पतला होकर बह जायेगा। यदि बनिया चालाक और मेहनती है तो कुछ प्रबध करेगा जिससे गुड ज्यादा खराब न हो, परन्तु यदि बनिया भी

वाही से काम बिगडता है तो यह कहावत कही जाती है। हमारे देश म काम के मामले मे ढीलापन इतना अधिक है कि बनिया भी ढीला हो जाता है। ऐसी बात अयन्त कदाचित ही मिले। १०५।

कुल्हिया मा सेतुआ सानै।

छोटे से कुल्हड मे सत्तू सानना असभव है और ऐसा प्रयत्न करने वाला अपनी मूखता का ही प्रदशन करता है। अपनी ओर से तो वह बडी होशियारी दिखा रहा है परन्तु वस्तुत काम बनता नही। उसकी इस होशियारी का परिणाम असफलता है जिसे वह नही जानता। समझदार लोग ऐसे मूखतापूण प्रयत्नो के परिणाम जानते हैं अत वे ऐसे लोगो की भत्सना करते हैं। १०६।

कूकुर नहवाए बछवा न होई।

व्यथ के काम म समय नष्ट करने वाले व्यक्ति की आलोचना इस कहावत मे है। *कुत्ते को नहलाने म समय लगाना व्यथ ही है क्योंकि वह कुत्ता ही बना* रहेगा—गन्दा और अशुद्ध। वह बछडा नही बन सकता जो पवित्र, पूज्य और स्वच्छ है। *सच यह है कि कुत्ता नहाने के बाद धूल मे लोट कर फिर गन्दा हो* जाता है। उसको नहलाने म समय नष्ट करने से कोई लाभ नही। इस सफाई से उसमे सफाई आने वाली नही है। वह अपने स्वभाव को नही छोड सकता। अर्थात बाह्य उपचार से आभ्यतरिक गुणात्मक परिवर्तन नही हो सकता। १०७।

केरा, बीछी, बांस—अपने जनमे नास।

प्रकृति का विचित्र नियम है कि केला बिच्छू और बाँस अपने वश विस्तार से विनष्ट हो जाते हैं। यह एक सामान्य निरीक्षण है जो मानवीय जीवन पर लागू नही होता। कभी कभी ऐसे कुपुत्र उत्पन्न हो जाते हैं जो औरगजेब की भाँति अपने जन्मदाता का ही विनाश करने म अपनी साथकता समझते हैं, तो ऐसी कहावत की साथकता मानव जीवन म भी स्पष्ट हो जाता है—अन्यथा यह प्रकृति की कुछ स्थितियो का वणन है। १०८।

कोऊ न मिलै तौ अहिर ते बतलाय।
कुछो न मिल तो सेतुआ (खिचरी) खाय॥

अहीर बुद्धू कम अक्ल समझा जाता है। *अत उससे बातें करने से कोई लाभ*

नही है। जब कोई और व्यक्ति बातचीत के लिए न मिले और बात करनी ही पड़े तो अहीर से बातें करे अन्यथा नही। भोजन मे सतुआ और खिचड़ी का वही स्थान है जो अहीर का मनुष्यो मे है। जब कुछ भी खाने को न मिले तो सतुआ या खिचड़ी खाये। सत्तू या खिचडी कोई भोजन नही माना जाता है। कभी काम चलाऊ खा लिया। यह कहावत भी अपने वाच्यार्थ मे ही प्रयुक्त होती है। १०९।

कोऊ नृप होय हमैं का हानी।
चेरी छाँडि न होइबै रानी॥

तुलसीदास की मथरा कैकयी को उदासीन पा कर इन शब्दो का प्रयोग करता हैं। "कोई भी राजा हो मुझे क्या नुकसान है? मुझे तो दासी ही बने रहना है—रानी तो बनना नहीं है।" आकाक्षा और अभिलाषा की प्राप्ति न होने पर मनुष्य निराश होकर जब यथा तथ्यता की स्थिति को स्वीकार कर लेता है तब इस चौपाई का इस्तेमाल करता है। देश के किसान और गरीब लोग इसी उदासीनता के शिकार हैं। सन्ताप म उन्नति बाधित होती है। जब मनुष्य मे आकाक्षा ही न होगी तब वह विकास क्या और किस दिशा मे करेगा? परन्तु इस चौपाई को दोहराने वाले हमारे देश म आज भी बहुत से लोग हैं। ११०।

कोऊ लाँगड कोऊ लूल।
कोऊ चलै मटकावत कूल॥

किसी के परिवार मे जब उलटे सीधे व्यक्ति होते हैं जिनके न विचार ठीक होते हैं और न शारीरिक अवयव तो लोग कुछ नफरत स ये पंक्तियाँ कहते हैं। इन पक्तियो म निन्दा का भाव है जिसम सारे परिवार को सम्मिलित कर लिया गया है। यह कहावत कम, व्यक्तिगत आक्षेप अधिक है। अधिक स अधिक यह एक वचन है जो किसी परिवार के व्यक्तियो की विशेषताओ को प्रकट करती है। १११।

कोहनी है तो नेरे, पर मुहे नहीं जाति।

प्राय बहुत निकट होने पर भी कोई चीज प्राप्त नहीं होती। जिस प्रकार हाथ का कोहनी है तो बहुत पास परन्तु मुह तक नहीं पहुँचती। यद्यपि कोहनी की मुह तक पहुँचने स कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता परन्तु एक सत्य का उद्घा

टन अवश्य हाता है । यह बिलकुल ठीक है कि कोहनी मुह मे नही जाती, जीभ से उसका स्पश भी असभव है । उसी प्रकार जीवन मे बहुत-सी चीजें बहुत निकट होते हुए भी प्राप्त नही होतीं । जीवन की यही विडम्बना है । ११२ ।

कौआ चल हस क चाल ।

असुदर, कुरूप अथवा बुरा आदमी जब सुदर या अच्छे आदमी की नकल कर सुदर या अच्छा बनने की कोशिश करता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है । इस कहावत मे घृणा का भाव बिलकुल स्पष्ट है । वैसे यह ठीक है कि कौआ हस की चाल नही चल सकता या नकल करके हस नही बन सकता परन्तु कभी कभी मनुष्य अपने आचरणो का सुधार सकता है । परन्तु सामान्य धारणा बुरे व्यक्ति के प्रति इतनी निश्चित और दृढ बन जाती है कि उसके सुधार मे विश्वास ही नही होता । ११३ ।

कौआ ते कवेलवा सयान ।

कौआ बड़ा चालाक होता है । उसका बच्चा भी कम चालाक नही होता । जब किसी चालाक आदमी का बेटा भी चालाकी दिखा बैठता है तो लोग उसकी चालाकी को पसन्द करते हुए भी तारीफ का भाव दिखाते हुए कहते हैं—'कौआ से कौए का बच्चा ही सयाना है । यहाँ पर यह मान लिया गया है कि कौआ तो चालाक है ही परन्तु उसका बच्चा भी सयाना है इसका विश्वास कौए के बच्चे की किसी चालाकी स होता है । बच्चे की चालाकी पर आश्चय मिश्रित व्याज निन्दा है । ११४ ।

कौन राजा राज करी कौन परजा सुख भोगी ।

साधारण प्रजा इतने लम्बे अरसे से दुख भोगती आ रही है कि उसकी यह धारणा निश्चित हो गयी है कि कोई भी व्यक्ति राज्य करे प्रजा सुखी नही हो सकती । राजा अपने एश्वय की चिन्ता म रहता है, भोग विलास म तल्लीन रहता है उसे इस बात की कभी चिन्ता ही नही होती कि प्रजा के सुख का भार भी उसी के कन्धो पर है । इस कहावत म निराशा का भाव व्यक्त हुआ है । कौन ऐसा राजा राज्य करेगा कि प्रजा सुखी होगी ? कथन के ढग से ही उत्तर मिल जाता है कि कोई ऐसा राजा न होगा । ११५ ।

(ख)

खँटेटी खटिया माँ सोउब ।

खँटेटा खाट मे सोने का मतलब है कि तक्लीफ मे रात बितायी हो या तक्लीफ मे समय बिताया हो । यह कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी बात बात पर खिरझिरा उठता है या गुस्सा होकर उल्टा सीधा बकने लगता है । तब उससे पूछा जाता है कि क्या खँटेटी (बिना बिस्तर बिछी) खाट मे सोये थे कि बिना बात बिगड रहे हो ? नीद लगी थी तो सोने को तो सो गया परतु शरीर को आराम की जगह तक्लीफ मिली । उसी तक्लीफ के कारण वह स्वस्थ मन होकर सोच नही सकता और न समझदारी की बात कह सकता है । ११६ ।

खग जान खग ही कै भाखा ।

चिडियाँ ही चिडिया की भाषा समझती हैं । जब किन्ही दो व्यक्तियो की बातचीत समझ मे नही आती—जब यह पता नही चल पाता कि इन लोगो की क्या योजना है तो समझने की कोशिश करने वाला हार कर यह कहावत कह देता है । अर्थात दुष्टता को भाषा दुष्ट लोग ही समझ सकते हैं, हम जैसे भले लोग नही । एक प्रकार के लोग आपस म एक दूसरे के भावो को पढ लेते हैं या सही अनुमान लगा लेते हैं । दुष्टता की योजना बनाते रहने वाले लोग एक दूसरे की योजनाओ को बिना बतलाए ही समझ जाते हैं । ११७ ।

खटि खटि मर बैलवा बाँधे खाय तुरग ।

खेती म बैलो को कडी मेहनत करनी पडती है जिसका पूरा लाभ बैलो को नही मिलता । घोडा जो खेतो मे बिलकुल भी काम नही करता, मजे म खाता है । जब काम कोई करे और उसका लाभ कोई अन्य उठाय तो यह कहावत कही जाती है । फिर सयुक्त परिवार की बात सामने आती है । हमेशा ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनम परिश्रम करने वाला अपने परिश्रम का पूरा लाभ नही पाता और कुछ लोग बिना मेहनत किये मजे उडाते हैं । जमीदारी प्रथा के अन्तर्गत जमीन्दार भी घोडे की तरह था जो बैठे खाता था । बहेरहाल हमारी सयुक्त परिवार व्यवस्था म घर घर ऐसे घोड़े बँधे खा रहे हैं । ११८ ।

खरवा का होय बेवाई का फाटब,
घर क लहुति मेहरी का डाटब,
बनरे का दानि मूस का हई।
मेहरि मार तो केहि ते कहो॥

पैरा म निर तर गन्दे पानी मे पानी म चलने से खरवा हो जाते हैं। अगु लियो के जोडा के पास कट जाता है जो बहुत पाडादायक होता है। घर का झगडा, स्त्री द्वारा डाटा जाना बन्दर का दान और चूहा की मुसीबत और औरत द्वारा मार खाना—ये ऐसे दुख हैं जिनकी चर्चा करने म भी शम आती है। ऐसी मानसिक स्थिति म मनुष्य को भयकर पीडा होती है। ये पीडाएँ खरवा और बेवाइ की पीडा के समान ही दुखदायी है। ११९।

खरी मजूरी चोखा (चौकस) काम।

स्पष्ट है—पूरी मजदूरी करो और पूरे पैसे लो। यही आदश स्थिति है। पैसे देने वाला इसीलिए कभी पूरी मजदूरी नही देना चाहता क्योकि मजदूर कामचोरी भी करता है। तब पैसे देने वाला इस कहावत के द्वारा प्रकट करना चाहता है कि अगर खरी मजदूरी करते तो पूरा पैसा मिलता। इसी कहावत को मजदूर भी कह सकता है। जब उसे पूरे पैसे नही मिलते तो वह कहता है कि जब उसने चौकस यानी अच्छा काम किया है ता अच्छी मजदूरी क्या न मिलनी चाहिए। बात दोना तरफ बराबर है। एक ओर चौक्स काम की माग है और दूसरी ओर खरी मजूरी की माग है। दोनों अपना अपना काम करें कोई झगड़े की बात नही है। १२०।

खायँ भीम हग सकुनी।

बडी मजेदार कहावत है। जब खाने की बात हो तो भीम और जब तक्लीफ उठाने की बात हा ता सकुनी। *भीम बडे खाऊवीर थ। जितना व खा जाते थे* उतना हगने म बडी तकलीफ हाता। वह सकुनी पर मढा जाये। असमव तो है हो। इसीनिए व्यग्याथ से अथ हुआ कि मजा मारने के लिए तो भीम और तक लीफ उठाने के लिए सकुना। दो भाई या दास्ता मे ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है *जब एक हमेशा फायदा उठाता है और दूसरा हमेशा तक्लीफ और वह भी* अपने भाई या दोस्त के कारण तो यह कहावत चरिताथ हाती है। सकुनी भीम के मामा थे। हमारे यहाँ मामा मानजे मे खाने को लेकर बहुत हास परिहास होता है। यह कहावत उस रिश्ते के अनुरूप ही परिहास पूण भी है। १२१।

खाय क परि रहै मारि कै टरि रहै ।

यह नीति वाक्य है । खाना खाकर आराम करना चाहिए और मार कर ठहरना नही चाहिए । भाग जाना चाहिए । खाना खाकर आराम करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है और मार कर भाग जाने से युद मार खाने से बच सकता है । मार कर भाग जाने से व्यक्ति कम से कम उस समय ता मार खान मे बच ही जाता है । बाद की बाद में देखी जायेगी । १२२ ।

खाय क मूत सूत बाय ।
तेहि घर बैद कबौं न जायँ ।

स्वास्थ्य सम्बधी उक्ति है । भाजन करके तुरत पेशाब करना चाहिए और बायी करवट लेटना चाहिए । ऐसा करने वाला कभी बीमार नही पडता । भाजन करने से और साथ मे पानी पोने से यूरीन ब्लैडर पर दबाव बढ जाता है । उसे दूर करने से 'किडनी' की प्रक्रिया ठीक रहती है । और नये आये हुए मूत्र के लिए स्थान भी बन जाता है । बाएँ लेटने स लीवर पर दबाव नही पडता और लीवर मे आने वाल रस बराबर भोजन म मिलते रहते हैं जिससे पाचन क्रिया को मदद मिलती है । अत यह कथन सवथा उचित है जिसके पालन करने से साधारण पाचन सम्बन्धी रोग उत्पन्न नही होते । १२३ ।

खिसियानि बिलारी खम्भा नोचै ।

बिल्ली अपन शिकार के छूट जाने पर खिसिया जाती है, पर कुछ कर भी नही सकती । इसलिए भुंझलाहट म खम्भे मे ही पजे मारती है । बिल्ली प्राय अपने पजे तेज करती रहती है । शिकार छूटने या न छूटने से कोइ सम्बन्ध नही । बिल्ली के इस स्वाभाव को उसकी असफलता से जोड कर एक रोचक कहावत बना डाली । इस कहावत मे बिल्ली का स्वभाव कम मानव स्वभाव अधिक व्यक्त होता है । मनुष्य खिसिया कर भुंझलाहट मे उल्टे साधे काम करने लगता है । १२४ ।

खेती कर अधिया ।
न बैल मर न बधिया ।।

आजकल तो नियम बन गया है कि अधिया या बँटाई की खेती नही होगी । खेत मालिक जमीन को किसी किसान को दे देता था । और वह किसान जोतता, बोता, निराता, ओसाता था । जमीन के भाडे के रूप मे वह पैदावार का आधा

हिस्सा मालिक का दे देता था। इसमे सारी मेहनत, मजदूरी, जोताई बोवाई किसान की लगती थी। इसलिए मालिक को बिना कुछ किये, बिना बैल-बधिया अन्न मिल जाता था। मालिक की दृष्टि से यह बड़े ही फायदे का सौदा था। यही बात इस कथन म कही गयी है। परन्तु अब यह पद्धति लगभग समाप्त प्राय है। बिना किसी प्रकार की तकलीफ उठाये फायदे म हिस्सा पाना। १२५।

खेती कर बनिज का धाव।
ऐसा डूब थाह न पाव॥

इस कथन मे भी बड़े महत्व की बात कही गयी है। कृषि और वाणिज्य दोना एक साथ नही सधते। खेती म ही इतना समय और परिश्रम लगता है कि व्यापार के लिए समय नही बच पाता। दोना पर यदि पूरा ध्यान न दिया गया तो काम बिगड जाता है। अनुभव की बात है। मेरे मित्र ने एक बार ऐसा ही किया और उपयुक्त कथन के अनुसार ही घाटा उठाया और परेशानी उठायी। ये दो काम ऐसे हैं जिनमे अधिक समय देना पडता है। एक साथ दो काम नहीं हो सकते। कृषि और व्यापार तो बिलकुल नही। यह एक प्रकार की चेतवानी है। १२६।

खेती कर साँझ घर सोव।
काटैं चोर हाथ धरि रोवैं॥

खेती करने वाला व्यक्ति चैन से घर मे सो नही सकता। उसे खेतो की निगरानी भी करनी पडेगी। दिन मे चिडिया और राहगीरो से रात म पशुओ और चोरो से। अगर किसान घर म सो गया तो कोई भी चुरा कर खेत काट ले जायेगा। अत किसान को न केवल दिन म जोतने, बोने, सींचने, निराने, काटने इत्यादि म परिश्रम करना पडता है, बल्कि रात म रखवाली करनी पडती है। इस प्रकार किसान का अपना सारा जीवन खेतो को अर्पित कर देना पडता है। यदि किसान ऐसा नही करता तो दुख पाता है। कृषि सम्बन्धी जीवन के कटु अनुभवो के आधार पर यह चेतवानी है। १२७।

खेती, पाती, बीनती औ घोडे क तंग।
अपन हाथ सवारिये, लाख लोग होय संग॥

खेती, पत्र लेखन, प्राथना, घोडे की तंग (पेटी) बाँधना इत्यादि काय मनुष्य को

खुद अपने हाथ से करना चाहिए। भले ही लाखों आदमी तैयार हों काम करने के लिए, परन्तु इन मामलों में दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। खेती बिगड़ जायेगी, पत्र की सूचनाएँ प्रचारित हो जायेंगी प्रार्थना का प्रभाव न होगा और घोड़े की तंग यदि ढीली बाँधी गयी तो घातक सिद्ध होगी। अतः नीति के इस दोहे के अनुसार इन कार्यों को स्वयं करना चाहिए। अनेक वक्ताओं वाली यह एक महत्वपूर्ण कहावत है। १२८।

खेतु खाय गदहा मारु खायँ जुलहवा।

गधे से भी ज्यादा मूर्ख या सीधा होता है जुलाहा नहीं तो गधे के खेत खाने पर वह क्या मार खाये? परन्तु कहावत का उद्देश्य यह है कि नुकसान कोई करे और सजा कोई और पाये। यदि खेत गधे ने खाया है तो सजा भी गधे को मिलनी चाहिए। परन्तु दुनिया ऐसी विचित्र है कि यहाँ न्याय नहीं—निर्दोष व्यक्ति अपने भोलेपन के कारण नुकसान उठाते हैं। इस संसार में सीधे सरल व्यक्ति को हमेशा कष्ट उठाने पड़ते हैं। १२९।

खोदिन पहाड़ निकसी चुहिया।

अधिक परिश्रम करने पर भी परिणाम बहुत नगण्य हो। पहाड़ खोदने पर चूहे का निकलना, परिश्रम व्यर्थ जाने के समान है। वह भी चूहा नहीं निकला चुहिया निकली। ऐसे परिश्रम से मनुष्य को बड़ी निराशा हो जाती है और वह परिश्रम से कतराने लगता है। बहुत परिश्रम करने पर भी जब परिणाम सन्तोष प्रद नहीं होता तब इस कहावत का प्रयोग होता है। यह व्यंग्यात्मक उक्ति है। १३०।

खोरही कुतिया रेशम कै झूलि।

खजही कुतिया के लिए रेशम की झूल (पोशाक)। कुत्ता के यदि खाज हो जाती है तो बड़ी मुश्किल से बचते हैं। खजहे कुत्ते की शोभा ही क्या? अर्थात वास्तविकता तो कुछ नहीं पर प्रदर्शन बहुत बड़ा। या जब कभी किसी रद्दी या साधारण बात को बहुत महत्वपूर्ण बताने की कोशिश की जाये और बड़ा दिखावा और तमाशा किया जाय तो यह कहावत कही जाती है। अथवा जब कोई साधारण व्यक्ति या गरीब व्यक्ति बहुत सजधज से या बनाव शृंगार से प्रकट होता है तो सामान्यतः लोग इस व्यंग्य वाक्य से उसका स्वागत करते हैं। गहरी चोट करने वाली कहावत है। १३१।

गगरी माँ दाना, सूद्र उताना ।

कहावत के कहने के ढग म शूद्रो के प्रति बडी घणा का भाव व्यक्त किया गया है । शूद्र लोग अर्थात गरीब किसान । जब इनके पास थोडा अन्न हो जाता है तो इन्हे बडा अभिमान हो जाता है । सीधे मुँह बात नही करते । और अन्न के समाप्त हो जाने पर फिर घिघियाते फिरते हैं । मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जिस व्यक्ति न अपने जावन मे अभाव ही देखा है एक बार धन पाकर वह अपने को और अपनी असली स्थिति को भूल जाता है । ये लोग गरीब हैं जो कभी कुछ मिल गया ता इतराने लगते हैं । यह बात सही तो है पर जिस वग द्वारा कहा गयी है वह वही वर्ग है जो उस समय उनमे लाभ नही उठा पाता अत उस वग का शूद्रो का धनी होना बुरा लगता है । गरीब को साहूकार अपने प्रति विनम्र बनाये रखने के लिए इस कहावत का प्रयोग करता है । १३२ ।

गडरिया के अस चूतर भुई माँ नहीं लागत ।

यह एक साधारण निरीक्षण पर आधारित है । प्राय यह देखा गया है कि गडरिया जमीन पर कभी नही बैठता । बैठने के पहले वह अपने चूतडो के नीचे कुछ न कुछ अवश्य रख लेता है । कुछ न मिला तो अपना डण्डा ही रख लेगा—लोटा ही रख लेगा । परन्तु दूसरी बात ध्यान देने की है कि गडरिया अपने गल्ले के साथ भटकते रहने के कारण एक स्थान पर जम कर बैठ नही सकता । इस लिए यह कहावत उन लागो के बारे म कही जाती है जो अस्थिर हैं और थोडी देर भी एक जगह स्थिरता स बैठ नही सकते । अथवा उन लोगो के लिए कपडा के मैल होन के डर से जमीन पर बैठन स झिझकते हैं । १३३ ।

गदहा क दोस्ती लातन का सनसनाहटा ।

गधे की दोस्ती म लातो के प्रसाद के सिवाय और क्या मिलने वाला है ? अर्थात जिस प्रकार के व्यक्ति के साथ दोस्ती की जायेगी उसी प्रकार की स्थितिया का उस सामना करना पड़ेगा । बेवकूफो की दोस्ती म अक्सर तकलीफें उठानी पडती हैं । इसीलिए समझदार लोगों ने हमेशा दोस्ता के मामल म बहुत सतकता बरतने का आवश्यकता बताई है । बडी ही रोचक उक्ति है । भरपूर व्यग्य छिपा हुआ है । १३४ ।

गदहा खवाये पाप न पुनि।
बूढ़ खवाये गाठि ते दीन॥

गधे को खिलाने से कोई फल नहीं होता, न पाप न पुण्य। उसी प्रकार वृद्ध खिलाने से व्यर्थ का खर्च होता है उससे कोई लाभ नहीं होता। वृद्ध इस कहावत को अक्सर दोहराते रहते हैं—कि उनके ऊपर खर्च करने से कोई लाभ नहीं। आर्थिक दृष्टि से और अर्थशास्त्र के अनुसार वृद्ध 'नानऐंस्टिव' होते हैं क्योंकि देश या समाज की आर्थिक स्थिति में वे कोई सुधार नहीं कर सकते परन्तु उनका पालन पोषण अनावश्यक नहीं बताया गया है। कभी कभी वृद्धों की देखभाल करते करते जी ऊब जाता है, उनकी विचित्र माँगें और बच्चों की सी जिद कष्टदायी हो जाती है और सेवा करने वाले के मन में ऊब भर जाती है। "मरै न माचा छाड़" ऐसे भाव आने लगते हैं परन्तु समझदारी के साथ रहने पर किसी की ओर से ऐसी भावना नहीं आनी चाहिए परन्तु नाना की कठिन समस्याएँ इस क्रूर स्थिति को भी जन्म देती है। वृद्ध को खिलाने से कोई लाभ नहीं क्योंकि वह कुछ ही दिनों का मेहमान है और वह बदले में कुछ नहीं दे सकता। १३५।

गदोरिया माँ सरसों जमाउब।

जल्दबाजी करने के समय इस कहावत का उपयोग होता है। हाथ की गदेली में सरसों तो क्या कुछ भी नहीं उग सकता। परन्तु जब कोई व्यक्ति इसी प्रकार जल्दबाजी करता है और असम्भव को सम्भव करने के यत्न करता है तो 'गदोरिया में सरसों जमाने' के समान असम्भव कार्य करता है। हर काम में समय लगता है। इस जल्दबाजी पर और भी कहावतें बन सकती थी परन्तु खेतिहर लोग अपना कहावतों के प्रतीक अपने जीवन के अनुभवों से ही लेंगे। १३६।

गम खाय कम खाय।
हाकिम हकीम के पास कबहूँ न जाय॥

यह सीखपूर्ण दोहा है। कम खाने पर पेट ठीक रहेगा और पेट के ठीक रहने पर व्यक्ति निरोग्य रहेगा। रोग न होने से हकीम के पास जाने की जरूरत न पड़ेगा। गम खाने से या बर्दाश्त करने से कभी झगड़ा नहीं होगा। और यदि झगड़ा न होगा तो हाकिम या अफसर या जज के सामने उपस्थित नहीं होना पड़ेगा। इन दो व्यक्तियों के पास जिस व्यक्ति को न जाना पड़े तो वह बड़ा सुखी है। हाकिम या हकीम किसी के पास भी जाना बहुत कष्टप्रद और

पर्चीला होता है। अत यदि मनुष्य इन तकलीफो से बचना चाहता है तो इन दो बातो पर ध्यान दे। सीधा सा नुस्खा है, परन्तु सभी इसका पालन नहो कर पाते। १३७।

गया मर्दु जो खाय खटाई।
गई नारि जो खाय मिठाई ।।

खटाई खाने वाला मर्द और मिठाई खाने की शौकीन औरत का जीवन बिगड जाता है। निश्चित एव मर्यादित मात्रा मे खटाई मिठाई खाने मे किसी को नुकसान नही है, परन्तु लत पड जाने पर मर्यादा से बाहर खाने पर अहित अवश्य होता है। मिठाई खाने की शौकीन धीरे धीरे घर गृहस्थी की चीजें बेच कर मिठाई खायेगी और गृहस्थी बरबाद कर देगी। उसी प्रकार मर्द खटाई की आदत पड जाने पर, ठीक से भोजन नही करेगा और वही या उस स्थान के पास रहने की कोशिश करेगा जहाँ खटाई हो। खटाई तम्बाकू, बीडी सिगरेट या सुपारी पान की तरह बांध कर सब जगह ले नही जाया जा सकती। और मर्द को बाहर के ही काम दिन भर करने पडते हैं। केवल भोजन के समय और रात म ही मनुष्य घर आता है। खटाई की आदत पड जाने पर उसके लिए बाहर के काम मुश्किल हो जायेंगे। वीर्य एव पुरुषत्व का सम्बन्ध मिठाइ से है, खटाई से हानि होती है। स्वभावत पुरुष मिठाई और स्त्रियाँ खटाई अधिक खाती हैं। १३८।

गरीब क जवानी, गरमी का घामु।
जाडे के चाँदनी देय न कामु ।।

गरीब की जवानी किस काम की ? दूसरे की सेवा टहल मेहनत मजदूरी मे खप जाती है। वह जवानी का मजा नही उठा सकता। गर्मी का घाम भी इतना अधिक और तेज होता है कि किसी काम नही आता। जाड़े का घाम यानी धूप बडे काम की होती है। कम से कम ठण्डी से बचने के लिए काम देती है। जाड़े के मौसम की चादनी भी बेकार है, क्योकि सर्दी के कारण और पाला या ओस के कारण चाँदनी के समय कोई बाहर नही निकलता चाहता। चाँदनी रात और भी अधिक ठण्डी होती है। अर्थात ये तीनो चीजें बेकार होती हैं। किसी काम नही आती। यह भी अनेक वर्त्ताओ वाली कहावत है। १३९।

गरीबी मे आटा गील।

एक तो वैस ही गरीबी है ऊपर स जो थोडा आटा था वह भी गीला हो

गया। अब कैसे रोटी बने और भूख मिटे। जब कठिनाइयों मे और भी कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। उस पीडा का अनुमान कीजिये जिस समय मामूली-सा सहारा भी टूट जाता है और मनुष्य निराधार और बेसहारा हो जाता है। उसने सोचा होगा कि जो कुछ भी थोडा सा आटा है उसकी एक-आधा रोटी बनाकर अपनी कुछ भूख शान्त करेगा, परन्तु वह भी सम्भव नहीं, क्योंकि आटा गीला हो गया। अब रोटी नहीं बन सकती। एक मात्र सहारा भी टूट गया। १४०।

गाँड़ि लौरही मखमल का धागा।

यह कहावत 'खौरही कुतिया मखमल कै झूल' के समान ही है। परन्तु इसमे व्यक्ति के शरीर की ओर विशेष सकेत है। अर्थात् स्वय तो कुरूप है परन्तु अच्छे अच्छे कपडे पहनकर अपनी कुरूपता छिपाना चाहता है और खेत की 'धोख' के समान दिखाई देता है। इस प्रकार जब कभी गंदे, कुरूप लोग बडा साज सिंगार करते हैं तो इस कहावत को चरितार्थ करते हैं। प्राय यह देखा गया है कि जो कुरूप या असुन्दर होते हैं वे शृगार भी अधिक करते हैं। काले या साँवले लोग अपने कालेपन को छिपाने के लिए पाउडर-क्रीम का अधिक इस्तेमाल करते हैं। १४१।

गाडि गधाय माँग सेंदुर माँगे।

यह कहावत ऊपर की कहावत के समान ही है, परन्तु इसका क्षेत्र स्त्रियो का है क्योंकि माँग में सेन्दुर लगाने की बात औरतों से ही सम्बन्ध रखती है। दूसरा अन्तर यह है कि इसमे गन्दगी की ओर सकेत है। माँग म सेन्दुर भर कर और खान बनाकर दर्शनीय बनने के प्रयत्न तो बहुत जोरो पर किये जाते हैं परन्तु शरीर की सफाई की ओर ध्यान नही दिया जाता। शरीर गन्दा रखा जाये और केवल मुँह का चिकना चुपरा रखने वाली स्त्रियाँ इस कहावत की अधिकारिणी हैं। यहाँ भी प्रदर्शन भावना पर कटाक्ष किया गया है। १४२।

गाँडि चिर्यां असि हायिन का बयाना।

सामर्थ्य बहुत कम परन्तु बडे बडे दावे। कहावत म Homosexuality या लौंडे बाजो का आधार लिया गया है। लौंडे बाजी हमारे देश म काफी प्रचलित है विशेष रूप से उत्तर भारत म। यह बहुत ही असामाजिक अप्राकृतिक

की शोभा पूरी हो गयी—अब बराती अपना रास्ता नापे। बहुत ही सही निरीक्षण है। जब किसी व्यक्ति की उपयोगिता पूरी हो जाती है और फिर उसका मान नहीं होता तो बस कहावत का उपयोग किया जाता है। १४९।

गुड़ खायँ गुलगुला ते परहेज करें।

गुड़ खाने वाले को गुड़ से बनी हुई चीजों से क्या परहेज। यदि गुड़ खाने से नुकसान नहीं होता तो गुड़ से बनी हुई चीजों से और भी कम नुक्सान होगा। अत परहेज करना व्यर्थ है। जब कोई एक काम तो करता है परन्तु उसी से सम्बद्ध दूसरा कार्य करने में इनकार करता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। प्राय लोग दिखावा करते हैं कि वे अमुक कार्य नहीं करते परन्तु वैसे ही दूसरे निकृष्ट कार्य करते हैं ऐसे अवसर पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। १५०।

गुड़ ते मर तौ माहुर काहे देय।

व्यर्थ में अपयश क्यों लिया जाय। यदि बिना अपयश या बदनामी के कोई काम बनता हो तो वैसा ही करना चाहिए। उद्देश्य यदि किसी की हत्या है तो ऐसे क्या न मारा जाय जिससे अपराध न लगे। दूसरा अर्थ जो इस कहावत से निकलता है वह यह कि यदि मीठा बोलने से काम बनता हो तो कड़ुआ क्यों बोला जाय? अपना उद्देश्य हल होना चाहिए और वह यदि बिना दुश्मनी मोल लिए या बदनामी से बच कर हो सकता है तो व्यर्थ में बदनामी क्यों मोल ली जाय और दुश्मन पैदा किये जायें?। १५१।

गुरु तौ गुरुइ रहिगे चेला सक्कर होइगे।

जब बड़े से छोटा आगे निकल जाता है या अधिक सफल अथवा योग्य निकलता है तो इस कहावत का इस्तेमाल होता है। गुरु तो गुड़ ही रह गये परन्तु शिष्य शक्कर हो गये। जब अनपेक्षित ढंग से ऐसा हो जाता है तो कहावत बिलकुल ठीक चस्पाँ हो जाती है। प्राय शिष्य गुरु से आगे बढ़ जाते हैं। १५२।

गुड़ भरा हँसिया।

एक ओर लाभ परन्तु दूसरी ओर नुकसान भी है। गुड़ तो मिल रहा है, परन्तु हँसिया में लगा हुआ है। हँसिया तेज धारदार औजार है और उसमें लग

गुड को पाने के लिए खतरा उठाना पड़ेगा क्योंकि हो सकता है कि धार से गुड प्राप्त करने म चोट लग जाये, हाथ कट जाये। एक ओर लाभ है दूसरी ओर खतरा। ऐसी स्थिति म उसे न तो स्वीकार करते बनता है और न अस्वीकार करने की इच्छा होती है। ऐसी द्विधापूर्ण स्थिति मे मानसिक चिन्ता इस काहवत में व्यक्त हुई है। १५३।

गू के किरवा का गुँऐं माँ नीक लागी।

जो जिस प्रकार के वायुमण्डल एव स्थितियो का आदी हो जाता है उसको वही अच्छा लगता है। नाली की गन्दगी म रहने वाले कीडो को यदि स्वच्छ हवा म रखा जाये तो वे मर जायेंगे। उसी प्रकार मनुष्य भी कुछ विशेष प्रकार की स्थितिया का आदी हो जाता है। अच्छी स्थितियो म रहने पर उसे अच्छा नहीं लगता। आदत से मनुष्य के जीवन मे एक प्रकार की सुकरता एव सहजता उत्पन्न हो जाती है। परिवर्तन भले ही अच्छा हो परन्तु आनन्द न होने के कारण उसे वह अच्छा नही लगता। अत अच्छी स्थिति में रखने पर भी जब कोई व्यक्ति प्रसन्न नही होता तो यह कहावत चरितार्थ होती है। १५४।

घर अँधेरा मन्दिर माँ दिया बार।

घर म तो अन्धेरा है—उस अँधेरे को दूर करने की चिन्ता नही है परन्तु मन्दिर मे दिया जरूर जलाये जाते हैं। जब व्यक्ति अपने सर्वाधिक निकट के कर्त्तव्यों की अवहेलना करके अन्य कम आवश्यक कार्यों की चिन्ता करता है तो ऐसी ही स्थिति उत्पन्न होती है। जैसे धर्म के नाम दान-दक्षिणा। घर के लोगा को ठीक के भोजन नहो मिलता, परन्तु उसकी चिन्ता नही, दान की चिन्ता है। अपनी चिन्ता मनुष्य यदि स्वय नही करेगा तो कौन करेगा ? अपना काम पूरा करके ही दूसरो का काम अच्छा बनता है। मन्दिर मे दिया जलाने वाले बहुत हैं परन्तु अपने घर में यदि हम खुद दिया न जलायेंगे, तो कौन जलायेगा ? अपनी आवश्यकताओ की चिन्ता न कर परोपकार के लिए यत्न करना। अंधविश्वास पर भी कटाक्ष है। १५५।

घर का भेदी लका ढाव।

रामभक्त और राम सहायक होने पर भी विभीषण के प्रति जनमानस में कोई सहानुभूति नहीं है। विभीषण नाम का व्यक्ति मिलना असमव है। जनमानस ने विभीषण को कभी क्षमा नहीं किया क्योंकि उसने न केवल

देशद्रोह किया। उसी के देशद्रोह के कारण लंका नष्ट हुई। विचारणीय बात है कि राम का युद्ध भी धर्म युद्ध था उसका उद्देश्य पवित्र थी और रावण के अधर्म को नष्ट करने के लिए थी। उसमे सहायता करने वाले अन्य लोगो की भाँति विभीषण का भी समादर होना चाहिए था परन्तु विभीषण के प्रति आदर का भाव नही पाया जाता—कुछ सहानुभूति भले ही पायी जाती हो। १५६।

घर के देव ललाय बाहर के पूजा माँग।

घर अघेरू मंदिर माँ दिया बार—वाला कहावत से यही अर्थ निकलता है। घर के देवता भूखो मरते हैं और बाहर के पूजा पाते हैं। कभी कभी लोक निन्दा के भय से अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए हम बाहर वाला का आदर सत्कार करते हैं और पैसे खच करते हैं परन्तु घर म सभी लोग भरपेट भोजन भी नहीं पाते। इस झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा के रक्षण के विरुद्ध आवाज उठाई गई है। झूठी मर्यादा के लिए सचमुच हम लोग प्राय अपना बडा नुकसान कर लेते हैं। सन्तुलन की आवश्यकता है। १५७।

घर क खाँड खुदुरी लाग चोरी का गुर मीठ।

घर की अच्छी चीज अच्छी नही लगती और चोरी से लाई हुई बुरा चीज भी अच्छी लगती है। गुड से खाड अच्छी होती है परन्तु वह घर की है इसलिए अच्छी नहीं लगती और चोरी का गुड अच्छा लगता है। यह बडी स्वाभाविक बात है जिसकी आलोचना की गई है। चोरी के गुड म 'एडवेंचर' का मजा शामिल है और घर की खाँड म रोज की ऊब। चोरी से लाये हुए कच्चे अमरूदो म भी बडा मजा आता है घर के अच्छे पके अमरूदा मे मजा नही आता। कदाचित इसीलिए वैष्णव भक्तों म परकीया प्रेम को अधिक महत्व दिया था। १५८।

घर क खुनुस औ ज्वर कै भूख,
छोट दमाद बराहे ऊख।
पातर खेती भकुआ भाय,
घाघ कहैं दुखु कहाँ समाय॥

घाघ की बनायी हुई कहावत है जो बहुत प्रचलित नही है। घर म दिनरात की कलह, बुखार के बाद की भूख छोटा दमाद, बराहे की ऊख इनकी खेती, बेवकूफ भाई, इनसे बडी तकलीफ होती है। घाघ कहते हैं जिसके घर म ऐसा

हो उसका दुख अपार है। घर मे छोटा दमाद भी काफी गडबड करता है। इसमे कुछ घरेलू चिताओ का उल्लेख है। एक ही क्रिया मे अनेक कर्ताओ को गूथा गया है जिससे कहावत का प्रभाव अधिक हो गया है। १५६।

घर कै बिटिया गुरहगनी।

अपनी चीज सबको पसन्द आती है। परन्तु इसके विपरीत भावना भी उतनी ही स्वाभाविक है। घर की मुर्गी साग बराबर कहावत इसी तथ्य को प्रकट करती है। निकटता के कारण व्यक्ति का मूल्य घट जाता है। १६०।

घर क मुरगी दालि बराबर।

घर की चीज की कीमत घट जाती है। अति सम्पर्क से या घर ही होने के कारण उसके महत्व का अनुभव नही होता। ऐसा महसूस होता है कि उसकी कोई विशेष कीमत नही है क्योकि कीमत देकर उसे खरीदा नही गया है। घर मे मुर्गिया पली होती हैं और घटती बढती रहती हैं अत उनकी कीमत का पता नही चलता। हर बार मुर्गी खरीदनी पडे तो उसकी कीमत का पता चले और अनुभव हो कि मुर्गी का क्या कीमत है। दाल की भी कीमत है परन्तु यहाँ मुर्गी की दाल से इस प्रकार उपमा दी गयी है माना दाल की कोई कीमत ही नही है। दाल भी घर की होगी। दाल की तुलना मे मुर्गी की कीमत हमेशा अधिक होती है। १६१।

घर मां भूजी भाग नहीं।

भुनी हुई भाँग हमारे यहाँ घरों मे रखी जाती है। दवाई के रूप मे भुनी हुई भाँग का प्रयोग होता है। परन्तु जिसके घर मे भुनी हुई भाँग भी न हो उसकी गरीबी का ठिकाना नही। अब तो केवल कहावत रह गयी है। लोग अब इतना भी नही जानते कि भाँग का प्रयोग औषधि के रूप में होता है। कदाचित अंग्रेजी दवाइयो के प्रचार मे ऐसा हुआ हो। बहरहाल भूनी भाँग का न होना गरीबी और अभाव का द्योतक है। १६२।

घरी भरे मा घर जरै अढाई घरी भद्रा।

आवश्यकता पडने पर बहाने बाजी अच्छी नहीं है। इधर तो थोडी देर मे घर जल कर राख हो जायेगा और उधर अभी पडित जी भद्रा बता रहे हैं। जब

ढाई घटी भद्रा है—अर्थात् बुरा समय है तो घर को जलने मे एक घडी समय लगेगा। मतलब, पडितजी के अनुसार अभी कुछ नही हो सकता, इतना ही नही कुछ और नुकसान भी हो सकता है। जब व्यक्ति कारण वश अधिक प्रतीक्षा नही कर सकता प्रतीक्षा के लिए विवश होना पडता है तो अपनी आतुरता मे वह कहता है कि घडी भर म तो घर जल जायेगा तुम्हारी ढाई घडी तक कैसे रुका जा सकता है। भद्रा मे कोई व्यक्ति बाहर नही जाता क्योकि ज्योतिष के अनुसार अहित लिखा है। अत हो सकता है कि पडित जी आग लगने पर भद्रा के विचार से ढाई घटे बाद भद्रा समाप्त होने पर जाने को कहते हो। तब तक घर जलकर भस्म हो जायेगा। १६३।

घर गुड़ होय तौ बहरौ ममाखी लगती हैं।

घर मे माल हो—सम्पन्नता हो तो उसके लक्षण बाहर दिखायी दे जाते हैं। अर्थात बहुत से लोग आने जाने लगते हैं। "जहाँ गुड होई चीटा ओबै करिहैं।" जहाँ मिठाई होगी शहद की मक्खी पहुँचेगी ही। यह जगत व्यवहार है कि जब तक लक्ष्मी की कृपा होती है, मित्र और नाते रिश्तेदारो की भी कृपा रहती है। दुनिया पैसे की दोस्त है। इसी प्रवृत्ति पर यह व्यग्य किया गया है। १६४।

घिउ गिरा तौ खिचडी मां।

किसी खराब काम का भी यदि परिणाम अच्छा हो तो उपयुक्त कहावत चरितार्थ होता है। घी गिरा, पर अगर ज़मीन पर गिरता तो बेकार हो जाता परन्तु खिचडी म गिरा जिससे खिचडी खाने का मजा बढ गया। नुकसान हुआ परन्तु उस नुकसान का परिणाम बुरा नही हुआ, बल्कि अच्छा ही हुआ। किसी प्रतिकूल स्थिति का भी अच्छा परिणाम हो तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। १६५।

घिउ का लडडू गोल कि टेढ़।

घी के लडडू के आकार से कोई प्रयोजन नहीं, क्योकि वह चाहे किसी भी आकार का क्यों न हो उसके खाने मे मजा आता है, और उसकी पौष्टिकता म कोई अतर नही पडता। जब रूप पर या ऊपरी बनावट पर ध्यान न देकर उसके असली गुणा पर ध्यान दिया जाता है तो यह कहावत सार्थक होती है। इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—'आम खाने से मतलब है या पेड गिनने से

है।' मतलब जो असली हो उसकी ओर ध्यान देना चाहिए। इधर उधर की व्यर्थ की चिन्ताओ मे समय नष्ट करने से कोई लाभ नही है। उपयोगी वस्तु के रूप आकार का कोई विशेप महत्व नही मानना चाहिये। १६६।

घुइसी मँडए चढ़ीं।

मँडए चढना मुहावरा भी है। अर्थात मण्डप चढना। विवाह होना। घुइसी शब्द में दो ध्वनियाँ हैं। एक तो कुरूपता, शरीर का बेडौल होना और अवस्था मे अधिक हो जाना। किसी बेडौल, अयोग्य व्यक्ति का, समय बीत जाने पर भी काम बन जाय और बहुत से योग्य व्यक्तियों को काम न बने, वे पिछड़ जायें तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। अच्छी सुन्दर युवा लड़कियाँ ब्याहने को रह जायें और किसी अयोग्य, कुरूप तथा बड़ी उम्र की लड़की की लग्न चढे तो कह देते हैं—घुइसी मँडए चढ़ी। १६७।

चटका मघा पटकिगा ऊसरू।
दूधु भातु मां परिगा मूसरू॥

मघा नक्षत्र की वर्षा से धरती की प्यास सन्तुष्ट होती है। 'मघा के बरसे माता के परसे।' मघा की बरसात से पृथ्वी तृप्त होती है, क्योंकि तब पानी रिमझिम रिमझिम धीरे धीरे बरसता है और दिनो तक मघा की फुहारो की झड़ी लगी रहती है। तेज पानी के बरसने से पानी बह जाता है। धरती नीचे तक भीगती नहीं। इसलिए मघा की बरसात से ऊसर भी गीला हो जाता है। परन्तु यदि मघा नक्षत्र मे ही वर्षा न हो—धूप निकली रही तो सब ऊसर ही हो जाता है और फिर अकाल की सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। मिलने वाला दूध भात भी नहीं मिलता। मघा की वर्षा का खेती की दृष्टि से विशेप महत्व है। मौसम और उसके प्रभाव स संबंधित यह कहावत बड़ी महत्वपूर्ण है। १६८।

चढ़त जो बरसे चित्रा उतरत बरसै हस्त।
कितनौ राजा डाँड़ लेय हारै नाँहि ग्रहस्त॥

यह भी वर्षा सम्बन्धी कहावत है। चित्रा नक्षत्र के लगने पर और हस्ति नक्षत्र के उतरने पर वर्षा हो तो खेती इतनी अच्छी होती है कि राजा कितना भी डाँड़ (जुर्माना) माँगे गृहस्थ दे सकता है, और उसका अधिक नुकसान नहीं होता। इस कहावत से इसी बात की ओर संकेत है कि हमारी खेती सिंचाई के

लिए वर्षा पर निर्भर है। अब कदाचित नहरो के हो जाने से खेती मे अधिक निश्चयात्मकता आ सके। १६९।

चमके पच्छिम उत्तर ओर।
तौ जायो पानी है जोर॥

पश्चिम उत्तर मे यदि बिजली चमकी तो समझ लेना चाहिए कि पानी जोरो से आँधी के साथ आने वाला है। हमार गाव म इसी को "लखनौऊा लौका" कहते हैं। अर्थात लखनऊ चमका लखनऊ की दिशा म बिजली चमकी। अब आँधी पानी जरूर आयेगा। लखनऊ हमारे यहा से उत्तर पश्चिम म है। १७०।

चमार का सरगौ मा बेगार।

बडी अच्छी कहावत है। जमीदारी प्रथा के अन्तगत वैसे सभी बेगार मे लगाये जाते थे परन्तु चमार तो हमेशा बेगार म ही रहते थे। जमीदार की पालकी उठाना, लकडी चीरना और अन्य प्रकार की मजदूरी करना। जमीदार अपनी इन सुविधाओ का बनाये रखने के लिए चमारो को खेती के लिए जमीन भी नही देते थे। अस्तु चमारो का धन्धा जमीदार को बेगार हो गया था। बेगार का मतलब मुफ्त काम है। केवल भोजन पर काम कराना मजदूरी न देना। चमार का जीवन इतना बेगार स भर गया था कि बेचारे को मृत्यु के बाद स्वग मे भी बेगार करनी पडी। कोई व्यक्ति जब किसी खास काम को हमेशा करता रहता है, जो उसे पसन्द नही होता—वही काम मुक्त होने पर भी करना पड़े तो इस कहावत का उपयोग होता है। १७१।

चलनी मा दधु दुहैं दोखु करमन का दय।

लोग अपने काम करने के ढग पर विचार नही करते और अपने भाग्य को कोसते हैं। चलनी म दूध दुहने पर दूध तो बहेगा हो फिर अपने भाग्य का कोसने से क्या लाभ कि हमारे भाग्य ही खराब हैं कि हमारा गाय दूध नही देती। यह एक ऐसी कहावत है जो भाग्यवाद का विरोध करती है जिसम पता चलता है कि भारतीय लोक मानस अपनी कमियो के प्रति जागरूक है और बिलकुल भाग्यवादी नही है। अपने ढग और प्रयत्नो को सुधारना चाहता है। १७२।

चलै न पाव कूद नाव (कूदन नाम)

जब एक असमर्थ व्यक्ति या कम सामर्थ्यवान व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर

के काम करने की कोशिश करता है। जिस व्यक्ति को साधारण रूप से चलना कठिन है तो वह नाला कैसे फलाग सकेगा ? परन्तु यदि वह ऐसा करता है तो अपना तमाशा बनाता है। कूदन नाम से भी वही ध्वनि निकलती है। दोनों प्रकार से कहावत का प्रयोग होता है। जब कोई दुस्साहस करता है तब इस कहावत को चरितार्थ करता है। १७३।

चलै न पावै रजाई क पयाड बाध।

यह कहावत भी बिलकुल उपयुक्त कहावत के समान है। चलना मुश्किल है परन्तु रजाई कमर मे लपेटे हैं जिससे चलना और भी कठिन हो जाता है। साधारण सामर्थ्य नहीं है परन्तु तमाम बाधाओ और कठिनाइया का सामना करना चाहता है। पयाड—धोती का एक हिस्सा जो कमर म बाध लिया जाता है। रजाई की फेंड बहुत भारी होगी और चलने म कठिनाई एव बाधा उपस्थित करेगी। १७४।

चारि कोस क आवा जाही।
लरिका मरिगा ढोवा धाही॥

दूरी के कारण जो असुविधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं उनका उल्लेख है। चार कोस अथवा आठ मील आने जाने और सामान ढो-ढो कर लाने ले जाने म ही हमारे लडके की हालत खराब हो गयी। किसी मित्र या नातेदार ने कृपा करके कोई चीज बिलकुल मुफ्त दी। परन्तु दूरी इतनी अधिक है कि मुफ्त चीज पाने के आनन्द के स्थान पर तकलीफें पैदा हो गयी। तो पाने वाला अपनी इस कठिनाई का उल्लेख करता है और अपने बेटे की मेहनत देखकर दुखी हो उठता है। माल ढोने म ही हमारा लडका मरा जा रहा है। ध्वनि निकलती है कि ऐसी भी सस्ती या मुफ्त की चीज किस काम की जिसम इतनी तकलीफ उठानी पड़े। या माल की कीमत से अधिक की चीज खोनी पड़े। लडके स कीमती तो कोई चीज नहीं हो सकती ? । १७५।

चारि कौर भीतर, तब देव और पीतर॥

पेट भरा पर ही देवता और पितरों की बात ध्यान म आती है। अपना पेट भरने पर ही देवता और पितृ को भोजन देने की बात है। दूसरी कहावत है—'भूखे भजन न होय गोपाला, लाजिए अपनी कठी माला।' जब कुछ खाना पेट म गया तब दूसरो का प्रश्न उठता है। भूखे पेट देवताओं और पितृ की चिन्ता

असम्भव है, यद्यपि उसका जीवन देवताओं और पितृों की कृपा पर ही निर्भर है। परन्तु यह नितान्त स्वाभाविक है कि मनुष्य अपने जीवन के बाद ही दूसरे के जीवन की चिन्ता करेगा। १७६।

चारि दिन क चाँदनी फिर अँधियारा पाखु।

जीवन कुछ इसी प्रकार का है। चार दिन तो हँसी-खुशी रहती है पर अधिकांश जीवन दुख और यातनाओं से पूर्ण रहता है। चाँदनी चार दिन के लिए ही होती है शेष तो अँधियारा पाख ही रहता है। वस्तुतः यह जीवन का निराशावादी एवं दुखदायी दृष्टिकोण है, अन्यथा न तो जीवन इतना रिक्त है और न दुनिया ही इतनी अंधेरी। वस्तुतः अमावस्या के अतिरिक्त महीने में २९ दिन चाँद निकलता है। पूरी अंधेरी रात एक दिन ही होती है। बाकी रातों में तो चन्द्रमा, थोड़ी देर को ही सही, चमकता है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने अभावों को बढ़ा कर देखता है और जो प्राप्त है उसके प्रति कृतघ्न बना रहता है। १७७।

चाहे कूकुर पिऐ मुरक्का।
तऊ न करु बिस्वास तुरुक्का॥

यह कहावत मुसलमानों के बारे में एक फतवा है। मुसलमान विश्वास योग्य व्यक्ति नहीं होते। ऐसा सम्भव हो सकता है कि कुत्ता आदमी की तरह पानी पीने (जो कि असम्भव है) परन्तु यह सम्भव नहीं है कि कोई ऐसा मुसलमान मिल जाय जिस पर विश्वास किया जा सके। यह कुछ दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों के अनुभवों पर आधारित एक निरीक्षण है जो उतना ही गलत हो सकता है जितना सही कहा जा रहा है क्योंकि किसी भी जाति के सभी लोग न तो अच्छे हो सकते हैं और न बुरे। १७८।

चित्थड गुद्दड सोवै मर्जादा बैठे रोवै।

यह एक श्रेष्ठ कहावत है। गरीब, भिखारी आदमी चैन की नींद सोता है जब कि पैसे वाला हमेशा रोता है। सम्मान एवं प्रतिष्ठा को बनाये रखना बड़ा कष्ट साध्य कार्य होता है। प्रयत्नों के बावजूद ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हो ही जाती हैं जब मनुष्य अपमानित अनुभव करता है। यह समस्या उन्हीं के समक्ष है जो प्रतिष्ठित हैं और प्रतिष्ठा की चिन्ता करते हैं, परन्तु जिनके समक्ष प्रतिष्ठा

का प्रश्न नही है, वे निश्चिन्त होकर रहते हैं। उनके पास खोने के लिए कुछ भी नही है, तो चिन्ता किस बात की। १७९।

चींटिउ चली पराग नहाय।

जब साधारण लोग भी बड़े लोगो की भाँति काम करने लगे। प्रयाग नहान के लिए जाने वाले लोग धार्मिक सवर्ण हिन्दू ही अधिक होते हैं। कम से कम व हा तीर्थों और ऐसी तीर्थ यात्राओ पर अपना एक मात्र अधिकार मानते हैं। यदि कोई साधारण और अनाधिकारी व्यक्ति वैसा ही करने लगे तो उन्हे पसन्द नही आता। ऐसे अनाधिकार कार्य करने वालो पर यह व्यग्य कसा गया है। चींटी भी प्रयाग स्नान करने चली। वक्ता के मन की घृणा चींटी शब्द के प्रयोग से स्पष्ट हो जाती है। वडा क्रूरता और कठोरता के साथ वह अपने वर्ग के एकाधिपत्य को बनाये रखने के लिए दूसरे वर्ग के व्यक्ति का अपमान करता है। १८०।

चींटी का मूत पैराओ बडा भारी।

जब कोई व्यक्ति छोटे सा काम करने म होले हवाले करता है, कठिनाइयो का उल्लेख करता है। चींटी पता नही मूतती भी है या नही, परन्तु मूतती होगी भी तो कितना? और उसको तैर कर पार करने की बात करना, इस कहावत की आवश्यकता रखता है। कुछ काम चोर लोग अक्सर काम करने स मुँह चुराते हैं और छोटे से छोटे काम करने मे वडी कठिनाइयाँ बतलाते हैं। एस काम चोरो पर यह व्यग्य है। १८१।

चीत के बरखे तीनि जाय मोथी, मास, उखार।

चित्रा नक्षत्र की बरसात से तीन प्रकार की खेती का नुक्सान होता है— मेथी, मास (लोबिया) और ईख। यह कथन बहुत सही नही है। प्राय एसा नही भी होता। खेती के बनने बिगडने मे बरसात के अतिरिक्त और भी बहुत से कारण होते हैं। हर खेत की स्थिति भी अलग-अलग होती है। हो सकता है कि चित्रा मे बरसात से इन खेतो को लाभ हो। फिर भी यह एक मान्य कहावत है जिस पर किसान काफी ध्यान देते हैं। १८२।

चीलरन के डेर ते कथरी नहीं फेंको जाति।

चिलुआ के डर से कथरी नही फेंकी जाती। उसको साफ कर लिया जाता है। जीवन मे अनेक प्रकार की कठिनाइया उत्पन्न हो जाती हैं, उनका सामना

किया जाता है। उनके डर से कोई आत्महत्या नहीं कर लेता। शरीर में अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं उनका उपचार किया जाता है, शरीर का अन्त नहीं किया जाता। उपयोग की चीजों में बहुत सी खराबियाँ पैदा हो जाती हैं, परन्तु उन खराबियों को दूर किया जाता है उन खराबियों की वजह से उस चीज को ही नहीं फेंक दिया जाता। यदि किसी गाँव में बहुत तकलीफ मिलती है और वहाँ के लोग उसे बहुत सताते हैं तो भी वह साहस से वहीं डटा रहता है और कहता है कि चिलुओं के डर से कथरा नहीं छोड़ी जाती। चिलुए एक प्रकार के छोटे छोटे काटने वाले कीडे हैं जो गंदगी के कारण कपडा में हो जाते हैं। १८३।

चील्ह के घर माँ मांस क धरोहर।

धरोहर या थाती या अमानत उसी के पास रखी जाती है जो उसे हिफाजत से देख सके। इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि किस चीज की धरोहर किसके यहाँ रखी जाये। चील्ह का भोजन है गोश्त। यदि उसके पास गोश्त का अमानत रखी जायेगी तो अमानत में खयानत निश्चित है। इसी प्रकार की दूसरी कहावत है कि 'बिलारिन का भितूर सौंपब।' बिल्लियाँ सब खा पीकर समाप्त कर देंगी। परन्तु यदि चील्ह के पास कोई अन्य वस्तु रखी जाये जिसका उपयोग वह नहीं करती तो वह वस्तु सुरक्षित रख सकती है। ऐसा विचार न करके गलत लोगों को अमानत सौंपने वाले लोगों पर यह कहावत कही जाती है। १८४।

चुपरी औ दुई दुई।

मात्रा और गुण दोनों का एक साथ पाना कठिन है। यह पाना कठिन है कि कोई चीज अच्छी भी हो और मात्रा में अधिक भी। रोटियाँ अधिक मिल सकती हैं पर घी से चुपड़ी रोटियाँ अधिक नहीं मिल सकती। अर्थात दोनों फायदे एक साथ नहीं मिल सकते। घी गुण का प्रतीक है। गुण पाना अधिक कठिन है। जिस प्रकार घी कम है और मँहगा है, उसी प्रकार गुण भी कम लोगों में कम मात्रा में पाये जाते हैं। १८५।

चूचिन माँ हाड़ ढूढ़त हैं।

दिलचस्प कहावत है। जब कोई शरारती स्तनों को मसलने लगा तो स्त्री ने पूछा, 'यह क्या कर रहे हो।' वह शरारत से अपने शोधपूर्ण उद्देश्य को प्रकट करता है। वह स्तनों को इसलिए मसल रहा है कि पता लगाना चाहता है कि उसमें हड्डी होती है या नहीं। वह जानता है, परन्तु शरारत भरा जवाब देता

है। औरत समझती है उसकी शरारत को। जब जानबूझ कर व्यक्ति भोला बनने की कोशिश करता है तो समझदार पारखी लोग उसकी चालाकी को समझते हुए यह कहावत कहते हैं। कभी सीधी स्थिति में भी इस कहावत का प्रयोग कर दिया जाता है। किसी चीज को ऐसी जगह पर ढूंढना जहाँ उसके मिलने की कोई संभावना नहीं होती। १८६।

चूर चूर यारन का चोकरा भतारन का।

किसी छिनाल या बेवफा पत्नी की बेवफाई पर यह कठोर आक्षेप किया जाता है। अपने पति को चोकरा खिलाती है और अपने यारो अर्थात प्रेमियो को माल खिलाती है। यह एक कटूक्ति है जिसका प्रहार सीधा किया जाता है।१८७।

चैते गुड़ बैसाखे तेलु,
जेठ पन्थ असाढ़ बेलु।
सावन सतुआ भादौं दही,
कुंआर करला कातिक मही।
अगहन जीरा पूस धना,
माघे मिसरी फागुन चना।
ई बारह जो देय बचाय,
वेहि घर बैद कबौं न जाय।

चैत म गुड़ बनता है बैसाख तक सरसों कट कर घर आ जाते हैं और तेल की अधिकता होता है, इसलिए इनका उपयोग भी इन महीनो मे अधिक होता है। जेठ की धूप और गर्मी के कारण इस महीने में यात्रा नहीं करनी चाहिए। आषाढ़ मास में बेल नही खाना चाहिए। सावन म सत्तू, भादों मे दही, कुआर मे करैला, कातिक म माठा अगहन म जीरा पूस मे धनिया, माघ मे मिश्री और फागुन म चना नही खाना चाहिए। जिन महीनो मे जो चीज होती है उन्ही महीना म उसके उपयोग का निषेध बताया गया है, क्योंकि अधिक मात्रा मे होने के कारण उसका उपयोग भी अधिक हो जाता है। इनसे बचन पर रोग मुक्त रहा जा सकता है। १८८।

चोर चोर मौसेरे भाई।

प्राय यह देखा गया है कि सगी मा इतना प्यार नही करती जितना मौसी करती है। इसीलिए बङ्गाल म 'मासी माँ' कहते हैं। उसी तरह प्राय यह भी

देखा गया है कि जितना प्रेम सगे भाइयो में नही होता, उतना मौसेरे भाइयो म होता है। इसीलिए चोरो को मौसेरा भाई कहा गया है। उनमे परस्पर इतना प्रेम होता है जितना दो ईमारदार अच्छे आदमियो मे नही होता। एक दूसरे की कमजोरियो को जानने वाले परस्पर अच्छे मित्र हो जाते हैं। १८९।

चोर चोरी ते गा मुदा हेराफेरी ते नहीं।

इस कहावत के पीछे एक कहानी है। एक चोर साधू हो गया। परन्तु उसकी आदत नही गयी। साधुआ के पास चोरी के लिए कमण्डलो के सिवाय और क्या होगा। वह कमण्डल चुरा कर इसका उसके पास और उसका इसके पास करने लगा। पकड़े जाने पर उसने कहा यह चोरी नही हेराफेरी है, यह तो कमण्डलाचार है। इसलिए कहावत बनी कि चोर ने चोरी भले ही छोड दी हो परन्तु हेराफेरी नही। तात्पर्य यह कि वह अभी भी चोरी करता है पर वह उसे चोरी नही मानता बल्कि वह तो हेराफेरी अदला बदली है। आदत बडी मुश्किल से जाती है और बुरी आदत और भी मुश्किल से जाती है। अस्तु चोर साधू होने पर भी अपनी आदत से छुटकारा न पा सका। किसी बुरी आदत के न छूटने पर इस कहावत का प्रयोग होता है। १९०।

चोरन बचका लीन बेगारिन छुट्टी पावा।

कुछ सामान बेगारी लोग लिये जा रहे थे। चोरों ने वह सामान उनसे चुरा लिया। उन बेगारियो को खुशी हुई। उन्होने सोचा, बोझा ढोने से छुट्टी मिली। बेगारियो का बोझ हलका हो गया। मुफ्त मे काम करने वाले बेगारी या मजबूरन काम करने वाले लोग किसी प्रकार काम से छुट्टी पाना चाहते हैं, कोई बहाना चाहिए। बेगारी लोग बोझा तो पहले ही नहीं ढोना चाहते थे जब चोर चुरा ले गये तो सामान ढोने से छुट्टी मिल गई। वे बहुत खुश हुए।१९१।

छठी का दूध।

बच्चे को सवप्रथम छठी के दिन माँ का दूध पिलाया जाता है। अक्सर धमकी देते हुए लोग दूसरो को उसी दिन की याद दिलाते हैं। तात्पर्य यह कि उसे उस दिन की याद आ जायेगी जिस दिन से उसने अपनी माँ के ताकत प्राप्त करनी शुरु की थी। मानो आज तक का विकास कोई अर्थ नही रखता। अर्थात् वह इतना निबल है जितना उस दिन था जब पहली बार माँ का दूध पिया था। उसको अपनी निबलता का ख्याल हो आयेगा। कभी-कभी गाँव के लोग धमकी

देते हुई चुनौती देते हैं 'तुम्हारी महतारी दियानि होय तौ निकरि आओ' यानी माँ का दूध पिया हो तो मैदान मे उतर आओ देखें कितनी ताकत है तुम्हारे माँ के दूध मे। यह एक प्रकार की चुनौती है। १६२।

छठी माँ धरा गा है।

छठी के समय पूजा म बहुत सी चीजें रखी जाती हैं। इससे यह आशा की जाती है जो छठी म रखा गया है, उस बच्चा बहुत शीघ्र प्राप्त कर लेगा और कुशल एव योग्य बनेगा। कुछ चीजें एसी भी रखी जाती हैं जिनसे बच्चे को तकलीफ न उठानी पड़े जैस बिच्छू का डङ्क साँप की केंचुल इत्यादि। छठी की पूजा काफी विस्तृत पूजा है। यदि कोई व्यक्ति किसी विषय मे कुशल होता है या कोई विशेषता रखता ह तो लाग प्राय इस कहावत का प्रयोग करते हैं। जैसे एक लडका बहुत रोता ह। कुछ लोग कहते हैं रोना इसकी छठी म रखा गया था। अर्थात वह शुरू स ही बडा राने वाला बालक है।१८३।

छपरा मा तिनु नहीं औ दुआरे नाचु।

सामर्थ्य से अधिक महत्वाकाक्षी होना या काम करना। नाच करवाने म काफी खर्चा होता है। और यदि गरीब आदमी अपन दरवाजे पर नाच करवाये तो, समझदार लाग ऐसे व्यक्ति की नासमझी पर हसते हैं। यह कहावत ऐसे ही व्यक्ति पर व्यङ्ग है। छप्पर म तृण नही है या छप्पर ठीक कराने की सामर्थ्य नही है और नाच करवाने की तैयारी कर रह हैं। १८४।

छूछ कुआ पतकोरन न भरी।

काम बहुत बाकी हो और उसम बहुत पैसा खच होने वाला हो तो चेतावनी देते हुए कहा जाता है कि खाली कुआ पत्ता से नहीं भरेगा। इस खाली कुआँ को भरने या पाटने के लिए बडी चीजो की जरूरत है। काफी परिश्रम करना पडेगा और पैसा खच करना पडेगा। बडे काम का पूरा करने के लिए जब उचित प्रयत्न नही किय जात तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। १८५।

छेरी के मुह मा कुम्हडा।

जब कोई चाज किसी व्यक्ति के लिए बहुत बडी हो जब कोई व्यक्ति किसी बडे पद-सम्मान क अयोग्य हो तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। इस कहावत म व्यग्य है। जिस प्रकार बकरी कुम्हडे खाने की इच्छा रखता है

और कोशिश करती है परन्तु असफल होती है, उसी प्रकार प्राय लोग अयोग्य होने पर भी बडी चीजें हासिल करना चाहते हैं और असफल होते हैं। तब व्यग्य से यही कहा जाता है कि बकरी के मुह के लिए कुम्हडा नही है। ऐसी ही अन्य कहावत है 'यह मुह मसूर की दाल।" १८६।

छोट मुह बडी बात।

सीधी सी कहावत है। जब कोई व्यक्ति अपनी स्थिति, अपना पद और अपनी सामथ्य का विचार किये बिना, बडो और सामथ्यवान व्यक्तियो के सामने बडी बडी बातें करने लगता है जसा करना उसके लिए अशोभन है, तो कहा जाता है— छोट मुँह बडी बात।' इसमे बराबरी करने वाले व्यक्ति को एक प्रकार की फटकार है। कभी-कभी छोटे लाग बडी बातें कर सकते हैं—बडे काम भी कर सकते हैं परन्तु उनका एसा करना बडे लोगो को अच्छा नही लगता। १८७।

(ज)

जनम के दुखिया नाम चैनसुख।

यह भी नाम गुण विपयय सम्बन्धी कहावत है। स्थिति और गुणो का सबंध नाम से नही होता। पूरे जीवन भर दुख पाने वाले व्यक्ति का नाम चैनसुख हो सकता है। नाम होने से स्थिति और भाग्य नही बदल सकते। एसी कहावतें अनेक हैं। १८८।

जनम न देखिनि टाट।
सपने माँ आई खाट॥

जीवन भर तो टाट भी सोने को न मिला। पर सपने खाट के देखते हैं। महत्वाकाक्षी व्यक्ति पर यह आक्षेप है, जो प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी बड़े-बडे सपने देखता है, बडी बडी अभिलाषाए रखता है। समाज को एस महत्वाकाक्षी लोग नही रुचते। लोग चाहते हैं कि लोग अपनी औकात को पहचान कर उसी के अनुसार रहने की कोशिश करें। परन्तु मनुष्य स्वभाव से उन्नति प्रिय होता है और आगे बढना चाहता है। १८९।

जने जने कै लकडी एकु जने का बोझु।

खेल दिखाने वाले बाजीगर पैसे माँगने समय इस कहावत का प्राय उपयोग करते हैं। तमाशा देखने वाले सौ आदमियो ने यदि एक एक पैसा भी दिया तो बाजीगर का सौ पैसे मिल जायेंगे। एकत्र कर देने से बिखरी हुई चीजो का बोझ या महत्व बढ जाता है, उनकी शक्ति भी बढ जाती है। जिस लकडी या लाठी को एक आदमी आसानी स लेकर चलता है, यदि सब लोग एकत्र कर दें तो एक बडा भारी बोझ बन जाये जिसे एक आदमी आसानी से उठा भी न सके। परन्तु इस कहावत मे जो अर्थ है वह सहायता माँगने या थोडी थोडी मदद देने का है। एक पैसा देना किसी को भारी नही पडेगा, परन्तु वही एकत्र होकर एक व्यक्ति को काफी सहायता कर सकता है। इस प्रकार एक एक पैसा एकत्र होकर भारी और महत्वपूर्ण बन जाता है। २००।

जब उठाय लिहिसि झोरी।
तौ का बाह्मन का कोरी॥

जब भीख माँगने का पेशा स्वीकार ही कर लिया तो फिर ब्राह्मण, कोरी म क्या अन्तर ? फिर तो वह किसी के सामने भीख के लिए झोली फैला देगा। उस भिखारी के लिए सामाजिक जाति पाँति के भेद मिट जाते हैं। इसमे दो बातें हैं—एक तो यह कि जब बेशर्म होकर भीख माँगने का पेशा स्वीकार कर ही लिया तो वह सबकी निगाहों से गिर गया। सबके लिए वह भिखारी हो गया। भिखारी हो जाने पर वह (अछूत) कोरी की निगाहो मे भी गिर गया। दूसरी बात यह कि वह भेदभाव बरतेगा तो नुकसान उठायेगा क्योंकि वह सभी से भीख नहीं माँगेगा। यदि वह सबसे भीख नही ले सकता तो उसका भीख माँगने का क्षेत्र सीमित हो जायेगा। अर्थात जब बेशर्मी अख्तियार कर ली तो ऊँच नीच की क्या चिन्ता ? २०१।

जब ओखरी माँ मूड दीन तौ मुसरन त कौन डेरु।

ओखली और मूसल का निकट का सबध है। ओखली मे कुछ न कुछ कूटने के लिए मूसल चला ही करते हैं। तो यह जानते हुए भी किसी ने ओखली मे सिर दे दिया तो उसे चोटो से नही डरना चाहिए। डरता तो पहले ही अपना सिर ओखली स दूर रखता। अस्तु जब व्यक्ति जान बूझ कर अपने को कठिन स्थिति मे डालता है, तो तकलीफ उठाने के लिए तैयार भी रहना चाहिए। कभी

कभी लोग तकलीफों का अनुमान लगाये बिना कठिन स्थितियों में कूद पड़ते हैं और तकलीफ उठाते हैं तब दूसरे लोग कहते हैं कि ओखली में सिर दिया है तो अब मूसलों से क्यों डरते हो। अब भोगो। २०२।

जब गोंड़ुडे आइ बरात पगरतिन के लागि हगास।

अर्थात ऐन वक्त पर हाजिर न हो सकने पर यह कहावत कही जाती है। जब घर की चहारदीवारी में बरात आ गया, और जब लड़की की माँ को उपस्थित होना चाहिए, उन्हें टट्टी लग आयी। इसी प्रकार की दो कहावतें हैं— (१) शिकार की बेरिया कुतिया हगासी। 'श' के अन्तर्गत इसकी व्याख्या दी गयी है। (२) खड़े पै धोखा देना। इस कहावत को इस पुस्तक में स्थान नहीं दिया गया है। इस कहावत का सम्बन्ध लौंडे बाजी से है। जब छोकरा या लौंडा एन मौके पर धोखा दे जाय। मैंने ऐसी गन्दी कहावतों को भी इस पुस्तक में रखा है इसका कारण केवल एक ही है, वह यह कि अच्छा-बुरा, वांछनीय एवं अवांछनीय दोनों ही जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। बुरे को समझ कर ही अच्छा बनना अधिक श्रेयष्कर है। २०३।

जब तक पढ़िबे 'का का लया'।
तब तक जोतिबे तीनि हरया॥

शिक्षा के प्रसार के प्रयत्नों के समय गाँव के लोगों ने ऐसी उक्तियाँ गढ़ ली होंगी। साक्षरता दिवस पर प्रभातफेरियाँ निकाली जाती थीं जुलूस निकलते थे और यह आन्दोलन चलाया जाता था कि लोग अपने बच्चों को पढ़ने भेजें। किसान शिक्षा की उपयोगिता ठीक से समझ नहीं पाये थे। वे समझते थे कि इससे समय नष्ट होगा और उनके बच्चे जो खेतों में उपयोगी काम करते थे, नहीं करेंगे। जितनी देर पढ़ेंगे उतनी देर में तो खेतों में तीन बार हल चला लेंगे। अब स्थिति में काफी परिवर्तन हुआ है और शिक्षा के प्रति गाँवों में भी अनुकूल वातावरण तैयार हो गया है। २०४।

जब तक साँसा तब तक आसा।

बहुत ही स्वाभाविक बात है। जब तक मनुष्य जीवित है और साँस चल रही है तब तक आशा बनी ही रहती है। कोई भी मरना नहीं चाहता। अंतिम श्वाँस तक उसे अपने जीवन की आशा बनी रहती है। पूर्ण निराशा जीवित मृत्यु

है। निराश होने पर लोग आत्महत्या कर लेते हैं। पूर्ण निराशावादी व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता। अतः आशा का जीवन से घनिष्ठ सबंध है। २०५।

जब बाँझि बियानि तो सोंठि हेरानि।

जब कोई बडा मुश्किल या नामुमकिन काम बन जाये परन्तु दूसरी आवश्यक चीज न मिले तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं। बाँझ औरत के बच्चा पैदा होना असंभव काम है। परन्तु जब वह संभव हुआ तो सोंठ गायब हो गयी। (सोंठ को पीस कर गुड मे मिलाकर जच्चा को खिलाया जाता है, जिसे सोंठौरा कहते हैं) ऐसी स्थिति में सोंठौरा औषधि का-सा काम करती है और इसका उपयोग बहुत जरूरी माना जाता है। जब एक मुसीबत दूर हुई तो दूसरी तैयार हो गया—ऐसी स्थिति मे इस कहावत का उपयोग किया जाता है। २०६।

जब बहै हुरहुया कोनु।
तब बनिया लाद लोनु॥

अर्थात अब पानी नही बरसेगा क्योंकि बनिया नमक लाद कर बेचने जा रहा है। जब पश्चिमी पवन बहने लगा तो वर्षा के लक्षण समाप्त हो गये। उत्तर भारत में अधिकांश पूर्वी हवा से पानी बरसता है क्योंकि बंगाल की खाडी से उठने वाले मानसून जब पश्चिम उत्तर में आकर हिमालय से टकराते हैं, तो उत्तर प्रदेश, बिहार में वर्षा होती है। पछुवा हवा चलने से शुष्क वातावरण आ जाता है जो इस बात का निर्देशक है कि अब वर्षा नही होगी। पानी के सम्पर्क से नमक गल जाता है। अतः होशियार बनिया इस समय नमक बेचने नहीं जायेगा जब पूर्वी नम हवा चल रही हो क्योंकि ऐसा करने से उसके माल को नुकसान पहुँचेगा। २०७।

जब बूढ़ी भई बिलारी।
तब मूस बजाव तारी॥

जब घर के प्रभावशाली व्यक्ति का, अधिक अवस्था हो जाने के कारण, प्रभाव कम या समाप्त हो जाता है, तो छोटे लोग स्वतंत्र और स्वच्छन्द हो जाते हैं। सामान्य रीति से इस कहावत का उस समय प्रयोग होता है जब नियंत्रण ढीला हो जाता है तो उपद्रव मच जाता है। जब बिल्ली बुड्ढी और कमजोर हो जाती है, तब चूहों को पूरी आजादी मिल जाती है, और वे बिल्ली को ताली बजा कर चिढ़ाते हैं। २०८।

जबरा क मेहेरिया ज्वारिभर क काकी ।।

दबग अथवा प्रभावशाली व्यक्ति की पत्नी को भी सब सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और काकी कहते हैं। इसी के विपरीत दूसरी कहावत है—निबर कै मेहेरिया जवारि भर कै भौजी। अर्थात कमजोर आदमी की पत्नी को सभी भौजाई कहते हैं और उससे मजाक करते हैं—छेड़छाड़ करते हैं। अर्थात प्रभावशाली व्यक्ति के सम्पर्क म रहने वाले कमजोर आदमी का भी महत्व बढ़ जाता है। २०९।

जबरा कर जबरई नींबर कर नियाओ।

बड़े ही गहरे अनुभव की बात कही गयी है। शक्तिशाली व्यक्ति जबरदस्ती और मनमानी करते हैं और कमजोर लोग न्याय की बात करते हैं। यानी समथ एव शक्तिशाली व्यक्ति सभी प्रकार उलटा सीधा करते रहते हैं और बेचारे कमजोर लोग न्याय इसाफ की बातें करते हैं। इसीलिए गोसाइ तुलसीदास जी ने कहा कि 'समरथ का नहिं दोस गोसाइ।' समथ व्यक्ति की शक्ति है उनकी सामथ्य और कमजोर लोगों की ताकत है कायदा कानून-न्याय इसाफ। २१०।

जबरा मार रोव न देय।

ऐसे समथ एव जबरदस्त आदमी कमजोर लोगों को सताते भी हैं, और शिकायत भी नही करने देते। कष्ट पाने पर व्यक्ति रोता है—शिकायत करता है। परन्तु जबरदस्त आदमी मारते भी हैं और रोने भी नही देते। शिकायत करन जाओ तो मारें। बेचारे कमजोर आदमियों की जिन्दगी बडी दुखपूण है और दुष्ट व्यक्तियों की कृपा पर निभर है। वही सभ्यता का उच्चतम विकास है, जब हीनतम व्यक्ति न्याय पा सके अपने को सुरक्षित समझे, जब पशुबल का स्थान न्याय ग्रहण कर ले। २११।

जरे मां लोनु लगाउब।

जले पर नमक लगाने से और भी तकलीफ होती है क्योंकि घावों म नमक पहुँच कर और कष्ट देता है। वैसे जले पर नमक औषधि का काम करता है—परन्तु कष्ट तो मिलता है। घावों म छरछराहट होती है। कहावत का अर्थ है—तकलीफ मे और तकलीफ देना। जलन की पीडा पहले ही बहुत अधिक है नमक लगाने से पीडा बढ़ेगी। अक्सर जब मन किसी कारण दुखी होता है

और उस समय कोई और भी अप्रिय बातें करता है, तो मन को और भी क्लेश होता है। उस समय व्यक्ति खीझ कर कहता है कि जले पर नमक मत लगाओ। २१२।

जस दुलहा तसि बनी बराता।

यह कहावत शकर भगवान की बारात के आधार पर है। शकर भगवान की बारात विलक्षण था। स्वय भग पिये, भभूत रमाये, नन्दी पर सवार थे और बारात मे अनेक भूतप्रेत, विकलाग लोग उपद्रव करते हुए शामिल थे। अर्थात् दूल्हा और बारात दोना ही अद्‌भुत और अशोभन रूप मे थे। अत जब कभी किसी व्यक्ति का ढग ठीक नही होता और उसके आस-पास के लोग एव प्रबध भी ठीक नही हो तो यह कहावत कही जाती है। अर्थात् जैसा वह खुद है, वैसे ही उसके साथी। २१३।

जस माय तस बेटी।
जस सूत तस फेटी॥

बेटी अपनी माँ से उत्पन्न हुई है अत उसमे अपने माँ के सभी गुण-अवगुण होगे, जिस प्रकार सूत के अनुसार ही उसकी गुण्डी होती है। जब दो व्यक्तियो के गुण अवगुणो म भेद नही होता—दोना एक-से ही अच्छे या बुरे होते हैं तो यह कहावत चरितार्थ होती है। २१४।

जस मुकुन्द तस पादन घोडी।
बिधना आनि मिलाई जोडी॥

जैसे मुकुन्द हैं वैसी ही उनकी घोडी भी सटही या मरियल है। विधना न स्वय मानो अपने हाथा से इस जोडी को बनाया हो। पिछली कहावत की ही भाँति इस कहावत का अर्थ है। दोना अपने दुर्गुणा म ऐसे मिलते जुलते हैं कि केवल भगवान ही ऐसी जोडी बना सकता है। इस कहावत मे कमिया या दुर्गुणा की ओर ही विशेष सकेत है। २१५।

जहँ जहँ चरन पर सन्तन के तहँ तहँ बटाधार।

यह शुद्ध व्यग्य है। यहाँ सन्त स तात्पर्य है दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति से। ऐसा व्यक्ति जहाँ भी जायेगा सब चौपट हो होगा। सन्त शब्द का प्रयोग इसी लिए किया गया है क्योकि सन्त जीवन की सुचारुता एव व्यवस्था के विरोधी

होते हैं क्योंकि वे गृहस्थी तोड कर जाते हैं गृहस्थाश्रम से डरते हैं। जो गृहस्थी का ताडने वाला है, वह समाज और जीवन की व्यवस्था में उत्पात होता है। इसीलिए सन्तों को बंटाधार करने वाला माना गया है। वस्तुत यहाँ पर सन्त शब्द व्यंग्यार्थ में प्रयुक्त हुआ है। २१६।

जहाँ जाय भूखा तहाँ पड सूखा।

जहाँ भूख जाती है, वहाँ अकाल पड जाता है। भूख सर्वभक्षी है और टिड्डियों की तरह साफ चाट जाता है, अत अकाल पड़ना स्वाभाविक है। यह कहावत उस समय कही जाती है जब कोई व्यक्ति किसी के यहाँ कुछ लेने जाता है और खाली हाथ लौटता है। अर्थात् जहाँ भूखा जायेगी वहाँ सूखा अवश्य पड जायेगा—कोई चीज नही मिलेगी। उसका जाना अपशकुन की तरह है कि जहाँ वह जाता है पहले से ही चीजें गायब हो जाती हैं। जरूरतमंद आदमी कहीं भी आसानी से अपनी जरूरत की चीज नही पाता। २१७।

जहाँ रूख न बेरूख तहाँ रेण्ड रूख।

जहाँ वृक्ष का अभाव होता है वहाँ रेण्ड को ही वृक्ष कहने लगते हैं। रेण्ड को वृक्ष नही माना जाता क्योंकि बड़ा होकर भी वह इतना छोटा और कमजोर होता है कि उसे वृक्ष की संज्ञा से अभिहित नहीं किया जा सकता। परन्तु जिस प्रकार अन्धों में काना ही राजा होता है उसी प्रकार वृक्षों के अभाव में रेण्ड को ही वृक्ष कहने लगते हैं। २१८।

जहाँ सीके न समाय तहाँ फार समवाय।

कम गुंजाइश की जगह में अधिक गुंजाइश निकालने की कोशिश करना। जहाँ सींक का जाना मुश्किल हो वहाँ हल का फाल कैसे जायगा? परन्तु ऐसी जबरदस्ती करने वाले के लिए इस कहावत का प्रयोग करते हैं। ऐसी ही एक और कहावत है—'सुई की जगह तलवार चलावै—या बन्दूक की जगह तोप लगावें।' अर्थात् जहाँ साधारण उपचार अथवा प्रयत्न से काम बन जाता हो वहाँ भी असाधारण प्रयत्न करना। २१८।

जहा सूर साठा का जाय।
पँडवा भसि बुई मरि जाय॥

सूर की जगह बहुत-से लोग कबीर भी कहते हैं—इससे कहावत के अर्थ में

कोई अंतर नहीं पड़ता। जब कोई अपने मौका व प्रयत्नों में पूर्ण असफल होता है और उसे अपनी जरूरत की चीज नहीं मिलती है तो वह अपने को ही इन शब्दों में कोसता है। यह कबीर या सूर की तरह ऐसा अभागा है कि जहाँ माठा लेने जाता है, वहीं उस सुनने को मिलता है कि भैंस मर गयी या पड़िया मर गयी। दूध तो नहीं होता, माठा कहाँ से होगा। असफलताओं के कारण निराश व्यक्ति इस उक्ति का प्राय प्रयोग करते हैं। २२०।

जाति सुभाव न छूटै।
टाँग उठाय कै मूत॥

अपनी विशेषता (जातिगत या जन्मगत) नहीं छूटती। जिस प्रकार कुत्ता किसी का भी हो और कितनी ही अच्छी तरह क्यों न रखा गया हो उसकी जाति गत विशेषता—टाँग उठाकर पेशाब करना—नहीं जायेगी। जब किसी की कोई खास आदत नहीं छूटती और उसका व्यवहार वैसा ही अप्रिय बना रहता है तो लोग खीझ कर कहते हैं यह आदत नहीं छूटेगी क्योंकि यह जातिगत या वंश परम्परा से है। २२१।

जानि न जाय निसाचर माया।

तुलसीदास जी की चौपाई का अंश है। राक्षस की माया का समझ सकना असंभव है। जब किसी दुष्ट व्यक्ति की कुचालों से आदमी परेशान हो जाते हैं और कोई समाधान नहीं ढूँढ पाते क्योंकि वह नित्य नयी चालें चलता है, तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। दुष्ट व्यक्ति, पता नहीं कब क्या करेगा? २२२।

जापर जाकर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू॥

यह अर्द्धाली भी तुलसीदास जी की लिखी हुई है। जिस पर जिसका सच्चा प्रेम होता है वह उसे अवश्य मिलता है। इसमें प्रेम के सच्चेपन पर जोर दिया गया है और यह विश्वास दिलाया गया है सच्चे प्रेम का निःसंदेह परिणाम सुख कर होता है। २२३।

जियत न दीन्हिनि कौरा।
मरे उठहैं चौरा॥

जीवनकाल में तो पेट भर भोजन भी न दिया तो ऐसे व्यक्ति से यह कैं

आशा की जा सकती है कि वह मरने पर समाधि या स्मारक बनवायेगा ? मरने पर या आँखो की ओट होने पर कोई परवाह नही करता—फिर वह आदमी जिसने मुह देखी प्रीति भी न की हो—और जीवनकाल म रोटी भी देने की चिन्ता न की हो वह मरन पर क्या याद करेगा। जब सामने होने पर कोई व्यक्ति कुछ नहीं करता तो पीठ पीछे क्या करेगा ? २२४ ।

जो गरजिहैं तो बरसिहैं का।
जो पुपुअइहैं तो करिहैं का॥

गरजने वाले बादल बरसा नहीं करते, शेखी मारने वाले लोग काई काम नही कर सकते। यह एक अनुभवगत सत्य है। बहुत बातें करन वाले लोग बहुत कामिल लोग नही होते। उन्ही लोगो को अधिक बातें करने को आवश्यकता होती है जो काम नहीं करते। काम करने वालो के पास बातें करने के लिए इतना समय नही होता। २२५ ।

जो बियानी तो ललानी।
पडोसिन पूत खिलानी॥

जिस चीज के लिए जब कोई व्यक्ति तकलीफ उठाता है और उसे पाता भी है परन्तु कुछ कारणो से उसका आनन्द या सन्तोष न ही पाता तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। यह औरतों की कहावत है। पुत्र का जन्म देने वाली माँ अपने पुत्र को खिलाने और प्यार करने से वचित रह गयी—(कदाचित किसी बीमारी के कारण) और पडोसिन ने उसे खिलाने और प्यार करने का आनन्द उठाया। ऐसी दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति मे इस कहावत का उपयोग किया जाता है। चीज मिल कर भी न मिले—उसके मिलने के आनन्द से वंचित रह जाये। २२६ ।

जो लाई थारा, उई भई उतारा।
जो लाई चलनो, उई भइ घर थपनी॥

कभी कभी जीवन मे अकारण ही विपरीत स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अपनी माँ के घर से विवाह के समय थाल लाने वाली बहू सासु के मन से उतर गयी और चलनी लाने वाली (जिसमे 'बहत्तर छेद) घर की सर्वस्व बन गयी। ऐसी अनुचित दुखपूर्ण स्थिति के उत्पन्न होने पर समझदार औरतें स्पष्ट इन शब्दो मे बात को प्रकट कर देती हैं। कुछ चालाक औरतें अपनी वाक्पटुता

से सासु को अपने अनुकूल बनाकर मुट्ठी में कर लेती हैं और घर में शासन करती हैं। २२७।

जेठु मास जो तपै निरासा।
तौ जानौं बरखा कै आसा॥

वर्षा संबंधी कहावत है। जेठ महीने में यदि अधिक गर्मी या तपन हो तो समझना चाहिए कि वर्षा अच्छी होगी। इस संबंध की अनेक कहावतें हैं जिनमें ज्येष्ठ मास के तपने या मृगशिरा नक्षत्र में तपने पर वर्षा की आशा प्रकट की गयी है। और जब पुरवा चले तो वर्षा कम होगी। पुरवा हवा चलने पर तपन नहीं होती। २२८।

जेत्ता अधरऊ बर ओत्ता पँडऊ चबा जायँ।

सीधा आदमी जितना कमाता है उतना सब घर के लोग खा जाते हैं। बेचारे को अपनी मेहनत के फल का उपभोग करने का अवसर भी नहीं मिलता। ऐसे भोले आदमियों के प्रति सहानुभूति इन शब्दों में प्रकट की गयी है। सीधे आदमी का कमाना व्यर्थ हो जाता है। संयुक्त परिवार में ऐसा प्राय होता है। २२९।

जेता न हगिनि हगनहारी।
ओत्ता हगिनि साथ की ज्योनारिन॥

जिनसे किसी प्रकार की आशा नहीं थी, उनसे तो बहुत कुछ मिला, या उन्होंने बहुत किया परन्तु जिनसे आशा थी उन्होंने कुछ न किया या बहुत कम किया। भोजन के लिए जो असली आमन्त्रित स्त्रियाँ थीं उन्होंने उतनी गन्दगी नहीं फैलायी जितनी उन औरतों ने फैलायी जो आमन्त्रित स्त्रियों के साथ आ गयी थीं। जिनसे उम्मीद की जा सकती थी, उन्होंने तो कुछ न किया, पर जिनको ऐसा करने का अधिकार भी न था उन्होंने खूब किया। यह घरेलू कहावत है जिसका प्रयोग स्त्रियाँ उस स्थिति में करती हैं जब कोई गड़बड़ किसी अनाधिकारी स्त्री द्वारा हो जाती है। २३०।

जेत्ते के ढोल नहीं ओत्ते के मँजीरा फूट।

जब गाना बजाना होता है तब ढोलक मँजीरा बजाये जाते हैं। ढोलक की तुलना में मँजीरा सस्ते होते हैं। ढोलक तो नहीं परन्तु कई जोड़ी मँजीरा फूट

गये। नुकसान उतना ही हो गया जितना एक ढोलक के फूटने पर होता। शायद किफायत करने वाले ने ढोलक फूटने के नुकसान का बचाने के लिए ढोलक का इस्तेमाल नहीं किया उसकी जगह मंजीरा बजवाये यह सोच कर ये तो कांस के होते हैं—ढोलक की अपेक्षा मजबूत होते हैं, परन्तु हुआ अपेक्षा के विरुद्ध ढोल की कीमत से अधिक के मजीरा फूट गये। असली चीज के बचाने के लिए जो खर्च किया जाता है और वह जब अधिक हो जाता है, तब इसका प्रयोग होता है। २३१।

जेहि का बिआह तेहिका आध बरा।

जिसके विवाह के उपलक्ष्य मे बडे बनाय गये उस बेचारे को आधा ही बडा खान को मिला। जिसके लिए जो काम होता है, और उसी को सबसे कम लाभ मिलता हो तब इस कहावत का प्रयोग होता है। जिस चीज पर जिसका सबसे अधिक अधिकार होता है उसी को जब सबसे कम लाभ मिलता है तो यह कहावत चरितार्थ होती है। २३२।

जेहि का काम वो ही का छाजे।
और करै तौ डण्डा बाजै॥

जो जिसका काम है, उसी को करना शोभा देता है उसे यदि कोई अन्य अनाधिकारी व्यक्ति करता है तो तकलीफ पाता है। २३३।

जेहि का बठे न देखाय वोहि का ठाढे देखाय।

स्थिति परिवर्तन से जब किसी की मनोनुकूल इच्छा पूर्ण हो जाती है तो इस कहावत का प्रयोग होता है। वैसे साधारणत बैठे देखने की अपेक्षा खड़े होकर देखने मे अच्छा दिखायी देता है परन्तु सभी यह चाहते हैं कि बिना अधिक परिश्रम के काम बन जाय पर हमेशा ऐसा नहीं होता। अस्तु यदि काम आराम से नहीं होगा तो थोडी तकलीफ उठाने से तो हो ही जायेगा। २३४।

जेहि की छाती एकु न बार।
वोहि ते सदा रह्यो हुसियार॥

यह शरीर के निरीक्षण के आधार पर चरित्र की विशेषता बतलाने का प्रयत्न है। जिसकी छाती मे बाल न हो वह चालाक और कपटी मनुष्य होता है। उससे सावधान रहना चाहिए क्योंकि वह कभी भी आघात कर सकता

है। चारित्रिक विशेषताओ के जानने का आधार शारीरिक रचना संदिग्ध है। कभी-कभी ऐसे वक्तव्य बिलकुल सही निकलते हैं, परन्तु कभी-कभी बिलकुल गलत भी होते हैं। २३५।

जेहि का पिया मान वहै सोहागिनि।

जिसको पति माने वही सोहागिन है, वैसे सभी उसकी पत्नियाँ हैं। यह बहु विवाह प्रथा की ओर सकेत करती है। बहुत सी पत्नियों के होने पर पति किसी को अधिक, किसी को कम और किसी को बिलकुल प्यार नही करेगा। वैसे कहने को सभी विवाहिता हैं पर वस्तुत भाग्यशालिनी वही है जिसको पति माने। वैसे हम सभी उस भगवान के बच्चे हैं, पर सभी को उसकी कृपा प्राप्त नही है। अधिकारी को लेकर भी इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। जिसको मान्यता मिल जाये वही भाग्यशाली है। बहुविवाह के अतिरिक्त भी इस कहावत का सार्थक विकास संभव है। २३६।

जेहि के पांव न गइ बेवाई।
सो का जान पीर पराई॥

। जिसने स्वय कष्ट का अनुभव नही किया वह दूसरे की पीडा का अनुमान भी नही लगा सकता। बेवाई फटने पर कितना पीडा होती है केवल वही जान सकता है जिसके कभी बेवाइयाँ फटी हो। स्वानुभाव के आधार पर ही मनुष्य दूसरो की स्थिति का सही अनुमान लगा सकते हैं। जब कोई व्यक्ति दूसरे की तकलीफो को नहीं समझ पाता तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। २३७।

जेहि के लाठी तेहि क भैंस।

इसी के समानान्तर अंग्रेजी मे एक कहावत है, 'माइट इज राइट' —' शक्ति ही न्याय है।'' जिसके हाथ म लाठी है—यानी ताकत है भैंस भी उसी की है। मानव-जीवन की असभ्यता की परिचायिका यह कहावत आज भी सही प्रतीत होती है। अर्थात मानव जीवन ने आज तक उतनी सभ्यता का विकास नहीं किया जहाँ शक्ति का वर्चस्व न होकर न्याय और सत्य का अनुगमन होता हो। जब तक हम उस सभ्य स्तर तक नहीं पहुँचेंगे तब तक हमारे जीवन म कलश, कलह, कष्ट, युद्ध और अनाचार चलते रहेंगे। तभी उत्तम सभ्यता होगी जब यह कहावत गलत सिद्ध हो जायगी। २३८।

जेहि घर एकु न डगा।
तेहि घर डगी का मगा ॥

जिसके घर म एक भी आदमी नही थी, सब सुनसान था गरीबी और उदासी थी, उसी घर म चहल पहल हो गयी। इस प्रकार के परिवतन पर कहावत का प्रयोग होता है। कभी कभी कुछ लोग कजूसी की वजह से इतने असामाजिक हो जाते हैं कि उनके घर कोई जाना पसन्द नही करता—उसी घर म यदि चहल पहल होने लगे तो एक अनोखी बात हो जाती है। इसी अनोखेपन का चित्र है, इस कहावत मे व्यजित है। २३९।

जेहि का ऊच बैठना, जेहि का खेतु निचान।
तेहि का बैरी का करै, जेहि क मीत देवान ॥

यह नीति का दोहा गांवो के शिक्षित समुदायो मे ही कभी सुनायी देगा। जिसकी सगत बडे लोगो की है, जिसका खेत नीचे ढलान पर है, जहाँ पानी अपने आप बहकर पहुच जाता है, और जिसका मित्र राजा का दीवान या मत्री है, उसकी उसके दुश्मन भी नुकसान नही पहुँचा सकते। २४०।

जेहि घर सार सारथी, और तिरिया क सीख।
सावन मां हर बैल बिन, तीनौ माँग भीख ॥

यह भी नीति का दोहा है, जिसका प्रयोग बहुत व्यापक नही है परन्तु इसकी सीमा सत्र पर विदित है। घर में साले का राज्य हो आदमी अपनी पत्नी के सिखाये पर चलता हो और जिस किसान के घर मे सावन तक हल बैल का प्रबन्ध नही हुआ तो निश्चित ही य तीनो भीख माँगेंगे।२४१।

जेहि घर सासु चमकूल तेहि घर बोहर कौन सिंगार।

जिस घर का बुडढी सासु ही बडी शौकीन हो उस घर म बहुओ को श्रृंगार करने का अवसर ही न आयेगा। वह बुडढी ही दिन भर श्रृंगार करती रहेगी, तो युवा बहुओ को मन मारकर घर गृहस्थी की व्यवस्था को सभालना पडेगा। घर मे सभी तो श्रृंगार करके गृहस्थी का नही चला सकती। अत बहुओ को अपनी श्रृंगार वृत्ति का त्याग करना होगा। यह भी घरेलू कहावत है जिसका प्रचलन स्त्रियो म है। बुडढी औरतो की श्रृंगार वृत्ति पर कटाक्ष है।२४२।

जे दिन जेठ चलै पुरवाई।
तै दिन सावन सूखा जाई ॥

वर्षा सम्बन्धी सकेत है। जितने दिन ज्येष्ठ मास पुरवा हवा चलेगी उतने ही दिन सावन म सूखे या वर्षाहीन रहेंगे। साधारण धारणा यह है कि ज्यष्ठ मास म खूब तपना चाहिए। न तपने से वर्षा मे व्यतिक्रम उपस्थित हो जाता है। सावन वर्षा का महीना है अर्थात् सावन मे वर्षा न होगी। सावन मे वर्षा के न होने पर खेती सूख जायेगी। २४३।

जैस देसु तस भेसु।

जिस देश म रहे उसी देश की वेशभूषा को अपना लेना चाहिए। साधारण नीति की बात है। ऐसा करने से अनेक प्रकार की सुविधाएँ सरलता से प्राप्त हो जाती हैं। इस नियम के विरुद्ध आचरण करने पर अनेक प्रकार की तकलीफें उठानी पडती हैं। यह एक अच्छा नियम है, जो अपने उद्देश्य में बडा ही प्रगतिशील है। २४४।

जैसी देखै गाँव क रीति।
तसी उठावै आपनि भीति ॥

उपयुक्त नीति का इन शब्दो म भी प्रस्तुत किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण बहुत ही उपयोगी और प्रगतिशील है। जिस गाँव मे जाये और वहाँ की जैसी रीति देखे उसी क अनुसार अपने जीवन का विकास करे—वैसे ही अपना निर्वाह करे। २४५।

जैसी करनी तसी पार उतरनी।

भले ही साधारणत यह बात सही न भी दिखाई दे परन्तु लोक मानस का विश्वास है कि जो जैसा करता है वैसा पाता है। अच्छे काम करने वाले को अच्छे परिणाम और बुरे काम करने वाले को बुरे परिणाम भोगने पडते हैं। यदि इस जीवन म उसे अपने कर्मों का फल नहीं मिलता तो उस पार अगले जीवन म उसे अपने कर्मों का फल भोगना पडता है। वह अपने अच्छे बुरे कर्मों क अनुसार ही दूसरे जीवन म सुख-दुख पाता है। इस विश्वास से यह लाभ है कि जनसाधारण बहुत आसानी से बुरे काम करने के लिए प्रेरित नहीं होता। [illegible] उस रोकता रहता है। २४६।

जैसे उदयी तसे भान।
न इनके झोटई न उनके बात ॥

जब दो साथियो म दोनो एक दूसरे से बढ कर हा, दुष्टता या शरारत करने मे तो इस कहावत का प्रयोग होता है। दो बेशम और वेफिक्रे व्यक्तिया की दोस्ती पर भी ऐसा कहा जाता है। इस कहावत म धार तिरस्कार की भावना नही है। कुछ हास्यपूर्ण स्थितिया म भी इसका उपयोग किया जाता है। किसी एक व्यक्ति से काय सिद्धि होने की आशा हो और विफलता मिल और दूसरे व्यक्ति क सहारे काय को पूरा करन का विचार किया पर वह भी उतना ही बेकार सिद्ध हो तो चतुर लोग इस कहावत क द्वारा दानो का तिरस्कार कर देते हैं। २४७।

'ना हसि क अर गहिन ना रिस क खचिन केस।'
जैसे कन्ता घर रहे, तसे रहे विदेस॥

पति का घर रहना और विदेश रहना एक समान है यदि उससे कभी हस कर प्रेम से पत्नी का हाथ न पकड़ा हो और गुस्से मे आकर बाल झकझोरे हो। पत्नी उपेक्षा नही सह सकती। वह प्रेम तो चाहती ही है, परन्तु अपने पति के क्रोधित होने पर भी सुखी होती है क्योकि क्रोध और प्रेम दोना म अपनेपन की आधारभूमि रहती है। परन्तु उपेक्षा मे अपनापन छूट जाता है। जब अपनापन न रहा तो पति का घर या विदेश रहना बराबर है। क्रोध उसी पर किया जाता है जिस पर कुछ अधिकार होता है। २४८।

जैसे जेहि कै चोट पिराय।
तसे हल्दी मोल बिकाय॥

अर्थशास्त्र का अच्छा सूत्र है। जिस चीज की जितनी जरूरत बढ़ती जाती है उसी अनुपात मे उसकी कीमत भी बढ़ जाती है। हल्दी चोट लगने पर लेप के रूप मे लगायी जाती है। जितनी ही चोट अधिक दर्द करती है उतनी अधिक जरूरत हल्दी की होती है। बनिया इस स्थिति से फायदा उठाता है। जब जिस चीज की जितनी अधिक गरज होती है उतनी अधिक वह महगी होती है। किसी की ऐसी वणिक वृत्ति पर यह उक्ति कहा जाती है। किसी के जरूरत से जब कोई अनुचित लाभ उठाने का यत्न करता है तब इस कहावत का चरितार्थ करना है। २४९।

जैसे नाग नाथ तैसे साँप नाथ।

नागनाथ और साँपनाथ में वस्तुतः कोई भेद नहीं है क्योंकि दोनों ही जहरीले होते हैं। नाम भेद से गुण भेद नहीं होता। अतः साँप को चाहे नाग कहो या साँप—उनके काटने का परिणाम एक ही है—मृत्यु। जब दोनों व्यक्ति एक समान ही दुष्ट हों तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है।२५०।

जो बिधवा होइ कै करै सिंगार।
ओहि ते सदा रह्यो हुसियार॥

जो स्त्री विधवा होने पर भी शृंगार करे उससे होशियार रहना चाहिए। समाज में विधवा के संबंध में इतनी कठोरता और सावधानी बरती जाती है, कि शायद ही कभी कोई विधवा शृंगार करने की सोचे। और यदि करेगी भी तो वह अपना ही अहित करेगी। इस पर भी कोई विधवा शृंगार करे ही तो निश्चित ही सावधान रहना चाहिए। इतने नियंत्रण और निषेधों के होते हुए भी जो विधवा शृंगार करे तो सचमुच वह विधवा अधिक साहस वाली है जो कुछ भी कर सकती है। २५१।

जोरू टटोलै गठरी, अम्मा टटोल अतरी।

जब आदमी घर आता है तो पत्नी गठरी देखती है कि उसका पति उसके लिए क्या लाया और माँ बेटे को पेट देखती है कि बेटे ने खाना खाया है या नहीं। या उसका स्वास्थ्य पहले से अच्छा है या खराब। माँ का ध्यान अपने बेटे के स्वास्थ्य पर होता है और पत्नी अपने स्वार्थ की सिद्धि की चिन्ता में रहती है। यह माँ और पत्नी में अंतर है। माँ का प्रेम निःस्वार्थ और पत्नी का प्रेम स्वार्थमय है। माँ के निःस्वार्थ प्रेम की घोषणा इस कहावत में की गई है। २५२।

जेहि न जाता-खुदा ते नाता।

जिसका कोई नहीं होता अथवा जिसका किसी से नाता नहीं केवल भगवान से होता है उसके बारे में इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ठीक ही है, जिसका इस धरती पर कोई सगा नहीं है उसका सम्बन्ध खुदा से तो है ही। खुदा शब्द का प्रयोग भी कुछ विचित्र है। हिंदू परिवारों में इस प्रकार खुदा का प्रयोग कुछ अटपटा जरूर है। परन्तु हो सकता है इस कहावत का प्रारम्भिक सम्बन्ध किसी मुस्लिम परिवार से रहा हो। २५३।

जो फागुन मास बहै पुरवाई ।
तौ जायो गेहूँ गेरुई धाई ।।

खेती सम्बन्धी कहावत है । फागुन के महीने में जब गेहूँ पक जाता है और कटनी शुरू हो जाती है, उस समय यदि पछुवा हवा न चली पुरवा नम हवा चली तो गेहूँ ठीक से सूख नहीं पायेगा । उसी हालत में वह बखारी में लगा दिया जायेगा तो उसमें गेरुई जरूर लगेगी और गेहूँ खराब हो जायेगा । पुरवा हवा की नमी के कारण ऐसा होता है । २५४ ।

जौनी पतरी माँ खायँ ओही मा छेदु कर ।

जिसके सहारे जियें उसी की निन्दा करें । संयुक्त परिवार में बहुत से ऐसे नाते रिश्तेदार रहने लगते हैं जो परिवार के प्रति अपना कर्तव्य नहीं समझते केवल अधिकार जताते हैं और आनन्द करते हैं । कोई बाहरी मिला तो अपनी तारीफ करते हैं, और जिसके यहाँ रहते हैं उसकी निन्दा करते हैं । 'यह तो मैं हूँ उनके यहाँ पड़ा हूँ कोई दूसरा होता तो एक दिन न ठहरता— इत्यादि । २५५ ।

जो पुरवा पुरवया पाव ।
झूरी नदिया नाव चलाव ।।

वर्षा सम्बन्धी कहावत है । जो पूर्व में पुरवा बहे तो सूखी नदिया भर जायें और नावें चलें । पहले ही कहा जा चुका है, कि उत्तर भारत में पुरवा हवा से पानी बरसता है । इसलिए पुरवा हवा का वर्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध है । २५६ ।

(झ)

झींगुर बचुका माँ का बठिगा जानौ बजाजा ओही का होइगा ।

अपना माल न होने पर भी थोड़ा सा अधिकार पाने पर जब व्यक्ति अपना पूर्ण अधिकार समझने लगता है, और मालिक की भाँति लोगों से व्यवहार करने लगता है तो लोगों को उसका यह मालिकाना व्यवहार पसन्द नहीं आता

तब वह इस कहावत का उपयोग करता है। बजाजे में झींगुर पहुँच गया तो समझने लगा कि सारा बजाजा उसी का है। मालिक न होने पर भी या अधिकारी न होने पर भी, जरासी शह से जब व्यक्ति मालिकाना रुआब और अधिकार जताने लगता है तो इस कहावत को चरितार्थ करता है। २५७।

झोरी माँ टका नहीं सरायँ माँ डेरा।

गाठ में पैसा नहीं और सराय में ठहरने चला है। सराय में ठहरने के लिए पैसे लगते हैं। अब तो अँग्रेजों के आगमन के बाद सरॉय का स्थान होटलों ने ले लिया है। जो बिना रुपये पैसे जीवन का मजा लूटना चाहते हैं, उनके बारे में यह कहावत कही जाती है। या ऊँची ऊँची महत्वाकांक्षाएं रखने वाले लोग इस कहावत को चरितार्थ करते हैं। २५८।

(ट)

टँटे लरिका गाँव गोहारि।

गोद में लड़का लिये हुए हैं और गाँव भर में शोर कर दिया कि मेरा लड़का खो गया और ढूढ़ती फिरती है। सुधिबैली औरत के लिए यह व्यग्य है। भुलक्कड़ों के सम्बन्ध में इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। उसे अपने लड़के की इतनी चिन्ता है कि उसे हमेशा डर लगा रहता है कि उसके लड़के को कहीं कुछ हो न जाय—वह इधर-उधर न चला जाये। उसकी कल्पना का भय कभी-कभी उसको ऐसी मानसिक स्थिति में पहुँचा देता है कि उसे सचमुच महसूस होने लगता है कि लड़का खो गया। २५९।

टेढ़ जानि संका सब काहू।

टेढ़ या वक्र अथवा दुष्ट से सबको शंका रहती है भले ही वह कुछ अहित या बुराई न करे परन्तु फिर भी उसके प्रति मन में शंका बनी रहती है। दृष्टान्त के लिए इसकी अगली पंक्ति में ही कहा गया है कि राहु पूर्णमासी के चन्द्रमा को ही ग्रसित पहुँचाता है वक्र चन्द्रमा को नहीं ग्रसता। अर्थात पूर्णमासी के चन्द्रमा में ही ग्रहण लगता है। वक्र चन्द्रमा में नहीं। २६०।

(ठ)

ठठेरन ठठेरन बदलाई नहीं होत ।

ठठेरे यानी वर्तन वनाने वाले। इनमे आपस म बतनो की अदला बन्ली नहा होती। ये खुद खरीदने वालो से अन्ला बन्ली करते हैं। अर्थात पुराने टूटे वतन कुछ और पैसे लेकर वे नय बर्तनो से बदल देते हैं। व व्यापारी हैं। आपस मे इस प्रकार अदला बदली का व्यापार नही चलता क्योकि वे एक दूसरे की चालाकी जानते हैं। इसी प्रकार की एक और कहावत है—नमक नमक से नही खाया जाता। अर्थात आपसदारी की जगह बेईमानी या चालाकी नही चलती। और कोशिश भी नही करनी चाहिए। २६१।

ठाढ़ि ठाढ़िन रहे बठि गोहराव लागि ।

जो खडे इन्तजार कर रहे थ और राह देखते-देखत थक गय थे वे वेचार तो खडे ही रहे परन्तु जो आराम से बैठे थे वे चिल्लाने लगे जिनका कोई विशष कष्ट नही था। जिनका चिल्लाना अधिक स्वाभाविक था वे तो चिल्लाय नही, जिनका चिल्लाना अनुचित था व शारगुल मचाने लगे। प्रतीक्षा या परिश्रम क आधार पर जिस व्यक्ति का जिस चीज पर अधिक अधिकार होता है वह जब उसे न मिल कर अनाधिकारी या कम अधिकारी व्यक्ति को मिलती है तो उपयुक्त कहावत का प्रयोग होता है—या जब अनाधिकारी व्यक्ति किसी चीज के लिए दूसरो के अधिकारो पर ध्यान दिये बिना अपना अधिकार जताने लगता है। २६२।

ठाढ़ी खेती गाभिन गाय।
तब जानौं जब मुह तरे जाय ॥

नीति का दोहा है। खेत मे खडी फसल और गाभिन गाय का तभी उपयाग सिद्ध हाता है जब अन्न और दूध खाने का मिलता है। अंग्रेजी म एक कहावत है There are many slips betwen cup and lipse खेत से अनाज जब तक घर नही आ जाता तब तक अनेक बाधाएँ रहती हैं और खेत से अनाज घर तक पहुचने तक के समय म वह नष्ट भी हो सकता है। उसी प्रकार गाय जब तक सकुशल बच्चा नही दे देती तब तक बहुत-सी ऐसी बातें हो सकती हैं जो दूध के मिलने म बाधक हा सकती है। २६३।

(ड)

डुग डुग बाजे बहुत नीक लाग।
नौआ नेगु माग तौ उठा बैठी लाग ।।

यह एक सीधा प्रहार है जो प्रजाजन प्राय नेग मागने के समय अपने किसान या मालिक पर कर देते हैं। इसमे व्यग्य भी कठोर है। जब बाजे बजते हैं, काम काज होता है तब बहुत अच्छा लगता है, परन्तु जब नाई या अय प्रजाजन अपना नेग माँगते हैं तो बडी तकलीफ होती है। आज कल शहरा म तो यह नेग वाली बात बहुत कम हो गयी है, परन्तु गाँवा मे अभी भी वही ढग चला आ रहा है। इन प्रजाजना के नेग बढ गय हैं और काम घट गये हैं। अथ यह है कि मनोरजन की कीमत चुकाने पर बडी तकलीफ महसूस होती है लेकिन मनोरजन बहुत सुखदायक लगता है। इसम यही व्यग्य है। २६४।

डूडो गाय सदा कलोरि।

जिस गाय के सीग नही होते वह हमेशा जवान मालूम देती है। उसी प्रकार छोटी काठी या कद क लोग भी जल्दी बुड्ढे नही दिखाई देते। डूडी गाय शब्द उस औरत के लिए भी प्रतीक रूप मे प्रयुक्त हुआ है जो अकेली है और बाल बच्चा तथा घर गृहस्थी की जिम्मेदारियो से मुक्त है। वह हमेशा युवा ही दिखाई देगी। २६५।

डोल हयवा तौ बोल मितवा।

कुछ पाने पर ही मित्र बोलता है। मित्र के स्वार्थीपन पर काफी कहावतें हैं। वह मित्र कैसा यदि कुछ पाने पर ही मित्र का साथ दे? मित्र तो वही असली है जो अपने मित्र के लिए सवस्व का निछावर कर सके। यहा इन कहावता म उन्ही स्वार्थियो का उल्लेख है जो अपनी सुविधा के लिए मैत्री करते हैं। मित्र से कुछ पाने पर ही वे उसका काम करते हैं। २६६।

डौल चियडन क नहीं हवस कनातन क।

स्थिति अच्छी न हो परन्तु महत्वाकाक्षाए बडी-बडी हो। पहनने के लिए फटे कपडे न हों और यदि वह व्यक्ति कनातें बँधवाने की इच्छा करता है तो अपने को हास्यास्पद बना लेता है। मनुष्य को अपनी सामथ्य का ज्ञान होना

चाहिए और तदनुसार उसे अपन जीवन की व्यवस्था बनानी चाहिए। ऐसा न करने से वह दु ख पाता है और लोग उस पर हसते हैं। २६७।

(त)

तपा जेठ माँ जो चुइ जाय।
सबै नखत हलुके परि जायँ॥

ज्येष्ठ मास म यदि थोडी भी वर्षा हो गयी तो वर्षा के सभी नक्षत्र अपन प्रभाव मे कम पड जाते हैं अर्थात् वर्षा कम होती है। ज्येष्ठ मास के तपने पर ही वर्षा का योग अच्छा बैठता है। २६८।

तपै मिगसिरा जोय।
तौ बरखा पूरन होय॥

मृगसिरा नक्षत्र के तपने से ही अच्छी वर्षा होती है। यह नक्षत्र ज्येष्ठ मास म होता है। अस्तु इस उक्ति मे भी वही बात दोहरायी गयी है। २६९।

तप मिगसिरा बिलख चारि।
बन बालक औ भसि उखारि॥

मगसिरा नक्षत्र मे जब बहुत तपन होती है तो जगल बालक भस और ईख को बहुत तकलीफ होती है। जगल सूख जाते हैं, बच्चो का स्वास्थ्य खराब होने लगता है, भस का दूध सूख जाता है। गर्मी म भस को बहुत तकलीफ होती है, और ईख सूखने लगती है। मगसिरा नक्षत्र मे गर्मी बहुत अधिक होती है क्योंकि इस समय सूय सीधा कक रेखा पर होता है जिसका प्रभाव उत्तर प्रदेश पर अधिक होता है। २७०।

तिरिया चरित्तर जान न कोई।
खसम मारि कै सत्ती होई॥

स्त्री के चरित्र को कोई नही समझ सकता। ऐसी स्त्रिया भी हो सकती हैं जो पहले अपने पति को मार डाले, और फिर अपने मृत पति के साथ सती हो जाये। अपने सती पने को दिखाने के लिए अपने पति को मार डाला और खुद मर गयी। एक असभव घटना है, परन्तु स्त्री चरित्र इतना गूढ और विलक्षण है

कि यह भी समव हा सकता है। स्त्रिया एक दूसरे के आचरणो की निंदा करते समय अपने का उस वग से पृथक मान लेती हैं। निंदक अपने को कदाचित अपवाद मान लेता है। उसके सिवाय सब बुरे हैं। पुरुष तो प्राय ही स्त्रियो पर इस प्रकार के व्यग्य बाण चलाते ही रहते हैं। २७१।

तीतुर बरनी बादरी, बिधवा पान चबाय।
उई पानी लै आव, ई पानी लै जाय॥

तीतुर के वण के बादल हो तो समझना चाहिए पानी बरसेगा और यदि विधवा पान खाये तो समझना चाहिए कि पानी जायेगा—(प्रतिष्ठा की हानि होगी)। यह नीति सम्बन्धी दोहा है। ग्रामीण समाज मे कभी-कभी ऐसे लटके सुनने को मिल जाते हैं। बहुत सी विधवाएँ आदत के कारण पान खाती हैं, और मरण पर्यन्त खाती रहती हैं, परन्तु उनके चरित्र मे कोई दोष नही आता। पान जब होठ रचाने के लिए खाया जाता है तब तो उसका सम्बन्ध शृगार से होता है अन्यथा पान खाना कोई बुरी बात नही है। तात्पय यह है कि विधवा को शौक और साज शृगार की चीजो से दूर रहना चाहिए। न रहने पर चरित्र भ्रष्ट हो सकता है। २७२।

तीनि कनौजिया तेरह चूल्ह।

अनेक प्रकार स यह कहावत कही जाती है। कोइ दस कनवजिया ग्यारह चूल्ह भी कहते हैं। इस दूसरे प्रकार से कहने म अधिक सार्थकता प्रतीत होती है। कान्यकुब्ज ब्राह्मण अपना अपना भोजन अलग बनाते हैं और छुआछूत का इतना विचार करते हैं कि एक दूसरे के चूल्हे से आग भी नही लेते। अत एक चूल्हा अलग रखते हैं जिसमे भोजन नही पकाते। यदि दस कनवजिया ब्राह्मण हुए तो प्रत्येक का अपना अपना चूल्हा अलग होगा और एक चूल्हा बिलकुल अलग होगा। इस प्रकार दस कनवजियो के बीच मे ग्यारह चूल्हे होंगे। परन्तु कुछ लोग कदाचित् अनुप्रास प्रियता के कारण या बात को और भी बढ़ाकर कहने के लिए तीन और तेरह सख्याओ का प्रयोग करने लगे हैं। २७३।

तुम्हरी महतारी खरी खायँ।
मोहिका देखे जरी जायँ॥

एसा मालूम देता है कि तुम्हारी माँ अनाज नही खाती—जानवरो को दी जाने वाली खरी खाती हैं। यदि ऐसा न होता तो मुझे देख कर क्या जलतीं?

मैं भी तो आखिर उसी अन्न की रोटियाँ खाती हूँ जिसकी तुम्हारी माँ खाती है। परन्तु मेरे प्रति उनकी ईर्ष्या से मालूम होता है कि वह रोटियाँ नहीं खरी खाती हैं। तभी तो उनको मेरी रोटियाँ खाना खराब लगता है। स्त्रियों में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष का भाव बहुत रहता है और प्रायः अकारण। इसी अकारण द्वेष भाव पर इस कहावत में व्यंग्य कसा गया है। मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि व्यक्ति हीनावस्था के कारण अधिक ईर्ष्यालु हो जाता है। २७४।

तुरक होय तो बेहना।

अपना धर्म छोड़े और मुसलमान बने तो अच्छा मुसलमान बने। अपना धर्म भी छोड़े और जिस धर्म को स्वीकार करे उसमें भी सम्मान न पावे। अपना धर्म आखिर किसी लाभ के लिए ही व्यक्ति छोड़ता है। प्रायः शूद्र मुसलमान या ईसाई इस ख्याल से बने कि मुसलमान या ईसाई बनने से उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी, परन्तु यदि धर्म बदलने पर भी सामाजिक मर्यादा में उत्थान न हुआ तो धर्म बदलना बेकार हुआ। अतः बेहना के सामाजिक स्तर के लिए अपना धर्म छोड़ना मूर्खता है। २७५।

तुलसी बिरवा बाग माँ सींचे तो कुम्हिलाय।
रहै भरोसे राम के पर्वत पर हरियाय॥

तुलसी दास जी का दोहा है जिसमें भाग्यवादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन हुआ है। बाग में सिंचाई के बावजूद वृक्ष सूख जाते हैं और राम की कृपा से पर्वत पर भी बिना सिंचाई के भी हरेभरे बने रहते हैं। इसी दृष्टान्त को मानव जीवन पर घटित कर दीजिये तो यह अर्थ निकलेगा कि कभी प्रयत्न करके भी मनुष्य असफल हो जाता है और राम कृपा से बिना प्रयत्न के भी काम बन जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जीवन में प्रायः ऐसा भी होता है। तुलसीदास राम भक्त थे और उनको राम का भरोसा उनके लिए सब कुछ था। २७६।

तेल देखौ तेल क धार देखौ।

प्रतीक्षा करके देखो कि तेल की धार किधर जाती है। अभी इतनी जल्दी कुछ कह सकना सम्भव नहीं। तात्पर्य यह है कि बिना अच्छी तरह निरीक्षण किये कोई निर्णय नहीं करना चाहिए। हर फैसले के पहले अच्छी तरह समझबूझ लेना चाहिए। कैसा तेल है और उसकी धार कैसी है—इसके देखने के बाद ही फैसला करना चाहिए। उतावलेपन में आकर लोग पहले से ही गलत अनुमान करने

लगते हैं। यदि जमीन पर तेल गिरेगा तो किसी न किसी दिशा में बहेगा, जब बहेगा तो धार का पता लग जायेगा। २७७।

तेली का तेलु जले मसालची के गाडि (पेटु) जर।

मसाल जलती है तो तेल के सहारे। और तेल तेली का होता है मसालची का तो होता नहीं। फिर भी मसालची अधिक तेल न जले इसकी बड़ी चिन्ता करता है। (शायद तेल अपने उपयोग में लाने के लिए बचाने की दृष्टि से) परन्तु मसालची का ऐसा करना किसी को अच्छा नहीं लगता। उन्हें अंधेरा में चलना पड़ता है। इसीलिए काफी तलाशी के साथ कहावत कही गयी है। उसीसे यह कहावत बनी है, जब कोई व्यक्ति अपना न खर्च करने पर भी कंजूसी करता है और अधिक खर्च की शिकायत करता है, तब लोगों को उसकी यह शिकायत सारी पसन्द नहीं आती। २७८।

(थ)

(अब तो सहो न जाति है–)
थरिया पर क भूख।

भोजन के लिए पाटा पर बैठ जाने पर प्रतीक्षा करना अच्छा नहीं लगता। भोजन के लिए तैयार होकर बैठ जाने पर भी जब भोजन न मिले तो धैर्य छूटने लगता है। इसीलिए कहा गया है कि थाली आ जाने पर भी यदि भोजन न मिले तो खराब लगता है। अनेक स्थितियों में प्रतीक्षा करना बहुत कष्टदायक हो जाता है तब इस कहावत का प्रयोग होता है। २७९।

थारी के भाटा।

ढुलमुल नीति वाले व्यक्ति के लिए कहा जाता है। थाली जिस ओर झुक गयी उसी ओर उसमें रखा भाँटा लुढ़क जाता है। यह कहावत अवसरवादी व्यक्ति के लिए भी प्रयुक्त होती है। परन्तु उस व्यक्ति पर अधिक लागू होती है जिसकी अपनी कोई निश्चित नीति नहीं होती। भाँटा-बैगन गोल होता है और वह अस्थिर स्थितियों में नहीं रह सकता। २८०।

थारी गिरी आकार भै-फूट चहै न फूट।

थाली गिरी तो आवाज हुई। गुरों वाला न समझा थाला फूट गयी, भले ही वह न फूटी हो। कोई बुरा काम न भी किया हो परन्तु यदि बदनामी हो गयी तो काम का होना न होना मतलब नहीं रखता। इसलिए कहावत बनी है कि बद अच्छा बदनाम बुरा। वही चोर जो पकड़ा जाय। २८१।

थूक माँ सतुवा सानब।

असमव काम करने की असफल चेष्टा करना। सत्तू सानने में पानी की जरूरत होती है परन्तु यदि कोई व्यक्ति अपनी चतुराई दिखाने के लिए थूक से ही सानने की कोशिश करने लगे तो लोग उसके इस प्रयत्न पर हँसेंगे। वस्तुतः इस कहावत का प्रयोग कंजूस व्यक्ति के लिए किया जाता है। पानी से अधिक आसानी से सुलभ होने वाली सस्ती चीज और क्या हो सकती है पर यदि कोई व्यक्ति पानी बचाने के उद्देश्य से थूक में सत्तू सानने की कोशिश करे तो उसके समान कंजूस और कौन होगा? २८२।

थोर खाय औ बहुत डकार।

दिखावा करना। थोड़ा खाने पर या भूखे रह जाने पर डकार नहीं आती। डकार छक कर खाने के बाद आती है। इसलिए बारबार डकार लेकर वह दिखाना चाहता है कि उसने बहुत खाया है। अपनी असमर्थता या गरीबी छिपाने के लिए जब मनुष्य इस प्रकार का कोई प्रयत्न करता है तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक मर्यादा का लोगों को इतना ख्याल रहता है कि गरीब होने पर भी वे अमीरों का प्रदर्शन करते हैं। असलियत कभी छिपती नहीं। फिर भी मानवस्वभाव विलक्षण होता है और वह ऐसा ही प्रयत्न करता रहता है। प्रदर्शन मूल पर व्यंग्य है। २८३।

(द)

दुइयू भुइँ भरि देखात है।

घमण्डी या अभिमानी व्यक्ति को आसमान भी छोटा दिखाई देता है। मुनगा पर बहुत ही छोटा उड़ने वाला कीड़ा होता है। अपनी महत्ता के अभिमान में मनुष्य किसी को कुछ नहीं समझता तब उसका उपहास करने के लिए यह कहावत कही जाती है। २८४।

दमडी क घोडी नौ टका बिदाई ।

असली चीज में उतना खच न हो जितना उसकी औपचारिकता म, या सिंगार म हो जाये । दमडी तो अब होती भी नही परन्तु मध्यकाल का यह सबसे छोटा सिक्का है । एक दमडी की घोडी और नौ टका बिदाई म खच करने पडे । आजकल सिलाई कपडे की कीमत से अधिक हो गयी है । ऐसी स्थिति मे इस कहावत का प्रयोग किया जा सकता है । २८५ ।

दमडी क हडिया गै ।
जाति तो पहिचान गै ।।

कुत्ते के चाटने से हडिया जूठी हो गयी परन्तु यह तो मालूम हो गया कि कुत्ता चोर है । जब आदमी कुछ खाकर कोई उपयोगी अनुभव प्राप्त करता है तब इस कहावत का उपयोग करता है । दोस्त सच्चा है या मक्कार इसका पता लगाने के लिए कुछ खाना ही पडेगा । २८६ ।

दाई ते पेटु नहीं छिपत ।

किसी विशेषज्ञ या जानकार व्यक्ति से उसी के विषय की बात का छिपाना असमव है । दाई बच्चे पैदा कराने के काम मे निष्णात होती है । उनसे कोई औरत यह नही छिपा सकती कि वह गर्भवती है या नही । प्राय जानकार कुशल अनुभवी व्यक्ति किसी बात के जान जाने पर अभिमान से इसी कहावत का प्रयोग करते हैं । २८७ ।

दाता ते सूम्यू भला जो तुरत देय जवाबु ।

आजकल दान करने वाले दानी से तो सूम (कंजूस) ही अच्छा है, कम से कम वह तुरन्त जवाब तो दे देता है । अटकाय तो नही रखता । दूसरो पर अपनी कृपा बनाये रखने वाले लोग सीधा जवाब नही देते, उससे उनकी कृपालुता म अन्तर पडता है परन्तु असली कृपा करते भी नही । ऐसे व्यक्ति से वह अच्छा है जो कृपा नही करता । कम से कम झूठे वायदे तो नही करता । २८८ ।

दाता देय औ भण्डारी का पेटु पिराय ।

दानी देने का हुक्म दे देता है परन्तु भण्डारी को निकाल कर देने म तकलीफ होती है । जिसका माल है उसे अपनी चीज दे डालने मे कोई तकलीफ नहीं है,

परन्तु उसे तकलीफ होती है जो उसका केवल रखवाला या प्रबधक है—मालिक नहीं। २८९।

दाना न घासु खरहरा छ छ दई।

घोडे को पालने पर उसे चारा देना पडता है और उसे साफ रखने के लिए खरहरा करना पडता है। परन्तु जो मालिक घोडे को खाना तो न देता हो पर तु खरहरा बार बार करता हो वह केवल दिखावा करता है कि वह अपने घोडे का कितना ख्याल रखता है। असली चीज जिसके बिना जीवन असभव है उसका तो प्रबध न करना और ऊपरी चीज जिसके बिना काम चल सकता है, उस पर अधिक ध्यान देना—इस कहावत को चरितार्थ करता है। बहुत शौक करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष है। २९०।

दालि भातु मा मूसरचन्द।

सुख शान्तिमय एव अनुकूल स्थिति म किसी बाधा का अचानक उपस्थित हो जाना। दो चार दोस्त आराम से बैठे बातचीत कर रहे हो। ऐसी स्थिति मे अचानक किसी आगन्तुक का आ जाना दाल भात म मूसरचन्द की भाँति है। अनुकूलता मे किसी प्रकार की प्रतिकूलता का उत्पन्न हो जाना इस कहावत को चरिताथ करता है। २९१।

दिनु गा आर बारे।
जुआ हेर दिया बारे॥

उपयोगी समय नष्ट करने वाले लोग जब गलत समय मे कोई काम करने की कोशिश करते हैं तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। दिन तो इधर उधर म बिता दिया जब आसानी से जू ढूढ़े जा सकते थे और जब रात म दीपक की रोशनी म जू ढूढन बैठी हैं। इस प्रकार अनुपयुक्त समय पर काम करने वाले पर इस कहावत से कटाक्ष किया जाता है। यह कहावत भी प्राय स्त्रियो म प्रयुक्त होती है। २९२।

दिन का बादर राति तरया।
न जानौं प्रभु काह करया॥

दिन म बादल छाये रहते हो और रात म आकाश साफ हो जाता हो तो सर्दी के मौसम म पाला गिरता है जिससे फसल नष्ट हो जाती है। इसीलिए

इस कहावत म कहा गया है कि यदि एसा मौसम रहे ता पता नही भगवान क्या मुसीबत पैदा करन वाला है। बादला से पाला रुक जाता है। सर्दी भी कम रहती है। परन्तु बादला के बाद रात म आसमान खुल जान का मतलब यह होता है कि सर्दी की रोक थाम नही हो सकती और रात म पाला गिरता है। बरसात म भी ऐसा हालत म वर्षा नही होती। २८३।

दिन मां गरमी रात मा ओस।
कहैं घाघ बरसा सौ कोस॥

दिन म गर्मी रहती हो और रात मे ओस गिरती हो तो समझना चाहिए कि अभी वर्षा आन म बहुत दिन है। य वर्षा के विरुद्ध लक्षण ह जिन्ह देख कर कहा जा सकता है कि अभी वर्षा नही होगा। २८४।

दिया तरे अधेर।

दीपक के तल अधेरा हाता है। जो दूसरा को प्रकाश देता है उसी के नीचे अधेरा हाता है। दूसरो का देने वाला त्याग करता है। अगर त्याग न करे खुद ही अपन लिए रख ले तो दूसरो को क्या देगा ? परोपकारी मनुष्य अपने हित का चिन्ता नही करते जिस प्रकार दीपक अपने लिए प्रकाश की चिन्ता नहीं करता। परन्तु आजकल के बिजली क लैम्पा के नीचे तो प्रकाश हो जाता है (शेड के कारण) ऊपर नही हाता। विपरीत तर्क करके आजकल परोपकारी वृत्ति क अभाव की बात कही जा सकती है। २८५।

दीन न खायें बिनि बिनि खाय।

किसी का दिया हुआ खाने म उसका एहसानमन्द होना पडता है और वह यह भी जानता है कि इसने कितना खाया। इसलिए चालाक आदमी किसी का दिया नही खाते, परन्तु उसी को चुपचाप से उठाकर खा लेंगे। इस प्रकार वह दोना बाता से बच जाता है, परन्तु वह इस ओर ध्यान नही देता कि इस प्रकार वह चोर बन गया है। इस कहावत म ऐसे व्यक्ति को व्यग्य रूप से चोर कहा गया है। संयुक्त परिवार म ऐसी घटनाएँ प्राय हाना रहती हैं। परिवार म हर व्यक्ति बडा होशियारी से काम करता है और दिन रात घर म ही राजनीतिक दाँव पच चलते रहत हैं। २८६।

दुआर टटिया नहीं—नाम धनपति।

नामानुसार गुणा के न हाने पर शिकायत की गया है। उधारे का नाम सो -

धनपति या लखपत है परन्तु दरवाजे पर *टटिया भी नही है। यानी फूस या* अरहर की टटिया जिससे दरवाजा बन्द किया जाता है। धनपत नाम होने पर भी इतनी गरीबी है। इसमे बेचारे नाम का क्या दोष ? लेकिन ऐसे गरीब व्यक्ति का धनपत नाम विडम्बनापूर्ण है, क्योकि लोग हँसते हैं। २९७।

दुइ हर खेती एकु हर बारी।
बूढे बैल ते भलो कुदारी॥

जिसके दो हलो की खेती होती हो अर्थात् लगभग २५ एकड जमीन पर खेती होती हो, उसे तो खेती कहना उचित है, परन्तु एक हल की खेती तो फुलवारी या तरकारियो की बाड़ी है। उसे खेती कहना उचित न होगा। और बूढे बैल से अच्छी कुदाली है। खेती के लिए बूढे बैल की कोई उपयोगिता नही है। उससे अधिक तो एक आदमी कुदाली से काम कर सकता है। २९८।

दुधाँडी के तरे साँप रेंगाउब।

सकेत से याद दिलाना। दूध पीने की इच्छा है और सीधे माँगने मे सकोच होता है *तो कह दिया दुधाँडी के पास साँप जा रहा है। दूध की याद आने* पर घर की पुरखिन दूध पिला देगा। अत जब सीधे माँगने मे सकोच अनुभव होता हो और सकेत मे वही बात कही जाये तो इस कहावत का प्रयोग होता है। अरे सीधे कहो—दुधाडी के नीचे साँप क्या रेंगाते हो ? २९९।

दुधारू गाई क लातौ सही जाति है।

जिससे लाभ होता है उसकी चोट भी बर्दाश्त करना पडती है। दूध देने वाली गाय की लातें भी सहनी पडती हैं। दूध दुहते समय अक्सर कुछ गायें लात मार देती हैं। परन्तु अपने स्वार्थ के लिए उसकी लातें भी बर्दाश्त करनी पडती है।३००।

दुबल का दइयू घातक।

कमजोर को ईश्वर भी तकलीफ देता है। जिससे सन्देश प्राप्त होता है कि सबल एव सक्षम बनने का यत्न करो। Survival of the fittest वाली बात ही इन शब्दो मे प्रकारान्तर से प्रकट हुई है। प्रकृति का सामान्य नियम है कि जो अशक्त हो उसको नष्ट हो जाने दिया जाये। *और यहीं से मानवता अथवा* इन्सानियत शुरू होती है। जो सबल है सक्षम है वह तो अपना मार्ग प्रशस्त कर

हा लेगा, परन्तु जा निबल है, दुबल है, उसकी हम सहायता करनी चाहिए। परन्तु साधारणत इस स्वार्थमय ससार म ऐसा हाता नही इसीलिए कहावत की सार्थकता है। ३०१।

दुविधा माँ दूनौ गइ माया मिली न राम।

अनिश्चय के कारण प्राय दुगुना नुकसान हा जाता है। जो चाहते थे वह तो नही ही मिलता और जा पास म था वह भी चला जाता है। इस मायापूर्ण ससार म तो हमने जन्म ही लिया है अत यह ता हमारा स्वाभाविक प्राप्य है ही परन्तु कभी दार्शनिक एव धार्मिक वृत्तियो के प्रभाव स्वरूप हम इस प्राप्य की उपेक्षा करने लगते हैं परन्तु दार्शनिक एव धार्मिक दृष्टि अभी निश्चित नही हुई है। परिणाम यह होता है कि भगवान ता नही ही मिलता, यह ससार भी छूट जाता है। अर्थात् ससार का भी हम समुचित उपभोग नही कर पाते। उर्दू म भी एक ऐसी ही कहावत है 'खुदा ही मिला न विसाले सनम।' ३०२।

दुसरे का कुआ खोदै अपने गिरै।

दूसरे के अहित चिन्तन म प्राय अपना ही अहित हो जाता है। इसलिए कुआ खोदा कि दुश्मन आकर गिर जाय और मर जाय। वह तो न आया पर एक रात खुद उस कुए म गिर गया। सामान्य सत्य की अपेक्षा इस कहावत म सामाजिक नैतिकता की दृष्टि म लोगो को समझाने या डराने की कोशिश की गयी है। जब हमारा समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र म इतना सगठित था कि एक का अहित दूसरे के हितो पर बुरा प्रभाव डालता था तब ता यह कहावत बहुत सही थी। ३०३।

दुसरे का सगुन बताव।
अपना कुकुरन चिथाव॥

'दीगरा नसीहत खुदरा फजीहत' वाली फारसी कहावत इसी सन्दर्भ म प्रयुक्त होती है। यहा सगुन बताने की बात है जो कोई पडित या ज्योतिषी हो करता है। अर्थात् वह पडित या नजूमी दूसरा को तो बतलाता है कि किस शुभ घडी म कार्यारम्भ किया जाये जिससे सफलता प्राप्त हो, परन्तु वह स्वय अपनी दरिद्रता दूर नही कर पाता। जीवन म क्षण क्षण वह असफलता ही प्राप्त करता है। यात्रा के समय अक्सर सगुन विचार किया जाता है जिससे यात्रा निरापद हो परन्तु जब पडित जी कही जाते हैं तो उन्हे माग मे कुत्ते काट लेते हैं। अर्थात जब कोई

व्यक्ति दूसरे को राह बताता है बडा बनी सलाहें देता है,परन्तु स्वय उनका पालन नही करता तब इसका प्रयाग किया जाता है। ३०४।

दुसरे का लोखरेऊ सगुन बताव ।
अपना कुकुरन तो नोचावै ॥

उपर्युक्त कहावत के समान ही है। इसमें व्यग का आधान लोखरेऊ (लोमडी) शब्द के प्रयोग से बन गया है। सगुन बतान वाल का लोमडी कहा गया है। अथात् लोमडी खुद इतनी हाशियार हाती है कि सबको राह बताए ता वह स्वय अपना मार्ग क्या नही निराकृत बना लती है? अर्थात् ऐसे सलाह देने वाल चालाक और मक्कार लागा की सलाह नही माननी चाहिए। ३०५।

दुष्ट सघ जनि देहु बिधाता।
यहि ते भला नरक का बासा॥

तुलसी दास जी ने इस चौपाई म जीवन का एक कटु सत्य प्रस्तुत किया है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन म इस प्रकार की स्थितियाँ उत्पन्न हा जाती हैं जिनका कारण वह स्वय नही, बल्कि उसका दुष्ट पडोसी या साथी हैं, परन्तु उसका भोग उस भी भोगना पडता है। मनुष्य केवल अपने ही कर्मों का भोग नही भोगता बल्कि सारे समाज के अच्छे बुरे कर्मो का भोग भोगता है। ऐसी स्थिति म दुष्ट सगति म दुख उठाना अनिवाय सा है। देखा गया है कि दुष्ट व्यक्ति के पडोस स साधु व्यक्ति को भी हमेशा कष्ट सहन पडते हैं और न सहन करते पर उस और भी अधिक कष्ट उठान पडते है। अत दुष्ट व्यक्ति का सग या पडोस नरकवास में भी बुरा हे। ३०६।

दूध का जरा माठो फूकि फूकि पियत है।

एक बार नुकसान उठाने पर व्यक्ति सतर्क हो जाता है और दुबारा वैसी ही स्थिति आन पर बडी सावधानी स काय करता है। मट्ठे और दूध म वर्ण साम्य स भ्रम हाना स्वाभाविक है। एक बार भूल स गम दूध पीकर मह जलने क अनुभव के बाद जब वह मट्ठा पीता है ता उसे भी फूक फूक कर पाता है। जीवन के कडुए अनुभवा क पश्चात जब व्यक्ति अतिरिक्त सावधानी स काम करता है ता इस कहावत का प्रयाग हाता है। मट्ठे को फूक फूँक कर पीना मूखता है परन्तु कही कही अतिरिक्त सावधानी बरतना भी मूखता है। कुछ भी हो मनुष्य अपन जीवन के अनुभवा और पीडाओ का नहा भूल सकता। ३०७।

दूधा नहाओ पूता फलो।

सफल और सम्पन्न होने के लिए आशीर्वचन है। हमारे गाँव म प्रत्येक स्त्री अपने बडो के पैर छूती है और बडे प्राय इसी प्रकार का आशीष देते हैं। विशेष रूप से नई आयी बहुआ को तो सभी से यही आशीर्वाद मिलता है। जीवन म सतति और सम्पत्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दूध म नहाना प्रतीक है, सम्पन्नता का। जिसके घर जितना ही अधिक दूध होता है वह उतना ही अधिक सम्पन्न व्यक्ति है और जिसके जितने ही अधिक बलिष्ठ पुत्र हैं वह उतना ही सफल परिवार है। कृषि प्रधान भारतीय सस्कृति का इस कहावत से पता चलता है। जीवन के मान दण्ड क्या हैं इनका रूप इस आशीर्वचन म व्यक्त होते हैं। राम नरेश त्रिपाठी "दूधन नहाओ" का शाब्दिक अर्थ करते हुए कहते हैं कि दूध म नहाने से बध्यापन यदि हो भी तो दूर हो जाता है, और स्त्री पुत्रवती होती है। यह अर्थ सदिग्ध है। ३०८।

दूर के बोल (ढोल) सोहावन।

प्रेमचन्द ने भी किसी उपन्यास म कहा है कि दूर के सुन्दर दृश्य निकट आकर अनाकर्षक हो जाते हैं। अग्रेजी म भी एक उक्ति है "Distance enchants the view" यह ठीक है। मनुष्य को अप्राप्य सबसे अधिक आकर्षक और मनोरम लगता है। उसी के प्राप्त हो जाने पर उसके प्रति उदासीनता का भाव आ जाता है। इसी प्रकार किसी सुन्दर बोल के प्रति उसके मन म तीव्र आकर्षण उत्पन्न होता है, परन्तु उसके निकट आ जाने पर उसका आकर्षण मिट जाता है। जब तक घर म रेडियो नहीं होता रेडियो के प्रति मन दीवाना सा रहता है, आ जाने पर फिर उसे प्रयोग म लाने का भी मन नहीं होता। और वस्तुत यह यथार्थ भी है कि दूर से दिखाई देने वाला दृश्य अधिक पूर्ण दिखाई देता है निकट आने पर उसका केवल एक पार्श्वमात्र दिखता है। ३०९।

दूरि बस तौ गगा पार।

इसका अनुभव तो मुझे एक बार पूस की रात म हुआ। मैं फतेहपुर से असनी घाट उतर कर गेगासा जा रहा था। असनी पहुँचते पहुँचते रात हो गयी। मल्लाहो से बडी प्रार्थना विनती की पर रात हो जाने से उन्होने पार नहीं उतारा। वहीं पर सर्दी की रात बिना आग बिछावन के काटनी पडी। रात भर घर आँगन के सामने दिखाई देता रहा पर पहुँचना असम्भव था। इस घटना के पूर्व इस उक्ति म मुझे अधिक सार नहीं दिखाई देता था। परन्तु सारी रात यदि

कोई सत्य अपन नग्नतम एव प्रखरतम रूप म था तो यह कि 'दूरि बसै ता गगा नार !' अर्थात किसी नदी का अ तराल अनक बाधाए और अलाघ्य दूरी की स्थिति उत्पन्न कर देता है । ३१० ।

देविन चढी सोहारी ।
कूकर खाय चाहै बिलारी ॥

सोहारी का अर्थ है पूरा—छोटी छोटी पूरियाँ । एक बार देवी पर अर्पित हो जान पर चढ़ान वाले के लिए इन पूरिया का महत्व समाप्त हो गया । वह उन्हे वापिस नहीं ल सकता । अब इन पूरिया को चाहे कुत्ते खायें चाहे बिल्लियाँ । उसन तो उन्ह देवी पर अर्पित किया है । उस विश्वास है कि वे पूरियाँ देवी को मिल गयी हैं । उसकी भावना के अनुसार उसका कर्त्तव्य पूरा हो गया है । अब उनका क्या उपयोग होता है इसस उस सरोकार नही । शायद यह उक्ति किसी शकालु के प्रश्न के उत्तर म कही गयी है । उसन कहा होगा कि तुम्हारे चढाने से क्या फायदा—यहाँ तो पूरिया का भोग कुत्ते बिल्ली करेंगे । अपना कर्तव्य पूरा करके भी प्राय लोग ऐसा कहते हैं—कुछ भी हो हमने जो बन सका कर दिया । ३११ ।

देवारी के खाये पडवा न मोटाई ।

दिवाली ऐसा त्योहार है जिस दिन अनेक प्रकार की भोजन सामग्री बनती है, और गरीब होन पर भी लोग उधार लकर त्योहार मनाते हैं और खूब खाते पीते हैं और खुशिया मनाते हैं । पर तु कोई यथार्थ वादी व्यक्ति टोक देता है । साल भर उपवास करना और दिवाली के दिन खूब खाना—इससे कोई लाभ नही है । दिवाली के दिन अच्छा अच्छा और खूब खाने से कोई स्वस्थ नही होगा । स्वस्थ होने के लिए तो नियमित रूप स प्रतिदिन अच्छा भोजन चाहिए । अर्थात किसी एक दिन खूब खाने या काम करने से कोई विशेष लाभ नही होता । ३१२ ।

देखो कुतिया बिलती बोली ।

जब कोई व्यक्ति बनावटी परिष्कार का दिखावा करता है । प्राय लोग दूसरो को प्रभावित करन के लिए कुछ ऐसे काम करते हैं जो उनकी पृष्ठभूमि और स्वभाव के अनुकूल नहीं होते, तो कोई मुहफट आदमी इस कहावत को उसके मुह पर दे मारता है । इस कहावत का प्रयोग करना बडे साहस की बात है,

क्योंकि जिसके लिए इस कहावत का प्रयोग किया गया है वह नाराज हो सकता है। लेकिन प्राय यथाथ स्थिति म प्रयोग के कारण बनावटी आदमी इतना साहस भी नही कर सकता कि उसका जवाब दे। प्राय यह देखा जाता है कि कुछ लोग अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ अग्रेजी के शब्द बीच-बीच म बोलते जाते हैं, जो साधारण व्यक्ति को पसन्द नही आता। वह अपनी नापसन्दगी इस कहावत के माध्यम से व्यक्त करता है। ३१३।

(ध)

धन के तेरह मकर पचीस।
चिल्ला जाडा दिन चालीस॥

लोग खूब सर्दी पडने पर मकर सक्रान्ति के आस-पास यह हमेशा कहते हैं। धनु के तेरह मकर के २५ मिला कर लगभग चालीस (३८) दिन होते हैं जब भयकर सर्दी पडती है क्योंकि इस समय सूय दक्षिणी गोलार्द्ध को निम्नतम स्थिति तक पहुँच जाता है। मेरा ख्याल है कि तेरह की जगह पन्द्रह होना चाहिए। मैंने जैसा सुना वैसा ही रखा है। शायद कुछ लोग सही बोलते हो और 'धन के पन्द्रह' ही कहते हो। इन चालीस दिनो में उत्तर भारत मे अधिक सर्दी होती है। इसी सत्य को इन शब्दो म व्यक्त किया गया है। ३१४।

धन क फिकिर न मन क चोट।
यह धंधूसर काहेक मोट॥

जिस व्यक्ति को धन की चिन्ता न हो और जिसे किसी प्रकार की मानसिक पीडा न हो स्वाभाविक है कि वह व्यक्ति मोटा होगा। निश्चिन्त रहने वाला का प्राय स्वास्थ्य अच्छा होता है। फिर यदि उसके पास इतना धन भी हो कि उस धन की चिन्ता न करनी पडे तो फिर क्या कहने? ऐसा व्यक्ति निश्चिन्त ही मोटा होगा। ३१५।

धर बजार नहीं लगतीं।

इस उक्ति म व्यक्ति स्वातन्त्र्य और जनतन्त्र की गूँज है। जबरदस्ती पकड कर बिठाने से बाजार नही लगती। कई बार मेरे गाँव म साप्ताहिक बाजार लगाने

की कोशिशें की गयी। तमाम व्यापरियों और सौदागरों को बुला कर बिठाया गया, परन्तु विशेष बिक्री न होने की वजह से बनिये दुबारा बाजार में नहीं आये, और इस प्रकार कई बार बाजार लगी और कई बार उजडी। पचायत ने भी कोशिश की परन्तु बाजार नही लगा। अत जबरदस्ती ऐसे काम नहीं होते। ऐसे कामो के लिए पहले से अनुकूल परिस्थितिया बनानी पडती हैं। जहा मर्जी का सवाल हो वहाँ जबरदस्ती नही चलता। क्रय विक्रय के क्षेत्र मे विशेष रूप स स्वतत्रता की आवश्यकता होती है। ३१६।

धान गिरै सुभागे का।
गेहूँ गिर अभागे का॥

यह खेती सबधी कहावत है। धान की बाल भारी होन पर झुक जाती हैं जिससे पता चलता है कि धान की खेती अच्छी है। भाग्यवान व्यक्ति के धान के खेत झुकते हैं। धान का झुकना सौभाग्य का लक्षण है और गेहूँ की लौक गिरा ता समझिय गेहू की खेती चौपट हुई। गेहू का गिरना दुर्भाग्य का सकेत है क्योंकि एसा होने से खेती नष्ट हो जाती है। किसान का जीवनाधार खेती ही है जिसके नष्ट होने से उसका भाग्य अस्त हो जाता है। ३१७।

धान सब ते भले कूटे खाये चले।

इस कहावत के पीछे एक कथा है। एक बार एक ब्राह्मण सत्तू लेकर यात्रा पर निकला। मार्ग म उस एक नाई मिला। ब्राह्मण बुद्धू होता है और नाई बडा चालाक। उसम छत्तीस बुद्धियो का होना माना जाता है। नाई धान लेकर चला था। उसके सामने समस्या थी कि उन्ह कैसे खाये ? उसने ब्राह्मण को समझाया धान सब से भले कूटे खाये चल और सत्तू हु मन भत्तू, कहाँ सानै कहा खाये, मुसाफिरी का मामला पानी मिला न मिला। ब्राह्मण मूर्ख तो था ही। सत्तू सबधी इस शाब्दिक कठिनाई को सुन कर चौंका और उसने नाई के धानो स सत्तू बदल लिय। आशय यह कि किस प्रकार भाषा एव वर्णन शैली किसी चीज *को कम या अधिक महत्व प्रदान करा देती है। जब कोई अपने वर्णन द्वारा किसी* को कम या अधिक बताने की कोशिश करता है तो उस इस कहावत की याद दिलायी जाती है। ३१८।

धिया के चले भडेहरी हालै।
बउहर चलै तो सब घर हालै॥

घर म लडकी के चलने से तो केवल वह कोठरी हा हिलती है जिसमे मिट्टी के बतना मे अनाज वगर रखा जाता है। और जब बहू चलती है तो सारा घर हिलता है। यह कहावत व्यग्य है बहू के फूहडपन पर। लडकी घर मे स्वतत्र होती है उसके चलने फिरने से अगर घर हिलने लगे तो स्वाभाविक है परन्तु यदि बहू से ऐसा हो तो अनुचित है क्योकि उसके उठने-बैठने, चलने फिरने, बोलने चालने मे शालीनता होनी चाहिए। वह का बहू की भाँति रहना चाहिए। बहू मे उदण्डता नही होनी चाहिए। वह लडकी मे हो सकती है। भारतीय बहू से हमारे समाज को अनन्त अपेक्षाए हैं। वह गृहलक्ष्मी है—कुल वधू है, भविष्य की गृहस्वामिनी है। ३१८।

धी ते कहैं बहू करे कान।

कहती लडकी स है पर, सुनती बहू है। लडकी अपने मा बाप के घर स्वतत्र रहती है। अक्सर उसे आजादी भी यह कह कर दी जाती है, कि अरे चार दिन म तो सुसराल चली जायेगी फिर तो आजीवन वही सब करेगी अर्थात बन्धनों मे बँध कर रहेगी। परन्तु माँ को चिन्ता रहती है कि उसकी समधिन उसे उलाहना न दे इसलिए वह उसे हर तरह से सिखाती पढाती रहती है। परन्तु इस कहावत मे कुछ और ही बात कही गयी है। मा कोई राज की बात लडकी को बताना चाहती है परन्तु लडकी अनसुना कर देती है और बहू जिससे वह कुछ कहना नहीं चाहती, बडा उत्सुकता स सुनना चाहती है। इसम सास बहू क सबध की एक झाँकी मिलती है कि दोनो में एक दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना रहती है। कहावत का अथ कि बात किसी से कहा गई हा और सुनता कोइ दूसरा हो। ३२०।

धोबी बसि का कर जो होय दिगम्बर गाँव।

दिगम्बर जैनी नगे रहते हैं। उन्हे कपडो की आवश्यकता नही हाती। ऐसे स्थान मे जहाँ लाग कपडा का उपयोग न करते हा, वहाँ धोबी की क्या आवश्यकता। जहा जिसके रहने स कोई लाभ नही है वहाँ वह क्या रहेगा? अनुपयोगी स्थान म कोई भी नही रहना चाहेगा। जीवन म उपयोगिता का अत्यन्त महत्व है। पर पता नही यह कहावत हमारे क्षेत्र म कैसे प्रचलित हुई क्योकि अवधी क्षत्र मे दिगम्बर जैनियो का नितान्त अभाव है। या तो कहावत कही

अयत्र स आई है या कभी कुछ दिगम्बर जैनी कहीं आस-पास बसे होंगे। या किसी चतुर व्यक्ति ने अपनी चतुराई का कमाल दिखाया होगा। कहावत बड़ी अथवान है। ३२१।

नगा का नहाय का निचोर।

नगा व्यक्ति नगा ही है। उसके पास न तो कुछ पहन कर नहाने के लिए कपडे हैं न पहनने के लिए। अत वह क्या पहन कर नहाये? और जब कोई कपडा है ही नहीं तो गीले होने का भी सवाल नही उठता। अत उसे निचोड़ने की भी चिन्ता नही है। अर्थात् नगे आदमी को किसी प्रकार का चिन्ता नही है। निश्चिन्त आदमी बेशम भी हो जाता है। हमारे यहाँ बेशम, भगडालू आदमी को नगा कहते हैं। उसे सामाजिक मान मर्यादा की कोई चिन्ता नही होती। ऐसे अवसरो पर इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ३२२।

नगा नाचे फाटे का।

लगभग उपयुक्त कहावत की भाँति यह कहावत है। नाचने वाले अनेक प्रकार के कपडे पहनते हैं, जिनके लिए उन्हे खर्च करना पडता है और सावधानी से उन्हें सुरक्षित रखना पडता है। परन्तु नगे व्यक्ति के नाचने म कोई परेशानी नही क्योकि उसे वस्त्रो की आवश्यक्ता ही नही। अर्थात् बेशरम आदमी को अपनी बेशरमी प्रदर्शित करने मे कोई कठिनाई नहीं है, परन्तु प्रतिष्ठित व्यक्ति को नाचने मे काफी प्रयत्न करने पडते हैं। यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे समाज मे नाचना कोई सम्मानपूण काय नही माना जाता। नाचने से सामाजिक मर्यादा घटती है। परन्तु जिसकी कोई सामाजिक मर्यादा है ही नहीं उसका क्या घटेगा? अर्थात नगा तो पहले ही से बेशम आदमी के रूप म विख्यात है। उसके नाचने से उसका कुछ नही बिगडता। कोई बेशरम आदमी जब बेशरमी करने लगता है, तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ३२३।

नगे भला कि टँटे मचवा?

यह एक प्रश्न है जिसमे सकेत छिपा हुआ है कि कमर म नग्नता को छिपाने के लिए, मचवा (पाया) लटकाये घूमने से तो नग्न रहना ही अच्छा है क्योकि उस मचवा से उसकी नग्नता की ओर और भी ध्यान आकृष्ट हो जाता है। अत साकेतिक नग्नता अधिक आकषक और अश्लील होती है अपेक्षाकृत पूण नग्नता के। फिल्म सेंसर के रूप मे इस प्रश्न पर अक्सर गहराई से विचार करना पडता है।

पश्चिमी फिल्मी दुनिया की निगाहा मे भारतीय रोमांटिक दृश्य अधिक अश्लील हैं जब कि उनकी नग्नता अश्लील नहीं है। हमारे रोमांटिक दृश्यों मे छिपाव, दुराव और सांकेतिकता है जबकि उनके दृश्यो म स्पष्टता और नग्नता है। तात्पर्य यह कि कभी-कभी नग्नता को छिपाने के प्रयत्न म हम नग्नता को और भी उद्भासित कर देते है। ३२४।

नई नाउनि गोले क नहन्नी।

हमारे यहाँ 'बाँस की नहन्नी' भी कहते हैं। किसी भी नौसिखुए के सम्बन्ध मे यह व्यग्य किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी नये काम मे अटपटापन महसूस करता है, परन्तु दिखाना यह चाहता है कि वह एकदम दक्ष या निपुण है, इस निपुणता प्रदर्शन म वह और भी अपना अज्ञान प्रदर्शित करता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। बाँस के नहरने से नाखून नहीं कट सकते। ३२५।

नक्कार खाने मे तूती के आवाज।

तूती एक छोटी चिडिया भी होती है परन्तु यहा पर तूती एक प्रकार की छोटी सी पिपिहिरी है। जहाँ नगाडे बज रहे हो वहा उस छोटी सी पिपिहरी को आवाज कैसे सुनी जा सकती है? बडे आदमियों के बीच म जब छोटो की कोई नही सुनता, तो अपनी उपेक्षा की शिकायत इस कहावत के शब्दो म प्रकट होती है। किसी बडी महफिल या सभा म प्राय ऐसा होता है कि कुछ महत्वपूर्ण लोगो के सामने साधारण लोगो की अच्छी बातें भी लोगो का ध्यान नहीं होतीं। ३२६।

न धान बोवै न बदरा क्ता चितव।

पानी की आवश्यकता धान के खेतो मे सबसे अधिक होती है जो किसान धान बोता है उसे बरसात की बडी चिन्ता रहती है। वह बादलों की ओर देख कर अपनी खेती के बारे में चिंतित होता रहता है। परन्तु जिसने धान बोये ही नहीं उसे क्या चिन्ता? वह बादलो की ओर क्या देखेगा। अस्तु, जिस व्यक्ति ने चिन्ता की कोई स्थिति पैदा ही नहीं की वह क्यो भयभीत हो? कुछ लोग इसलिए अपनी निश्चिन्तता प्रकट करते रहते हैं क्योंकि उन्होंने ऐसा कुछ किया ही नहीं है जिससे उन्हें भयभीत होना पडे। ३२७।

न धाय कै चढ़ न रसकि (रपटि) कै गिरै।

जल्दबाजी से अवसर काम बिगड़ जाते हैं और तकलीफ भी उठानी पड़ती है। इसीलिए कहा भी गया है कि जल्द काम शैतान का। जितनी ही गति में त्वरा होगी, उतनी ही अधिक संभावना दुर्घटना की होगी। अतः विवेकी मनुष्य कहता है कि न तेजी से चढ़े और न फिसल कर गिरने का खतरा पैदा हो। सावधानी से काम करना चाहिए। जिससे असफलता और कठिनाइयों से बचा जा सके। इसमें व्यवहार सीख है। ३२८।

न धोबी के औद परोहन न गदहा के औद सिसान।

यह बहुत ही अर्थ पूर्ण कहावत है। प्रायः जीवन में ऐसे संयोग बैठते हैं जिसके अतिरिक्त अन्य संयोग अनुचित या बुरे प्रतीत होते हैं। धोबी और गधे का साथ आदर्श सा है क्योंकि धोबी को गधे से अच्छी सवारी नहीं मिल सकती और गधे को धोबी से अच्छा मालिक भी नहीं मिल सकता। जैसे किसी धनी मूर्ख को कुरूप विदुषी मिल जाये। मूर्ख धनी और कुरूप विदुषी का मेल इस कहावत को चरितार्थ करने वाला है। कुरूप को न तो उस धनी से अच्छा पति मिल सकता था और न उस मूर्ख को उस कुरूपा से अच्छी विदुषी मिल सकती थी। हम इस कहावत का उपयोग तब सकते हैं जब इसी प्रकार का संयोग मिल जाय। इसमें गहरा व्यंग्य है। ३२९।

न नौ मन तेलु होई न राधा नचिहैं।

यह बहुत ही प्रचलित कहावत है। अपनी श्रेष्ठता का ढिंढोरा पीटते रहना, और जब परीक्षा का अवसर आये तो ऐसी शर्त रख देना जो अशक्य हो। ऐसा करने वालों को लोग जान ही जाते हैं और उनकी श्रेष्ठता की पोल खुल ही जाती है। तब लोग स्पष्ट कहते हैं कि न तुम्हारी शर्त पूरी होगी न तुम अपना कमाल दिखाओगे। अर्थात् तुममें वह कमाल है ही नहीं जिसका इतना बखान हो रहा है। ३३०।

ना अति बरखा ना अति धूप।
ना अति बक्ता ना अति चूप॥

यह नीति सबकी अर्द्धाली है। "अति सर्वत्र वर्जयेत" इसे संस्कृत की कहावत में यही भाव है। अति किसी प्रकार की भी अच्छी नहीं होती। अतिवृष्टि अनावृष्टि दोनों से नुकसान है। अधिक बोलना भी अच्छा नहीं है और अधिक चुप रहना भी

ठीक नहीं। समयानुसार आवश्यकतानुसार सभी बातें शोभा देती हैं। उनकी उपयोगिता भी सानुपात और निश्चित सीमा में रहने से ही समझ में आती है। ३३१।

नाऊ की बरात मा सब ठकुर ठाकुर।

जब कहीं एक जैसे ही आदमी मिल जाय तो इस कहावत का प्रयोग व्यंग्य रूप में किया जाता है। नाई को समुचित सम्मान देने के लिए प्राय नाऊ ठाकुर कहते हैं। ठाकुर क्षत्रिय वर्ण के लोगों को कहते हैं। इस प्रकार नाइयों का ठाकुर शब्द से विशेष सम्मान किया गया है। नाइयों की बारात में शामिल नाई ही होंगे और यदि इनका सम्मान सूचक शब्द प्रयुक्त किया गया तो नाइयों की बारात में सब ठाकुर ही ठाकुर होंगे। यह अभिजात्य वर्ग के लोगों का व्यंग्य है नाइयों पर कि वे नाई नहीं ठाकुर बनने की कोशिश करते हैं। जाति भेद की बात हमारी समाज में बहुत गहराई से जमी हुई है। और यदि कोई श्रेष्ठ बनने की कोशिश करता है तो श्रेष्ठ जाति वाला को अच्छा नहीं लगता। इसी पृष्ठभूमि पर यह कहावत बन गयी है। ३३२।

"नाऊ नाऊ केत्ते बार ?"
जजमान सब अगहे ऐ हैं।'

यह सवाद है जिससे संकेत मिलता है कि जो अवश्यम्भावी है उसके प्रति अधीर होने से कोई लाभ नहीं। वह अपने आप प्रकट हो जायेगा—उसके सबंध में अनुमान और अटकल लगाने की कोई आवश्यकता नहीं। बाल कटवाने वाला अपने बालों के सबंध में उत्सुक हो रहा है। नाई एक यथार्थवेत्ता निष्णात की भाँति उसे समझाता है कि अभी तुम्हारे सामने सब बाल आ जायेंगे तब देख लेना। "प्रत्यक्ष किम प्रमाण" जो प्रत्यक्ष है उसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं। ऐसी स्थिति में जब कोई उत्सुकतावश ऐसा प्रश्न करता है तो इसी कहावत के द्वारा उसके औत्सुक्य का शमन किया जाता है। ३३३।

नाचि न आवै आगन टेढ़।

यह बहुत ही लोकप्रिय कहावत है। अपनी कमियों अथवा अज्ञान को छिपाने के लिए प्राय लोग दूसरों को दोष देने लगते हैं। यह बहुत ही सामान्य एवं विश्वव्यापी सत्य है। साधारण खिलाड़ी अपनी हाकी स्टिक का या बैट का दोष देता है मगर अच्छा नहीं खेल पाता। जबकि सत्य यह है कि वह अच्छा खिलाड़ी नहीं है। नाचने वाली स्टेज को, साजसज्जा को, सगीतज्ञों को दोषी ठहराती है।

कोई भी अपनी भूलो और कमियो को देखने और समझने के लिए तैयार नही है। ऐसी स्थिति मे उसे इस व्यग्य की चोट सहनी पडती है। नाचना आता नही आँगन को टेढा बतलाते हैं। ३३४।

नानी के आगे निनौरे की बात।

किसी जानकार व्यक्ति के समक्ष जब कोई अनाप शनाप बढा चढा कर तमाम बातें करने लगता है तो उस व्यक्ति को बरदास्त नही होता और वह कह उठता है कि ये सब बातें औरो के सामने करना जो जानता न हो। नानी के समक्ष ननिहाल की बातें करने से क्या फायदा, क्योकि नानी सब कुछ जानती है उससे ज्यादा उसके घर और गाँव के बारे मे नाती को क्या पता होगा। अत उस व्यक्ति को जो जिस विषय का अच्छा जानकार है, उसी को उसके विषय पर समझाना या बताना व्यर्थ है और उपयुक्त कहावत को चरितार्थ करता है। ३३५।

नाम निमलदास देही भरे माँ कोढु।

इस विषय के आधार पर अनेक कहावतें कही जाती हैं जिनमे से कुछ ही यहा दी गयी है। नाम का कुछ अर्थ होता है और प्राय उस नामधारी व्यक्ति मे वे गुण नही मिलते जिनका सकेत नाम के अर्थ से होता है। सस्कृत मे पापक की कथा सर्वविदित है। सच तो यह है कि माँ बाप जन्मोपरान्त शीघ्र ही अपने बच्चो की अच्छा सा नाम रखते हैं। न तो उस समय गुणो का पता चलता है और न यह सभव है कि गुणो के आधार पर नाम रखा जा सके। अत बुरे से बुरे व्यक्ति का नाम अच्छा और विपरीत अर्थ वाला हो सकता है। इसी अर्थ और गुण विपर्यय के आधार पर इस कहावत का जन्म हुआ है। ३३६।

नाम पहाडसिंह देहीं चिया असि।

प्रारम्भ मे एक या दो ऐसी कहावतें प्रचलित हुई होगी बाद मे लोगो ने ढूढ ढूढ कर ऐसे विपर्यया के आधार पर अनेक कहावतें बना डाली होगी। इनके पीछे एक दुर्भावना छिपी हुई रहती है कि किसी भी प्रकार हम अन्य व्यक्ति को नीचा दिखायें। यह मानव का ऐसा विश्वव्यापी गुण या दुर्गुण है जिसने मानव जीवन मे दुख और मानसिक पीडा को बहुत बढाया है। मेरे अतिरिक्त सभी व्यक्ति घटिया हैं। अपनी श्रेष्ठता जमाने का अगर कोई दूसरा साधन नही है तो नाम के अर्थ और व्यक्ति के गुणो मे तालमेल मिल ही जायेगा अत वही आधार पकडा गया है। ३३७।

नाम पिरथीपाल भुइ बिसवौ भरि नहीं।

अगर किसी व्यक्ति का नाम श्यामसुन्दर है पर वह कुरूप है, यदि किसी का नाम पृथ्वीपाल है और उसके पास बिस्वा भर भी धरती नहीं है, यदि वह कद म छोटा है पर नाम पहाड़सिंह है, तो इसमे उसका क्या दोष है ? और किसी का भी क्या दोष है। ऐसी निर्दोष स्थिति को लेकर हम इस प्रकार आचरण करते हैं मानो इसमे उसका बडा भारी दोष है वह अपराधी है। यह चढाऊपरी स्पर्द्धा की भावना हमारे जीवन म विषवपन करती रहती है। जब तक जीवन मे स्पर्द्धा की भावना है, मानव समाज अधिक सभ्य और सुसस्कृत नही समझा जा सकता। नाम विपरीत स्थिति होने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। ३३८।

नाम फूलसिंघ गाडि चैला असि।

परन्तु हमारे जीवन म प्रारम्भ से ही प्रतिस्पर्द्धा पर बल दिया जाता है। इससे एक दो आगे आयेंगे पर जिससे अन्य लोगो की मानसिक पीडा और अस्तित्व की छटपटाहट बढ जायेगी। सस्कृति वह तत्व है जो व्यक्ति को भीतर से समृद्ध बनाता है और जिसके सम्पर्क से अन्य का भी अन्तमन प्रफुल्लित हो उठता है। ऐसा करना तो दूर रहा हम सदैव दूसरो को यही बताने की कोशिश म लगे रहते हैं कि वह कितना छोटा है, अज्ञ है, मूख है, दोषी है अपराधी है। इस प्रकार समस्त समाज का प्रत्येक व्यक्ति अन्य के समक्ष छोटा है, हीन है। हम दूसरो म हीन भावना भर कर सबल बनना चाहते हैं। जबकि होना यह चाहिए था कि यदि परिस्थितिवश हममे कोई गुण या विशेषता है, बल या बुद्धि है तो उससे दूसरो की सहायता करें। ३३९।

नाम स्यामसुन्दर मुह कूकुरि का अस।

परन्तु सामान्यत यह देखा जाता है कि अधिक बलवाले, बुद्धिवाले कम बल वाला का शोषण करते हैं। ये कहावतें इसी मानवीय शोषण की प्रक्रिया से प्रकट हुई हैं। जहाँ बेचारे का कोई दोष भी नही है वहाँ भी हम उसको दोषी ठहराना चाहते हैं। सहानुभूति एव सहयोग के स्थान पर शोषण की भावना काय कर रही है जो मानवीय विकास की भावना के विरुद्ध है। इसी भावना के परिणामस्वरूप अनेक सन्त, महात्माओ एव सत्य शोधिओ को अपनी जीवन का उत्सर्ग करना पडता है। सबसे अधिक सख्या म इस प्रकार की कहावतो का पाया जाना इसी स्थिति को सिद्ध करता है। ३४०।

नाम सुग धा पादै का बिखु ।

दूसरे को पीडा पहुचाने म मनुष्य का एक विचित्र प्रकार का Sadistic सुख प्राप्त होता है । कोई भी पादेगा, तो उससे दुग ध फैलगा चाहे उसका नाम सुगधा हो या चमेली । पर तु उस वेचारी का पादना जहर हो गया क्योंकि उसका नाम सुग धा है । खैर, कहावत का प्रयोग इसी प्रकार के अनेक व्यक्तिगत विपर्यया का लक्ष्य करके किया जाता है । प्राय हम सभी के सबध मे ऐस विपयय आसानी से खोज सकते हैं । कभी कभी इस कहावत का प्रयोग ठीक भी होता है—जब कोई व्यक्ति बडा दिखावा करता है पर तु गुणो मे वैसा नही होता तो इस कहावत का अच्छा प्रयोग होता है । ३४१ ।

नारि सुहागिन जल घट लावै ।
दधि मछली जो सनमुख आव ॥
सनमुख धेनु पिआवै बाछा ।
मगल करन सगुन है आछा ॥

यह यात्रा सगुन सबधी कहावत है । पहल यात्रा बहुत ही अनिश्चित और भयावह थी । अत शकालु मन को प्रारम्भ म आश्वस्त रखने के लिए इस प्रकार के सकेतो से कुछ बल मिलता था । इनमे कोई वैज्ञानिक तक नही मिल सकता । केवल कुछ माने हुए चिह्न हैं जो विपरीत भी सिद्ध होते रहते हैं । पर तु इनका प्रभाव बडा व्यापक है । जल से भरा हुआ बर्तन वह भी सुहागिन के सिर पर दही मछली, दूध पिलाती हुई गाय अच्छे सगुन हैं । चित्र निर्माण के पूव हमारे सिनेमावाले भी बड़े धार्मिक हो जाते हैं और मुहूर्त करते हैं । ३४२ ।

ना होई बांसु न बाजी बासुरी ।

यदि कारण को ही समाप्त कर दिया जाये तो परिणाम उत्पन्न ही न होगा । बाँसुरी बाँस से बनती है अत बाँस को ही समाप्त कर दिया जाये तो बासुरी कैसे बनेगी, और जब बाँसुरी नही होगी तो बजने का सवाल ही नही पैदा होगा । पता नही किस व्यक्ति को बाँसुरी से इतनी घृणा हो गया कि चाणक्य की भाँति कुशा की जडो मे माठा और नमक भरने लगा । बडा निमम रहा होगा वह व्यक्ति । यहाँ पर बाँसुरी किसी अप्रिय घटना के प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत की गयी है । यदि अप्रिय घटना से बचना है तो उसके उत्पादक कारणो को मिटाना पडेगा । यही सन्देश है इस कहावत म । कदाचित बाँसुरी वादन से कोई आसक्त बहुत बिगड़ गया होगा और उसके विनाश के लिए तुल गया होगा । ३४३ ।

निउनी चली बरन का अदहनु धरै।

बड़े बनाने के लिए अदहन नहीं चढ़ाया जाता, बल्कि दाल पानी मे भिगायी जाती है। दाल पकाने के लिए कुछ पहले से पानी चढ़ा दिया जाता है और पानी के गम हो जान पर उसी मे दाल छोड दी जाती है। ऐसा करने से दाल अच्छी पकती है। निउनी यानी निपुण। यहाँ पर व्यग्य है कि बडी निपुण हैं, बडे बनान के लिए अन्हन चढ़ान जा रही हैं। घर में जब बहू ऐसी ही कोई अटपटा भूल कर बैठती है तो सासु के व्यग्य वाणा का शिकार होती है। यह घरेलू कहावत है जिसका प्रयोग ऐसी ही स्थितियो तक सीमित है। जब बेवकूफ आदमा अक्लमदी दिखान की कोशिश मे बेवकूफी का काम करता है तो इस कहावत को चरितार्थ करता है। ३४४।

निबरे कै मेहरिया जवारि भर क भौजी।

भौजी या भावज या भाभी एक ऐसा रिश्ता है, जिसमे व्यक्ति को देवर बनकर स्त्री स श्लील अश्लील मजाक करने का अधिकार मिल जाता है। पुराने जमान मे देवर भाभी का, पति के बाद, दूसरा पति होता है। इस विशेषाधिकार का सभी उपभोग करना चाहते हैं पर तु ऐसा अधिकार प्रत्यक की पत्नी के साथ नहीं मिल सकता पर तु कमजोर व्यक्ति की पत्नी के साथ एसा सबध जोडना समव हो जाता है क्योंकि कमजोर हान के कारण वह अ य लागो के इस अधिकार का विराध नही कर सकता। कमजोर व्यक्ति के साथ जब कोई ऐसा व्यवहार करता है तो इस कहावत का प्रयोग हाता है। ३४५।

नेनू क नाक पिसान का दिया।

मक्खन की नाक और आटा का दिया। बहुत ही भावुक व्यक्ति जब छोटी छोटी बातो स प्रभावित हाकर दुखी होने लगता है, तब इस कहावत के जरिय उसका भावुकता की निन्दा की जाती है। मक्खन की नाक जरा सी गर्मी स पिघल जाती है। यहाँ पर आटा का दिया है जो अधिक ताप नही सह सकता। पर तु मक्खन उतनी भी गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकता। इस कहावत का अच्छा उपयोग सासुओ द्वारा किया जाता है। पहले तो वे बहुओ की लानत मलामत करती रहती हैं, व्यग्य एव टोने बोलती रहती हैं। और जब बहू उनका नही सह पाता और अपनी विवशता म रोने लगती है तो सासु इस कहावत से उसी को दोषी ठहराती हैं—इतनी भावुकता भी किस काम की। ३४६।

नोखे क भगतिनि गरारी क माला।

अनोखी भगतिन है गरारी की माला जपती है। गरारी लकडी की गिर्री है जिसके सहारे कुएँ से पानी खींचा जाता है। माला की गुरियाँ भी उसी लकडी की गिर्री की तरह होती है। भगतिन कोई साधारण नहीं है—अनोखी भगतिन है, तो स्वाभाविक ही है कि उसकी भक्ति का ढंग भी अनोखा होगा। उसकी गिर्रियों की बनी होगा। जब कोई व्यक्ति अपनी महत्ता या विशेषता दिखाने के लिए कुछ विचित्र प्रकार का आचरण करता हो तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ३४७।

नोखे घर का नौकर।
चूनी खाय न चोकर॥

अनोखे घर का नौकर चूनी चोकर नही खाता। बात यह है कि—नौकर के लिए अलग प्रकार का साधारण और सस्ते अन्न का भोजन बनाया जाता है। परन्तु कोई नौकर यदि ऐसा आ गया जो साधारण भोजन नही करता तो उपयुक्त शब्दों में उसकी आव भगत होती है। जब कोई साधारण व्यक्ति किसी विशेष सम्पर्क में रहने के कारण असाधारण व्यवहार करता है तो उसे इस व्यंग्य बाण को बरदाश्त करना पड़ता है। अपने घर में तो वह मोटा अन्न खाता होगा पर दिखाने के लिए दूसरे के यहाँ मोटा अन्न नही खाता। ३४८।

नौ क लकडी नब्बे खर्च।

किसी वस्तु का मूल्य तो अधिक न हो परन्तु उस पर ऊपरी खर्च अधिक आये तो इस कहावत का प्रयोग होता है। इस भाव के लिए भी अनेक कहावतें हैं। प्राय कपडे की कीमत से कपडे की सिलाई अधिक पड जाती है तो यही कहते हैं। नौ रुपये की तो लकडी खरीदी, परन्तु उसके ढोवाने, कटाने इत्यादि में नब्बे रुपये खर्च हो गये। ३४९।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस।

सुस्त और कामचोर को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है। चले तो नौ दिन परन्तु फासला ढाई कोस का ही तय किया। नौ दिन में ढाई कोस चलना चलना नहीं। कुछ लोगों को दूसरे सदर्भ में भी इस कहावत का उपयोग करते सुना गया है पैदल चलते चलते आदमी थक जाता है और अपने गन्तव्य को नहीं पहुँच पाता। ऐसा प्रतीत होता है कि दूरी बढ़ती जा रही है तो

अपने प्रयत्न को अधिक और परिणाम को कम दिखाने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है। अर्थात् चले तो इतना अधिक परन्तु पहुचे कभी कहीं नहीं। मेहनत इतना अधिक की पर परिणाम उतना न मिला। ३५०।

नौ सौ चूहा खाय बिलरऊ हज का चलीं।

स्वभाव बुरे काम करने का है और जीवन मे अब तक केवल बुरे ही काम किये हैं पर दावा अच्छे काम करने का है, तो लोगो को विश्वास नही होता। जैसे बिल्ली कहे कि अब मैं भगतिन हो गई हू और इसलिए चूहे नही खाऊँगी तो किसी को उस पर भरोसा नही होगा। पाप या बुरे काम तो कर ही डाले अब पाक-साफ बनने से क्या होगा ? कहावत की ध्वनि यह है कि यदि कोइ काम बुरा है तो उसे करना ही नही चाहिए। करने के बाद फिर छोडने से आचरण की शुद्धता कैसी ? ऐसे व्यक्तियो पर अविश्वास हो जाता है। ३५१।

(प)

पउला पहिनि कै हर जोत, औ सुथना पहिनि निरावै।
घाघ कहैं ई तीनू भकुआ सिर बोझा औ गावै ॥

घाघ शब्द के अर्थ ही घाघ के कारण चतुर होशियार, अनुभवी व्यक्ति के हो गये हैं। घाघ और भडडरी की बहुत सी उक्तियाँ कहावतो के रूप म प्रचलित हो गयी हैं। बहुत-सी उक्तियाँ प० राम नरेश त्रिपाठी की पुस्तक म मे सकलित हैं। उन सभी उक्तियों का कहावतो के रूप मे उपयोग नही होता। लोक साहित्य की पहली शर्त है कि वह मौखिक होता है। लिखित साहित्य भी मौखिक परम्परा म अलिखित रूप मे प्रचलित हो जाता है तो वह भी एक प्रकार का लोक साहित्य हो जाता है। तुलसीदास की रामायण का बहुत सा अश मौखिक परम्परा म प्रचलित हो गया है। लकडी के जूते (पउला) पहन कर हल जोतना कष्ट साध्य कार्य है, पाजामा पहन कर निराई भी ठीक नहीं बनती और सिर पर बोझा लेकर चलने से बस ही दम फूलने लगता है उस पर से गाना। ऐसा करने वाले बेवकूफ ही होंगे—ऐसा घाघ का कथन है।३५२।

पछुवा हवा ओसावै जोई।
घाघ कहैं घुन कबों न होई॥

यह उक्ति कृषि सम्बन्धी है जो अनुभव पर आधारित है। पुरवा हवा में ओसाने से अनाज में कुछ गीलापन रह जाता जिससे घुन बहुत जल्दी लग जाते हैं, परन्तु पछुवा हवा बिलकुल सूखी होती है। पछुवा हवा में ओसाने से अनाज ठीक से सूख जाता है। पूरी तरह से सूखे अनाज को बखारों में या अन्यत्र रखने से घुन नहीं लगता क्योंकि दाना सख्त और सूखा होता है। किसानों के लिए यह बड़ा उपयोगी सीख है। सीलन में तो अनेक कारणों से अनाज को नुकसान पहुँचता ही है, परन्तु ठीक से न रखने पर भी अनाज खराब हो जाता है। ३५३।

पढ़ लिखि की ऐसी-तैसी।
जोतब खेत चराउब भैंसी॥

यह कहावत उस समय बतायी गया होगा जब साक्षरता प्रसार के प्रयत्न प्रारम्भ हुए होंगे। जिस प्रकार साक्षरता के लिए समाज सेवकों ने नारे लगाये होंगे उसी प्रकार गांव के लोगों ने भी अपने नारे तैयार कर लिए होंगे। पढ़ना लिखना बेकार है। अतः अपना समय उसमें क्यों नष्ट किया जाय? जितने समय खेती के लिए उपयोगी बच्चे स्कूलों में पढ़ेंगे, उतनी देर में वे ही बच्चे अपने खेत जोत सकते हैं, अपने जानवरों को चरागाहों में चराने के लिए ले जा सकते हैं। अतः किसान अपने बच्चों को पाठशालाओं में भेज कर उनका समय नहीं नष्ट करना चाहते। अब इस धारणा में परिवर्तन हो गया है। ३५४।

पढ़े लिखे ते कुछो न होई।
हर जोते कोठिला भरि होई॥

इस उक्ति के माध्यम से भी उपर्युक्त दृष्टिकोण को ही स्पष्ट किया गया है। पढ़ने लिखने से कुछ न होगा जब कि हल जोतने से कोठिला भर के अनाज होगा। कृषि जीवन की दृष्टि से शिक्षा की अनुपयोगिता पर कृषकों की यह उक्ति काफी समय तक प्रचलित रही, और किसान अपने बच्चों को पाठशालाओं में भेजने से इन्कार करते रहे। जबरिया तालीम या अनिवार्य शिक्षा कठिनाई से लागू की गया और कुछ समय तक अशिक्षित माँ बाप अनेक बहाने करके अपने बच्चों को स्कूल जाने से रोकते रहे। ३५५।

पतुरिया रूठो धरमु बचा ।

बड़ी सारगर्भित कहावत है । स्त्री के सहवास के लिए उतावला रहना पुरुष के लिए स्वाभाविक है । इस मामले में वह इतना कमज़ोर है कि अपने धर्म की रक्षा नहीं कर सकता । पतुरिया या रण्डी के आकर्षक से वह अपने को बचा नहीं सकता । अतः वह इस प्रकार का पाप कर ही बैठता है, परन्तु यदि पतुरिया या रण्डी रूठ जाये तो पुरुष का धर्म बच जाये । अतः उसके धर्म की रक्षा उस पर निर्भर नहीं, बल्कि उस स्त्री पर है जो उस पाप करने पर प्रेरित करती है । ऐसी किसी भी अन्य स्थिति में जब मनुष्य अपने प्रयत्नों से नहीं, बल्कि स्थिति के कारण किसी बुराई से बच जाता है तो इस कहावत का प्रयोग होता है । ३५६ ।

परकी गाय कोलदा खाय ।
बारबार मोहा तरे जाय ॥

मोहा (मधूक) का बना हुआ हलुआ (लपसी) गाय एक बार खा लेती है । उसकी महक तब से उसके मन में बसी हुई है । उसी महक के सहारे वह बार-बार मोहा (मधूक) वृक्ष के नीचे जाती है कि उसे कोलदा खाने को मिलेगा पर वहाँ तो कोलदा मिलता नहीं । उसी स्थिति को मानव व्यवहार पर लागू किया गया है । एक बार संयोग से किसी व्यक्ति का कोई लाभ हो जाता है तो वह समझता है कि वह तो उसका प्राप्य ही है और उसे मिलना ही चाहिए । वह उसी इरादे से उसी स्थान पर बार बार जाता है या प्रयत्न करता है और निराश होता है तो इसी कहावत को चरितार्थ करता है । ३५७ ।

परकी घोड़ी भुसौरे ठाढ़ि ।

लगभग उपर्युक्त कहावत की भाँति है । परकी घोड़ी बार बार भुसौरे के पास आकर खड़ी हो जाती है । एक बार वह भुसौरे में जाकर भुस खा आयी । अब उसे चाट लग गई । भुस खाने की उम्मीद में वह भुसौरे के पास आकर खड़ी हो जाती है, इस घात में कि मौका लगे कि वह भुस खाय । पर भुसौरे का मालिक अब सावधान हो गया है, और अब घोड़ी को मार भगाता है । इसी प्रकार जब मनुष्य किसी प्रकार की मुफ्तखोरी का आदी हो जाता है तो परकी घोड़ी की भाँति आचरण करता है पर उसे हमेशा सफलता नहीं मिलती । ऐसे व्यक्ति पर यह कहावत चरितार्थ होती है । ३५८ ।

पर उपदेस कुसल बहुतेरे।

गो० तुलसीदास की चौपाई का एक अंश है जो मानवीय आचरण का बड़ी ही सटीक व्याख्या करती है। दूसरे को सीख देने में सभी बड़े निपुण होते हैं पर ऐसा आदमी मुश्किल से ही मिलता है जो अपने कथनानुसार आचरण करते हों। दूसरों को उपदेश देने से अधिक आसान काम शायद ही और कोई हो। ३५६।

पर धन जोगवं मूरखचन्द।

बहुत ही उपयोगी सत्य को स्पष्ट ढंग से इस कहावत में प्रस्तुत किया गया है। वह व्यक्ति निश्चित ही मूर्ख होगा जो दूसरे के धन का संरक्षण करता है। जहाँ धन होगा खतरा होगा। जान का जोखिम भी रहती है। अपने धन के संरक्षण की बात तो ठीक है क्योंकि वह यदि सुरक्षित रहा तो कभी काम देगा, परन्तु दूसरे का धन यदि सुरक्षित रहा भी तो संरक्षण कर्त्ता को क्या मिला। जिसका धन है वह एक दिन ले जायगा और यदि खो गया या कोई चुरा ले गया तो संरक्षणकर्त्ता ही चोर समझा जायेगा और उस धन का भुगतान करना पड़ेगा। साथ ही चोर डाकू के हाथों मार भी खाता है या कभी कभी जान गंवाने तक की स्थिति पैदा हो जाती है। फिर भी पता नहीं क्यों इतना सब जानते हुए भी परधन संरक्षण करने वाले बहुत दिखाई देते हैं। ३६०।

पर धन पै लछिमी नारायन।

इसके पूर्व की कहावत की मूर्खता का कारण इस कहावत में दिखाई देता है। अपने पास तो इतना धन है नहीं तो दूसरे का धन रख कर ही यदि धनपति या लक्ष्मीनारायण बना जा सके तो क्या बुरा है! परन्तु लोग सब जानते हैं और जब कोई व्यक्ति इस प्रकार किसी अन्य के धन पर अपने को धनी जताने की कोशिश करता है तो लोग कह देते हैं कि पर धन पै लक्ष्मीनारायण। कभी कभी लोग इस लालच से भी धन रखते हैं कि उसको भी उसका कुछ अंश मिल जायेगा। सम्पत्ति का मालिक मर गया तो वह धन उनका हो जायेगा। या कभी कभी यह भी होता है कि लालच बढ़ता है और वह उस धन को अपना बना लेता है। साधारण सरल अर्थ है दूसरे के धन के सहारे जीवन यापन करना। ३६१।

पर मरी सासु आसों आवा आम।

हमारे समाज में सासु बहू का रिश्ता बड़ा विख्यात है। बहू को सासु के

शासन म रहकर अनेक प्रकार की यातनाएँ सहनी पडती हैं। बहू को किसी प्रकार की भी स्वतन्त्रता नही होती और तान भी सहन पडते हैं। घर की सारी टहेल तो करनी ही पडती है रात म थके हुए शरीर से सासु के पैर भी दाबने पडते हैं। इतना कष्ट देने वाली सासु यदि मरे तो स्वाभाविक है कि बहू का आखा मे आँसू नहीं आयेंगे और यदि आयेंगे भी तो मरने के बहुत दिनो के बाद जब वह कुछ अपनी यातनाओ को भूल गई होगी। अत सासु की मृत्यु के एक वर्ष के उपरान्त बहू की आँखा मे आँसू आय। स्वाभाविक ता है पर शिष्टाचार एव व्यवहार की दृष्टि स अनुपयुक्त है। अत इसी प्रकार अन्य क्षेत्रा म भी समय निकल जाने पर यदि कुछ किया जाता है ता इस कहावत का प्रयोग होता है। ३६२।

परहथ बनिज सँदेसन खेती, बिन वर देखे ब्याहे बेटी।
द्वार पराये गाड़ थाती, ई चारिउ मिलि पीटें छाती॥

इस कहावत भी घाघ जैसे व्यक्ति की कही हुई है। दूसरों के जरिये व्यापार, सन्देशा से खेती, बिना वर देखे हुए बेटी का विवाह करना और दूसरे के दरवाजे पर अपनी धरोहर (सम्पत्ति) को गाडने वाले लोगा की गणना मूर्खों म की जाती है। एक दिन य चारा भयकर परिणाम को भोगेंगे और सब छाती पीट-पीट कर रोयेंगे। अर्थात् व्यापार एव खेती स्वय करना चाहिये और बेटी के लिए वर स्वय पसन्द करना चाहिए। जहाँ तक बन पड़े महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति को स्वय करने चाहिए किसी के सहारे नही छोड देना चाहिए नही तो अवाछनीय स्थिति का उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक हा है। ३६३।

पराई पतरी का बरा जादा नीक लागत है।

अथवा

पराई पतरी का भातु जातु जादा मिठात है।

एक ही बात दो प्रकार स कही गयी है—बडा और भात। दूसरा का हालत भले ही इतनी अच्छी न हो पर यह मानव स्वभाव है कि उस अपनी स्थिति अन्य की तुलना म अच्छी नहीं लगती। उस ऐसा महसूस होता है कि और सब ता सुख भोग रहे हैं और वह दुख पा रहा है। यह ईर्ष्या के कारण होता है जबकि सत्य इसके विपरीत भी हो सकता है। दूसरे की पत्तल का बडा या भात ज्यादा अच्छा लगता है। ३६४।

पराधीन सपनहुँ सुख नाहीं।

गो० तुलसीदास की यह उक्ति १९४७ ई० तक बच्चे बच्चे के मुँह पर थी क्योंकि हम अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त होना था। पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता। इस कथन के सत्य का अनुभव हमने जीवन के अनेक क्षेत्रों में किया है। अब हम स्वाधीन हैं। यथार्थ सुख भले ही न हो पर इतना सन्तोष तो है ही कि हम कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र हैं। भले ही हम कुछ भी न करें। बंधन में मनुष्य को कभी सुख नहीं मिल सकता। ३६५।

परारी गाडि माँ लकडी ग जानौ भूसा मा ग।

यह बहुत ही भोंडी कहावत है और गावों में लोग मौके पर निःसंकोच कहते हैं। प्रायः पुरुषवर्ग में इसका प्रयोग होता है। गुस्सा होने पर गाँव की स्त्रियाँ भी इसका प्रयोग करती हैं। क्रोधवश स्त्रियाँ तो न जाने क्या क्या कहती हैं? कहावत का आशय बड़ा ही अर्थ पूर्ण है। दूसरे को तकलीफ देने में किसी को हिचक नहीं होती। नवाबी जमाने में और कभी कभी जमींदारों के यहाँ यह सजा दी जाती थी। लगान न देने पर बेगार न करने पर जमींदार महोदय किसान को पकड़वा मँगाते थे और हुकुम फरमाते डाल दो इसकी गाड़ में लकड़ी। जमींदार साहब की दृष्टि में उसकी गाड़ में लकड़ी का जाना या भूसा में जाना एक समान था। ३६६।

पहिनि खडाऊ खेतु निराव ओढ़ि रजाई झोंक।
घाघ कहैं ई तीन्यू भकुआ बेमतलब की भोंक॥

इस दोहे से घाघ की अक्लमंदी प्रकट होती है। खडाऊँ पहन कर निराई करना बहुत ही कष्टप्रद है और साथ ही खेती भी खराब होता है। रजाई ओढ़ कर भाड़ झोंकना या आग जलाना भी मूर्खता पूर्ण कार्य है और जलने का भी खतरा है। तीसरा मूर्ख आदमी वह है जो बेकार की बातें करता हो चला जाता है कोई सुने चाहे न सुने। ३६७।

पहिलि बहुरिया बहुरिया,
दूसरि पतुरिया
तीसरि फुकुरिया।

इस कहावत की बात बहुत सही नहीं जचती। केवल इतना अर्थ तो सही प्रतीत होता है कि पहले आने वाली बहू का अधिक स्वागत सम्मान होता है।

पर दूसरी बहू का पतुरिया कभी नहीं माना जाता, भले ही उसका पहली का भाति सम्मान न होना हो और तीसरी कुकरी या कुतिया की भाँति ता कभी नही होती। इस कहावत मे एक दो उदाहरणो के आधार पर सिद्धात बनाने की भूल की गयी है और यह कहावत प्रचलित मा अधिक नही है। अक्सर दूसरी पत्नी अपने पति पर अधिक प्रभाव दिखाती है और उसे मनमाने ढग से नचाती है। ३६८।

पहिले तलया मा मुह धोय आओ।

अर्थात किसी चीज के पाने योग्य बनना। किसी दुलभ वस्तु पाने के लिए तयारी करना। मुँह धोकर तयार होने म दो बात हैं एक तो किसी खाद्य पदाथ के खाने के लिए या किसी की दृष्टि म जचने के लिए। परन्तु यदि कोई व्यक्ति यह जानता है कि अमुक वस्तु अमुक को नहीं मिलेगी और अमुक व्यक्ति उसे पाने की बडी तयारी कर रहा है या पाने के लिए लालायित है, तो जानकार मनुष्य उस पर व्यग्य करते हुए कहता है 'मुह घो के रखा मिल चुकी।' कभी-कभी इसी अथ मे दूसरा कहावत का प्रयोग होता है—'यह मुह और मसूर की दाल' या बडा मन चटनी का।' पता नहीं मसूर की दाल और चटनी को इतना दुलभ क्यों समझा गया? ३६८।

पाच आम पचीस महुआ।
तीस बरस मा अमिली बहुआ॥

पाच वष म आम का पेड फलने लगता है पचीस वष मे महुआ (मधोक) और तीस वष म इमली। ३७०।

"पाचौं अँगुरी घी माँ।'
"मूड कड़ाही माँ।"

किसी व्यक्ति का अनुकूल स्थितियो म होना। जब कोई हर तरह से लाभ की स्थिति में होता है तो कोई व्यक्ति कहता है 'आजकल तो तुम्हारी पाँचो अगुली घी मे हैं (चाहे जितना घी खाओ) तो वह व्यक्ति उत्तर देता है "जी हाँ और सिर घी स भरी आग पर चढी कडाही म।" अथात जिसको एक व्यक्ति दूसरे का व्यक्ति की स्थितियो को अनुकूल मानता है उन्ही को भोगने वाला व्यक्ति प्रतिकूल मानता है। अब इस कहावत का मिलाकर एक ही पक्ति बिना समझे हुए कह जाता मानो दूसरा स्थिति भी सुखद है। ३७१।

पाँचौ अगुरी बराबर नहीं होती।

यह एक प्रकट सत्य है। जिस प्रकार हाथ की पाँचो अगुलियाँ बराबर नही होती। उसी प्रकार यह दुनिया प्रत्येक के लिए एक सी सुखद या दुखद नही होती। जीवन म अनेक रूपता दिखायी दे रही है वह व्यवहार के क्षेत्र म बहुत सार्थक और सत्य है। या परिवार के सभी लोगो का स्वभाव एक सा नही होता। ३७२।

पास परै तो खेतु।
नाहीं तौ कूडा रेतु॥

खाद डालने से खेत अच्छा बनता है। उसकी मिट्टी म चिकनाई आ जाती है, और खेत अच्छा उगता है। मिट्टी की शक्ति भी बढ़ती है, अत पैदावार भी अच्छी होती है। बिना खाद के खेत की मिट्टी कूडा या रेत की तरह निकम्मी रहती है। ऐसी मिट्टी म अच्छा पैदावार नही होता। ३७३।

पानी का हगा उतराये बिना नहा रहत।

यह एक सत्य है। पानी म नहाते समय यदि टट्टी लग आयी और किसी ने यह सोचा कि बाहर जाने की क्या जरूरत है, पानी मे टट्टी कर लेने से किसे पता चलेगा और वह टट्टी कर लेता है। परन्तु टट्टी ऊपर तैरने लगती है और सबकी निगाहो म आ जाती है। इसी प्रकार जीवन म प्राय लोग सोचते हैं कि चुपचाप कोई बुरा काम कर लें, किसी को क्या पता चलेगा। परन्तु प्रत्येक कार्य का परिणाम होना है और वह कालान्तर म प्रकट हो जाता है। अर्थात समाज म एक साथ रहते हुए कोई ऐसा काम पूरा करना असम्भव है जिसका परिणाम अन्य पर भी होने वाला हो। एक न एक दिन बात खुलेगी और तब सब मजा पुरा कहेंगे, न्याय करेंगे। इसलिए होशियार लोग पहले से ही इस कहावत के जरिये सावधान कर देते हैं। ३७४।

पानी पीजै छानि क गुरु कीजै जानि कै।

यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। मनुष्य जीवन के दो ही पक्ष हैं जिनके ठीक होने पर जीवन बन जाता है और ठीक न होने पर सारा जीवन बिगड जाता है। यदि मनुष्य शरीर से स्वस्थ है और मन से शुद्ध तो वह मनुष्य सबसे अच्छा है। शरीर के स्वास्थ्य के लिए पानी छानकर पीना चाहिए और मानसिक शुद्धता के लिए अच्छा गुरु ढूढना चाहिए। यदि मस्तिष्क पर अच्छे विचारो

का प्रभाव है तो भूल कभी न होगी और यदि पानी स्वच्छ है तो शरीर मे कोई विकार न उत्पन्न होगा। अत प्रत्येक व्यक्ति को स्वच्छ पानी और स्वच्छ विचारो को ग्रहण करना चाहिए। ३७५।

पानी माँ रहि कै मगर ते बैर।

मगर पानी मे शेर के समान शक्तिशाली होता है। वह पानी का बादशाह है। पानी म उसके यत का कोई मुकाबला नही कर सकता। तो जिसे पानी में सकुशल रहना है उसे मगर की अनुकूलता प्राप्त करनी चाहिए नही तो वह जीना मुश्किल कर देगा। उसी प्रकार दुनिया म भी कुछ मगर होते हैं, जिनसे दोस्ती बनाये रखने मे ही खैरियत है। प्राय ऐसे दम्भी व्यक्ति स्वय इस कहावत का प्रयोग करते है। अगर तुम्हे यहाँ सुख से रहना है तो मेरे कथनानुसार आचरण करना होगा। पानी मे रह कर मगर से बैर नही रखा जाता। समाज मे रह कर ऐसे शक्तिशाली व्यक्तियो से दोस्ती बनाये रखना पडेगा। ३७६।

पाही खेती अजा घास बिटियन कै बढवारि।
एतनेहू पै घन न घटै, तौ कर बड़ेन ते रारि॥

जिसका खेती मे पाही लग गया हो और फसल नष्ट हो गयी हो, जिसका घास न उगा हो, और जिसके बहुत सी लडकियाँ हो, परन्तु इतना होने हुए भी जिसका धन न घटा हो वही बडे लोगो स झगडा मोल ल। बडे लोगो से झगडा करने म हर तरह से तकलीफ ही रहता है। परन्तु इतना धन हो कि अनेक विपरीत स्थितियो म भी कोई कमी न आये तो झगडा करने म कोई बात नही है। ३७७।

पीपर पात खरासर डोल।
घकरे की बिटिया अकरे के बोल॥

कान्यकुब्ज ब्राह्मणो में आँकर और धाँकर अर्थात कुलीन एव अकुलीन म बडा भेद भाव चलता है। रोटी बेटा का सबध आँकरा और धाँकरा म नही होता था। अभी भी लाग बचाते हैं। प्राय आँकर रुपये के लोभ मे धाँकरा के यहाँ विवाह कर लते थे और अपने को ओर भी हास्यास्पद बना लेते थे। वहा भेदभाव इस कहावत म प्रकट हुआ है कि धाँकर का बेटी आँकर की बेटी से बराबर बातचीत करने का दुस्साहस करे। ३७८।

पुरुख पुनरबस भरे न ताल।
तौ भरिहैं फिरि अगली बार ॥

यदि पुरुष पुनरबस नक्षत्र में भी वर्षा न हुई और तालाब न भरे तो वे खाली ही रहेंगे। अगले वर्ष जब वर्षा होगी, तभी उनमें पानी आयेगा। अर्थात सूखा पड़ जायेगा। ३७९।

पूत बतनी के भागी।

किसी निकम्मे बेटे पर व्यंग्य है। यदि बेटा कुछ काम नहीं कर सकता तो क्या बातें भी नहीं बना सकता? कुछ करने की सामर्थ्य तो नहीं है तो क्या बोलने की भी सामर्थ्य नहीं है। करनी कथनी में अंतर होने पर प्रायः इस प्रकार व्यंग्य किया जाता है। ३८०।

पूतौ मीठ भतारौ मीठ केहि के किरिया खाय।

पता नहीं कैसे और क्यों, पर शपथ लेना या कसम खाना सार्वभौमिक प्रथा है। अन्य को अपनी बात का विश्वास दिलाने के लिए लोग कसम खाते हैं। हमारे यहाँ कसमों के अनेक प्रकार हैं गंगा की कसम, जनेऊ की कसम, बेटे की कसम, बाप की कसम इत्यादि। परन्तु झूठी कसम खाने पर अहित की आशंका रहती है जिसकी कसम खायी जाये, बात झूठ होने पर, उसकी मृत्यु तक हो सकती है। इसलिए झूठे के सम्मुख समस्या पैदा हो गयी है कि किसकी कसम खाये, पति भी चाहिए पुत्र भी प्रिय है तो कसम किसकी खायी जाये। अर्थात झूठी कसम खाने वाले पर यह व्यंग्य है। ३८१।

पैसा न कौडी, कान छेदाव दौडी।

कान छेदन एक संस्कार है। पुत्र के छेदन में काफी पैसे खर्च हो जाते हैं क्योंकि कम से कम भाई भैयाचारों को भोजन कराना पड़ता है, सोने की बाली बनवानी पड़ती है और सुनार को छेदन के लिए नेग देना ही पड़ता है। पैसे की व्यवस्था नहीं है, पर ललक या अभिलाषा इतनी है कि कान छेदाने के लिए व्याकुल है। अस्तु आवश्यक सामर्थ्य के अभाव में भी जब व्यक्ति कुछ कठिन कार्य करने का साहस दिखाता है, तो लोग उसके इस साहस को अच्छा नहीं मानते और उस पर व्यंग्य कसते हैं। प्रायः ऐसा देखा-देखी और दूसरों की बराबरी करने की होड़ में होता है और समर्थ लोग उस पर हँसते हैं, व्यंग्य करते हैं। ३८२।

पौ बारह ।

सफलता प्राप्त होने पर। किसी भाग्यशाली के लिए इस कहावत का उपयोग होता है। जुए में कौड़ियाँ फेंकी जाती हैं। पौ बारह होने पर उसकी विजय निश्चित है। अतः जब किसी व्यक्ति का भाग्योदय होता है और सफलता मिलने लगती है, तो कहते हैं कि तुम्हारे पौ बारह हैं। ३८३।

प्रभुता पाय काहि मद नाहीं।

गो० तुलसीदास जी की इस पंक्ति में जीवन का एक सत्य छिपा हुआ है। प्रभुता पाकर सभी में एक प्रकार का अभिमान आ जाता है। महत्ता, सत्ता, विशेषता, सफलता इत्यादि पा जाने पर मनुष्य घमण्डी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति विरले ही होंगे जिसमें प्रभुता पाने पर भी अभिमान न पैदा हो। अभिमान लोगों में अकारण भी होता है, महत्व प्राप्त होने पर तो सभी को हो जाता है। ३८४।

(फ)

फटकचन्द गिरधारी, जिनके लोटिया न थारी।

फक्कड़ या मस्त आदमी जिसके पास कुछ भी नहीं है। कुछ भी न होने से उसे किसी प्रकार की चिन्ता भी नहीं है। अर्थात वह फटक चन्द गिरधारी है। किसी गृहस्थ के लिए ऐसा होना असम्भव है। इसलिए प्रायः एक गृहस्थ ऐसे फक्कड़ लोगों से अपना तुलना नहीं करते। एक गृहस्थ के पास गृहस्थी की चीजें होना ही चाहिए जिनकी उसे चिन्ता रखनी ही पड़ेगी। गृहस्थ होते हुए भी कोई फटक चन्द गिरधारी नहीं हो सकता। अतः ऐसे व्यक्तियों के बारे में यही कहा जाता है कि वह तो निश्चिन्त व्यक्ति है उससे हमारी क्या तुलना? लापरवाह गृहस्थों के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। ३८५।

फूहड़ उठी दुपहरी सोय।
हाथ बढ़नियां कोंहिसि रोय॥

जो स्त्री घर में सफाई और उचित व्यवस्था नहीं रखती वह फूहड़ कहलाती

है। लापरवाही स्त्री का सबसे बड़ा दुर्गुण है। इस कहावत की स्त्री दोपहर में सोकर उठी है और झाड़ू लेकर सफाई करने चली है। इतनी देर तक सोने के बाद जरा सा काम करना पड़ा तो वह रोने लगी। हमारे समाज में ऐसी स्त्री के प्रति सम्मान की भावना असम्भव है। उसे फूहड़ माना जाता है। उसके आलस्य पर यह व्यंग्य है। ऐसी स्त्री घर, परिवार एवं समाज के लिए उपयोगी नहीं हो सकती। ३८६।

फूहड़ कर सिंगार मांग इटाते पार।

फूहड़ औरत मूर्ख और गवार स्त्री को कहते हैं जिसमें न शील है न व्यवहार कुशलता। जो आलसी है और कम अक्ल, जिसमें ढंग नहीं और न शऊर, जो अपना प्रसाधन भी ठीक से नहीं कर सकती। स्त्री और कुछ नहीं तो कम से कम अपना प्रसाधन तो कर ही सकती है परन्तु यदि वह यह भी न कर सके तो निश्चित ही फूहड़ है। और उसके फूहड़पने का सबूत यह है कि वह अपनी माँग सिन्दुर से न भर कर इंट को पीस कर उसके चूर्ण से करती है। वह जानती है कि माँग में कुछ लाल भरा जाता है, पर वह इंट गेहरा और सेन्दुर में भेद नहीं जानती। ३८७।

फूहड़ पोत चूल्हा। की मटकाव कूल्हा।

फूहड़ औरत इधर उधर अपनी कूल्हा मटकाती फिरती है। उसको इसी में आनन्द आ रहा है वह चूल्हा क्या पोतेगी? अर्थात घर के काम काज में उसका मन नहीं लगता। घर की सासु ननद उसके इस आचरण पर इसी प्रकार का व्यंग्य करती है। वह इधर उधर मटकती फिरती है। ३८८।

फूले की बिछिया मां एतना गुमान।
चाँदी की होतो तो चलतीं उतान॥

स्त्रियों को आभूषण बहुत प्रिय होते हैं। यहाँ पर स्त्री के स्वभाव को चित्रित किया गया है। काँसे की बिछिया जो बहुत ही सस्ती होती है उन्हें पहन कर वह अभिमान से चलती है, घमण्ड दिखाती है। दूसरी स्त्री उसके इस गुमान से अप्रसन्न होकर कहती है कि काँसे की बिछियों पर जब इतना गुमान किया रही हो यदि चाँदी की होती तब तो छाती तान कर (उतान) चलती। किसी व्यक्ति के इतराने या गुमान दिखाने पर इस कहावत का प्रयोग होता है। मनुष्य छोटी छोटी बातों पर प्राय अभिमान करने लगता है परन्तु समाज कठोर है, वह उसके इस भाव को ठण्डा कर देता है। ३८९।

(ब)

बँधी मूठी लाखु बराबर।

यह बहुत ही अर्थ पूर्ण कहावत है। जब तक मुट्ठी बँधी हुई है किसी का पता नहीं चलता कि इस मुट्ठी में कानी कौड़ी है या सोने की मोहर। पर एक बार मुट्ठी के खुल जाने पर अर्थात प्रकट हो जाने पर उसकी महत्ता घट जाती है। प्राय इस कहावत का प्रयोग इसी दृष्टि से सामाजिक मर्यादा के लिए की जाती है। गरीबी में भी किस प्रकार सामाजिक सम्मान बनाये रखने के लिए लोग अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ सहते हैं इस कहावत से प्रकट हो जाता है। मुट्ठी खुली कि हाथ फैला। और हाथ फैला कि मान मर्यादा सब समाप्त हो जाती है। क्योंकि असली स्थिति प्रकट हो जाता है। संयुक्त परिवार के पक्ष में भी इस कहावत का अच्छा प्रयोग हो सकता है। ३८०।

बगुला मारे पखन हाथ।

बगुला मारने से कोई लाभ न होगा। 'गुनाह बेलज्जत' उर्दू की एक कहावत है जो इसी कहावत के समान है। बगुला मारने से हत्या तो हो जायेगी अर्थात पाप तो होगा पर लाभ के स्थान पर केवल थोड़े से पंख हाथ लगेंगे। बगुला के शरीर में माँस बहुत ही कम होता है। गुनाह भी किया जाये तो ऐसा जिससे कुछ लाभ हो। कभी कोई जमींदार या अन्य साहूकार अपने स्वार्थ के लिए किसी किसान को पिटवाते हैं तो कोई समझदार उन्हें समझाता है कि इसको पिटवाने से क्या मिलेगा? 'बगुला मारे पखना हाथ'। ३८१।

बउरे गाँव ऊँट आवा कोऊ देखा कोऊ देखब न भा।

ऊँट कोई कुत्ता बिल्ली तो है नहीं है कि गाँव में आये कोई देखे भी नहीं। पर बेवकूफों के गाँव में ऊँट आया पर किसी ने देखा और किसी ने देखा ही नहीं। जब कोई विशेष बात हो, या घटना हो जाये, या कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति आये और गाँव वाले उसे जाने भी नहीं तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है। बड़ी महत्वपूर्ण बात हो गयी और किसी को मालूम भी न हुआ। ३८२।

बछवन हर चरै तो बैल को बेसाहै।

अगर बछड़ा से हल जुत जाये तो लोग बैल क्या खरीदें और तमाम रुपये नष्ट करें। दो चार बछड़े तो हर किसान के घर में होते ही हैं। [illegible]

चीकना बछड़ो के बस का काम नहीं खेती के लिए तो बैलो की ही जरूरत है। अथात यदि महत्वपूर्ण काय बच्चा द्वारा हो जाय तो बडा को कौन पूछेगा ? कभी कभी बच्चे कोई बडा काम कर डालना चाहते हैं कोशिश भी करते हैं परन्तु सफल नही होते ता इस कहावत को चरितार्थ करते हैं। बडे लोग इस कहावत का उपयोग करते हैं। ३८३।

बजार नहीं लागि कि गरकटा तयार।

बाजार म सभी तरह के चोर या गला काटने वाले एकत्र हा जाते हैं। पर बाजार स कुछ लाभ भी होता है। लाग अपनी जरूरत की चीजें पा जाते हैं। यदि बाजार लगने के पहल ही लोग चारी करने लगें ता बाजार से कोइ भी लाभ न होगा। कुछ मिलने के पहले हा खोने की स्थिति उत्पन्न हा जाये तो उपर्युक्त कहावत चरिताथ होती है। बनिय ठगते हैं कम तौलते हैं, बेईमानी करते ह पर कुछ तो मिलता है। पर मिल कुछ नही और आदमी ठगा जाये ता बाजार लगने के पहले ही गलाकट जाने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। चचलातिशयोक्ति अलकार के सहारे इस कथन म चमत्कार पैदा किया गया है। ३८४।

बदुई ब्योहारे का चदुई त्यौहारे का।

ब्योहार म देने के लिए बदुई का विशेष उपयोग है पर चदुई तो केवल त्योहारा मे ही काम आती है। अर्थात हर चीज की अपनी अलग-अलग विशेषता एव उपयोगिता है। ३८५।

बडे बडे बहे जाय गडरेऊ थाह मागं।

ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रामीण समाज मे गडरिया सबसे हीन कोटि का प्राणी माना जाता है। नदी के थहाने का काम बडे बडे न कर पाये वह गडरिया क्या करेगा ? जब कोई साधारण, असमर्थ, निधन या निबल व्यक्ति कोई बडा काम करने का यत्न करता है, तो समाज पहले से ही उसे हताश करने लगता है। बड़े एव समर्थ व्यक्ति ता अमुक काम न कर सके तू क्या करेगा। ऐसा करने वाला दुस्साहसी इस व्यग्य का चोट सहता है। हो सकता है कि वह उस काम को पूरा कर ले पर लोगो ने पहले से ही उसके सबध म एक निश्चित धारणा बना ली है। तो जहाँ बडे बडे तैराक बह गये वहाँ गडरिया क्या थाह पायेगा। ३८६।

बडों बडों कहाँ ल क परों।

इतना बड़ा समझते हैं कि समझ ही नहीं पाते कि घर म उनके अनुकूल स्थान भी होगा ? जब आदमी अपने अभिमान के कारण साधारण लोगों म विशेष प्रकार का व्यवहार करता है और यह बताना चाहता है कि वह उस प्रकार नहो रह सकता, जिस प्रकार अन्य लोग रहते हैं तो उसके इस अभिमानी स्वभाव पर इस व्यंग्य वाक्य का प्रहार किया जाता है। समाज मे ऐसे लोगों की कमी भी नही होती जो झठमूठ दूसरो पर अपनी शान जमाना चाहते हैं, पर समाज के साधारण व्यक्ति अपनी साधारणता म भी काफी नैतिक शक्ति रखते हैं, और एसे झूठ को बरदाश्त नहीं करते। ३९७।

बनिया क सखरज ठकुरक हीन।
बैद का बेटवा व्याधि न चीह्।।
पडित चुपचुप बेसवा मलीन।
कहैं घाघ पाँचों घर दीन।।

घाघ के घाघपन का अच्छा उदाहरण है। बनिया की उदारता, ठाकुर की हीनता, वैद्य के लडके की रोग सबंधी अज्ञता, पडित का चुपचाप रहना और वैश्या का मलीन होना, ये पाँचो स्थितियाँ इन पाँचो व्यक्तियो के लिए बहुत उलटी है। दूसरे व्यक्ति ऐसी स्थितियों म आसानी से जी सकते हैं पर ये पाँच अपनी इन विशिष्ट असमर्थताओ के कारण बिलकुल व्यर्थ या दीन हैं। इनको कोई नहीं पूछता अर्थात इनका दरिद्रता और दीनता का जीवन व्यतीत करना पडता है। ३९८।

बनिया जो परी परी, रहिमान ढरेल कुप्पा।

बनिया तो बेचारा परी परी करके तेल सचय करता है पर रहिमान उस तेल को जो परी परी करक कुप्पों म सचित हुआ है थोडी ही देर म नष्ट कर देते हैं। जब किसी गृहस्थ के घर में कोई लडका या व्यक्ति ऐसा हो जाता है जो बहुत अनापशनाप खर्च करता है, तो इस कहावत के जरिये बनिये की सचय वृत्ति की निरर्थकता पर व्यग्य किया जाता है। जब कुप्पा ढरेलन वाला घर म होगा तो परी परी सचय करने से कैसे काम चलेगा। घर म यदि कुपूत पैदा हो गया तो सम्पत्ति नष्ट हुए बिना न रहेगी। अस्तु सचय करना निरर्थक ही हो जाता है। ३९९।

बरसो राम धड़ धनिया।
धाय किसानु मरै बनिया॥

इस कहावत में भी बनिया के प्रति आक्रोश भाव प्रकट होता है। यदि माल सस्ता हो जायेगा तो किसान का सुख होगा और बनिये का घाटा होगा। बनिया समाज का शोषक है जो इस कहावत से स्पष्ट है। किसान को अपने जीवन की सभी आवश्यक चीजों को बनिये से ही खरीदना पड़ता है। अगर खूब पानी बरसेगा तो किसान के घर खूब पैदावार होगी जिससे वह अपनी उपज का पूरा उपभोग कर सकेगा और भाव गिरने से किसान के शोषक बनिये का नुकसान होगा। ४००।

घर न बिआहु छठी खातिर धान कूट।

कभी-कभी बड़ी वस्ता औरत बहुत से काम अगाऊ कर डालती है जिसका कोई लाभ नहीं होता। अभी वर भी नहीं ढूँढा गया, विवाह की कोई बात नहीं है, पर घर की पुरखिन नाती की छठी के लिए धान कूट-कूट कर रख रही है। ऐसी ही दूसरी कहावत है कि 'सूत न कपास कोरीसा से लटठमलट्ठा।' अगाऊ काम करना अच्छा है पर इतनी भी जल्दी क्या कि बेटे के विवाह के पहले ही नाती की छठी के लिए धान कूटे जायें। व्यक्ति की जल्दबाजी और अत्यधिक उत्सुकता पर इस कहावत द्वारा व्यंग्य किया जाता है। ४०१।

बाँटा पूतु परोसी बराबर।

ठीक ही है, जब बटवारा हो गया और बाप बेटे अलग-अलग रहने लगे, तो फिर बाप बेटे का सम्बन्ध भी समाप्त हुआ समझना चाहिए। अगर पड़ोसी के बराबर भी सम्बन्ध चलता रहे तो भी कुशल है। प्रायः तो यह देखने में आता है कि अलग हुआ बेटा पड़ोसी से भी ज्यादा खतरनाक साबित होता है। परन्तु यह नीति वाक्य है और बाप के लिए सीख है, कि बटवारा हो जाने के बाद उसे अपने बेटे को पड़ोसी के समान ही समझना चाहिए नहीं तो अभी उसे और भी क्लेश और दुख उठाने पड़ सकते हैं। ४०२।

बाँझ का जान पेटु पिराव।

जिसके बच्चा हुआ ही नहीं वह क्या पेट की पीड़ा समझ सकेगी। अर्थात जिसके जीवन में जो अनुभव नहीं हुए वह उस प्रकार के अनुभवों को नहीं समझ पायेगा। दूसरी कहावत बेवाई वाली है। "जाके पाँव न गयी बेवाई सो का

जानै पीर पराइ" हम बिना अनुभव के बहुत सी बातें नही समझ पाते। बच्चा को कितना ही समझाया जाये कि यह आग है इसको छूने से जल जाओगे पर वह नही मानेगा जब तक जलन की पीडा का अनुभव न कर लेगा। ४०३।

बाँदर का जानै अदरख का सवादु।

अदरख कडवी होती है। बन्दर उसे नही खाता। इसलिए कहावत बना कि अदरख का स्वाद बन्दर नही जानता। जब कोई व्यक्ति किसी अच्छी चीज के स्वाद को नही जानता, या किसी चीज की उपयोगिता नही जानता तो उसे और भी हीन दिखाने के लिए ऐसा कहा जाता है। ऐसी चीजें बन्दर क्या जानेगा। बहुत सी कहावतें बडी निममता के साथ कही जाती हैं सत्य को ऐसे कठोर शब्दो म प्रस्तुत किया जाता है कि सुनने वाला अपमान की पीडा से तडप उठता है। पर दूसरो को इस प्रकार तडपाने म भी मजा आता है। यह हास्य की क्रूर भावना है। ४०४।

बदरे का धनु गाले मा।

बन्दर की सम्पति उसके मुह मे रहता है। वह कही जाता है तो जल्दी जल्दी खाता चला जाता है और गले म एकत्र करता जाता है। फिर किसी डाली पर बैठ कर इतमीनान से खाता है। उसका गाल फूला हुआ दिखाई देता है। इसी निरीक्षण पर कहावत बना है। इसका प्रयोग ऐसे आदमी पर होता है जो अपनी थोडी सी सम्पत्ति साथ लिये फिरता है पर दुनिया जानती है कि वह कैसे उसे प्राप्त हुई है, और कितनी है। सम्पत्ति प्रदर्शन की वृत्ति और उसके स्वल्प होने का संकेत इस कहावत म छिपा हुआ है। ४०५।

बाधा बछवा जाय मठराय।
बैठा ज्वान जाय तोंदियाय।

वह बछडा जो हमेशा बँधा रहता है काम चोर या मट्ठर हो जाता है। अधिक नही चल पाता। उसी प्रकार जवान आदमी बैठे बैठे बेकार हो जाता है। उसके तोंद बढ़ जाता है और वह अधिक कामकाज एव परिश्रम करने से घबराता है। अस्तु निष्कर्ष यह निकला कि जिस प्रकार बछड़े को खुल कर चरने देना चाहिए उसी प्रकार युवक को भी बैठने नही देना चाहिए नहीं तो दोनो निकम्मे हो जायेंगे। ४०६।

बाछा बल बहुरिया जोय ।
न घर रहै न खेती होय ।।

बैल की जगह पर बछड़े का इस्तेमाल किया गया तो समझना चाहिए कि खेती चौपट हुई । बछड़ा से खेती नही होती और उस घर को उजड़ा हुआ समझना चाहिए जिस घर म पुत्र बधू (बहुरिया) को पुत्र का पिता पत्नी रूप म रखे । ऐसी बहुत सी घटनाएँ समाज मे देखी गयी हैं कि पिता अपने पुत्र की पत्नी पर आकृष्ट है और उसकी वृद्धावस्था की इन्द्रिय लोलुपता इस अनुचित प्रकरण को उत्पन्न कर देती है । ऐसा होने पर निश्चित है कि घर नही चल सकेगा । ४०७ ।

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा ।
खेती उपजै अपने कर्मा ।।

पिता के धर्माचरण एवं पवित्र विचारो से पुत्रो की संख्या म वृद्धि होती है । ऐसा भी कहा जा सकता है कि पुत्रो की उन्नति होती है और खेती अपने परिश्रम स अच्छी होती है । खेती बाप क धर्म-अधम स सब ध नही रखती । वह तो अपने परिश्रम पर निभर हाती है । इस कहावत मे इसी बात पर जोर दिया गया है कि खेती के मामला म बाप दादा का पुण्य प्रताप काम नही देगा । अच्छी खती के लिए परिश्रम की आवश्यकता है । भाग्य को कोसने से कुछ नही होता । ४०८ ।

बाप राजि न खाये पान ।
उडिगे झोटई रहिगे कान ।।

बाप की कमाई म अगर ऐश न किया तो अपनी कमाई म क्या एश करेगा । बाप के पैसो से पान नही खाये तो अपने पैसा स पान खाने वाले के सारे बाल (चुटिया) नुच जायेंगे । नोचने के लिए केवल कान ही रह जायेंगे । अर्थात दिवाला निकल जायेगा क्योकि गृहस्थी चलाना और ऐश करना दोना एक साथ नही चल सकता । अस्तु फिजूल खर्ची यदि सभव है ता बाप के पैस स, खुद की कमाई से नही । बाप का दिवाला निकला भी तो शायद बेटा सभाल ले पर बटे का दिवाला निकला तो कौन सँभालगा ? ४०९ ।

बापु न मरिसि पेंदुकी बेटा तीरन्दाज ।

बाप ने एक फाख्ता भी नही मारा और बेटा बडे तीरन्दाज बनने की

कोशिश करते हैं। फाख्ता या पेन्की बडी ही भोली चिडिया है जिसका मारना कठिन नही है पर बाप ने कभी एक पेन्की भी नही मारी। पर बेटा अपनी बहादुरी का झण्डा लिये घूमते हैं और शेखी मारते हैं। दुनिया ऐसे शेखीखोरा की शेखी पर इस कहावत से प्रहार करती है। ४१०।

बासी बचे न कूकुर खायँ।

आशय यह है कि अन्न बरबाद नही करना चाहिए। इतना ही बनाना चाहिए जिससे बचे नही। पकी हुई चीजें बासी होने पर खाने लायक नही रहती अत ठीक अन्दाज से पकाना चाहिए। इस कहावत म ओर कोई विशेष व्यंग्यार्थ नही है। ४११।

बिडरे जोत पुरान बिया।
तेहिक खेती छिया बिया॥

जिसने अपने खेत की जोताई बहुत घना और अच्छी नही की है, (हल दूर-दूर चलाया गया है जिससे बीच-बीच मे कठोर भूमि छूट गयी है) और बीज भी पुराना डाला है, उसकी खेती निश्चित ही अच्छी नही होगी। अच्छी खती के लिए खत को अच्छी तरह जोतना चाहिए और बीज भी अच्छा डालना चाहिए। ४१२।

बिधि का लिखा को मेटन हारा।

भगवान का लिखा हुआ, कौन अन्यथा कर सकता है? अर्थात् जो जिसके भाग्य म है उसे वह भोगना ही होगा। ऐसे भाग्यवादी लोगो का विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य पूर्व निर्धारित है और उसी के अनुसार वह काम करता है और अपने कर्मों के अनुसार जीवन का भोग करता है। यही प्रारब्ध है जिसका लेखा विधाता करता है अत उसे कोई मिटा नही सकता। बहुत बुद्धिवादी लाग इस प्रारब्ध म विश्वास नही करते। वे यह नही मानते कि मनुष्य का भाग्य पूर्वनिर्धारित है। व समझते हैं कि मनुष्य स्वय अपना भाग्य निर्माता है और स्वय ही अपने जीवन को बनाने बिगाडने वाला है। पर जीवन म प्राकृतिक, सामाजिक एव मानसिक ऐसे तमाम तत्व हैं जो मनुष्य की कायमरीण को प्रभावित करते रहते हैं। अत निश्चित रूप से जीवन या अनन्त सभावनाओ को समझा नही जा सकता। ४१३।

बिन घरनी का घर।
जैसे नीम्बी का तर॥

बिना घर वाली के घर का कोई अथ नहीं होता। घर म रहना भी नीम के नीचे रहन के समान है। घर सना की पूण कल्पना घरवाला से जुड़ी हुई है। गृहस्थ जीवन म ही घर की कल्पना है जब मनुष्य ब्रह्मचर्याश्रम से निकलकर विवाह करता है, घर बसाता है और परिवार का लालन पालन करता है। तत्पश्चात तो वान प्रस्थाश्रम और सन्यास हैं जिन आश्रमो म घर त्याग की योजना है। घर की कल्पना गृहस्थी स जुड़ी हुई है और गृहस्थी बिना घरवाली के नही हो सकता। ४१४।

बिन घरनी घर भूत का डेरा।

इस कहावत का अथ लगभग पहले वाला कहावत का सा है, केवल घर के वातावारण का वणन अधिक है। बिना घरवाली के घर सूना रहता है। जहा सुनसान रहता हैं वहाँ भूता का वास माना जाता है। वह घर ऐसा प्रतीत होता है, मानो उसमे आत्मा नहा भूत रहते हा। इन दोना कहावता म घरनी पर विशेष बल दिया गया है। गृहस्थाश्रम म आकर मनुष्य को घर बसाना चाहिए और घरनी के होन स घर आबाद हा जाता है और उसके अभाव म घर बरबाद हो जाता है। घरनी=पत्नी। ४१५।

बिना बैलन खेती करै, बिन भयन क रार।
बिन मेहरारू घर कर, चौदह लाख लबार॥

यह एक नीति का दोहा है, कदाचित इसके लखक घाघ हैं। बिना बला के खेती करना बिना भाइयो के छेड़खानी या शरारत करना या झगड़ा करना बिना पत्नी के घर बसाना असम्भव है। यदि कोई ऐसा करता है वह यदि सोलह आन नही तो कम स कम चौदह आने, झूठा या मक्कार है।४१६।

बिन भय होत न प्रीति।

यह तुलसीदास की चौपाई का एक अश है। तुलसीदास न जीवन के व्यापक एव गम्भीर अध्ययन और अनुभव के बाद रामचरित मानस की रचना की। उनके गहरे अनुभवा पर आधारित यह कथन बहुत ही सत्य है। तुलसीदास जी यहाँ आदश प्रेम की व्याख्या न करके, जीवन के व्यावहारिक सत्य का उद्घाटन कर रहे हैं। इस कथन के सत्य का अनुभव प्राय होता रहता है विशेषरूप स उन

आदश प्रेमिया को तो और भी जो प्रेम म अपना पूण आत्म समपण कर बैठे हैं। आन्श प्रेम मे पूण आत्मसमपण चाहिए। अस्तु, आत्म सम्मान भी समपण करना पडता है परन्तु आत्मसम्मान के समपण के उपरान्त व्यक्ति समाप्त हो जाता है फिर किससे प्यार हो ?४१७।

बिरान धनु और मँगनी का अहिवातु।

दूसरे की सम्पत्ति माँगे हुए सोहाग की भाँति है। सोहाग मागने से नही मिलता। परन्तु मान लिया जाय कि किसी स्त्री न कुछ क्षणो के लिये सधवा बनने की आकाक्षा से किसी का पति माँग ही लिया हो या किसी व्यक्ति को अपना पति मान लिया हो—पर वह उसका नही है। अस्तु, जिस प्रकार मगनी का सोहाग एक क्रूर व्यग्य क समान है उसी प्रकार दूसरे को सम्पत्ति भी। दूसरे का सम्पत्ति से कोई लाभ नही होता क्याकि वह उसका उपयोग नही कर सकता, और जोखिम उठानी पडती है ? अस्तु, दूसरे की वस्तु व्यावहारिक दृष्टि स अर्थ हीन है।४१८।

बिलारि खाई तौ खाई न खाई तौ ढरकाई।

दुष्ट प्रकृति का मनुष्य स्वभाव मे बिल्ली की तरह होता है। जिस प्रकार बिल्ला या तो दूध मलाई वगरह चुरा कर खा जायगी या फैला देगा। दुष्ट मनुष्य भी दूसरे के अहित स बडा प्रसन्न होता है। दूसरे के हितो के लिए वह घी म मक्खी की तरह मरने के लिए तैयार रहता है। दूसरे का अपशकुन करने के लिए अपनी नाक तक कटाने के लिए तैयार रहता है। इस कहावत मे केवल एसे ही दुष्टो का वणन किया गया है जिनका उद्देश्य किसी को नुकसान पहुँचाना तो नही होता, पर व आदत स मजबूर होकर कुछ उलट पुलट कर ही डालते हैं।४१९।

बिलारिन का भितूरि सौंपब।

बिल्ली शब्द के स्थान म प्राय बन्दर शब्द का भी प्रयोग किया जाता है और कहावत क अथ मे कोई परिवतन नही आता। बिल्ली या बन्दर को यदि भण्डार सौप दिया जायगा तो निश्चित है कि वह सुरक्षित नहीं रहेगा। चोर के यहाँ धरोहर रखने के समान है। बच्चो से कहा जाय कि यह अमरूद का पेड ताके रहना इसके अमरूद कोद खाने न पाये पर बच्चे स्वय सारे अमरूद तोड कर खा जायेंगे। तकवान का मकसद पूरा ही न होगा।४२०।

बिलरेऊ की भागि ते सिकहर टूट ।

सीका या छीका रस्सी का बना होता है जिसमें दूध दही मक्खन वगैरह रखा रहता है । उसका टूट कर गिरना बिल्ली की भाग्य का जागना ही समझिये । वह यही तो चाहती थी । तो जो व्यक्ति जैसा कुछ चाहता हो संयोग से वैसा ही हो जाये तो इस कहावत का प्रयोग होता है । संयोग से अनपेक्षित रूप से यदि कोई लाभ हो जाय और ऐसे व्यक्ति को जो उसके योग्य न हो (कम से कम कहावत का प्रयोग करने वाला उसे इस योग्य नहीं समझता) तो इस कहावत को चरितार्थ करता है ।४२१।

बीबी न पाकैं तो न पाकैं पादिन तो सुयनिहा पारि डारेनि ।

यह घरेलू कहावत है जिसकी पृष्ठभूमि में घरेलू काम काज की मनक है । संयुक्त परिवार में अनेक स्त्रियां होती हैं जिनमें से कुछ आराम पसन्द भी होती हैं और घर का काम नहीं करतीं । ऐसी स्थिति में घर की पुरखिन प्राय उसे काम करने के लिए कहती रहती हैं पर बुरी आदत पड जाने से वह फिर भी नहीं करती । फिर उस पर ताने कस जाते हैं और किसी दिन इन तानों से तंग आकर वह काम करने लगती है । काम करने की आदत न होने से उसमें काम बनता नहीं और वह नुकसान कर बैठती है जिस पर उसे यह ताना सुनना पड़ता है ।४२२।

बुध बउनी, सुक लउनी ।

यह खेती के सगुन से सम्बन्ध रखती है । बुधवार के दिन बोना प्रारम्भ करना चाहिए और शुक्रवार के दिन काटना शुरू करना चाहिए । मुझे मालूम नहीं बुध को बोने के लिए क्यों अच्छा माना है, जब कि बुधवार को सामान्यत निकम्मा, खाली दिन मानते हैं । शुक्रवार लउनी के लिए ठीक है क्योंकि शुक्रवार लक्ष्मी का दिन माना जाता है उस दिन फसल काटने से लक्ष्मी जी घर आयेंगी ।४२३।

बूढ सुआ राम राम नहीं पढत ।

वृद्ध आदमी कुछ नया नहीं सीख सकता यह एक साधारण सत्य है । वृद्धावस्था के कारण व्यक्ति में जीवन के प्रति वह विधेयात्मक रुचि नहीं रह जाती जो बालक में होती है और उसकी स्मरण शक्ति तथा अन्य स्नायविक शक्तियां क्षीण हो जाती हैं जिससे वह कुछ नया आसानी से नहीं सीख सकता ।

उसकी प्रवृत्तियाँ इतनी दृढ़ एवं निश्चित हो जाती हैं कि उनसे पृथक नहीं हो सकता। कुछ नया सीखने के लिए स्वभाव में लचीलापन चाहिए। नये को स्वीकार कर सकने की मानसिक तैयारी होनी चाहिए। ४२४।

बूढ़े मुह मुँहासा लोग देख तमासा।

युवावस्था में खून में गर्मी रहती है और इसी गर्मी के कारण प्राय युवा स्त्री पुरुषों के गालों में छोटे छोटे दाने निकलते रहते हैं जिन्हें मुँहासे कहते हैं। वृद्धावस्था में रक्त की उष्णता समाप्त हो जाती है और मुहासे निकलने का कोई कारण नहीं होता। पर कभी कभी कुछ बूढ़ों के मुह में भी मुहासे निकल आते हैं जो काफी अजीब बात है। इसलिए वह एक प्रकार का तमाशा ही हो जाता है। आशय यह कि यदि वृद्ध व्यक्ति युवकों की सी हरकत करने लगते हैं तो व्यग्य रूप इसी कहावत को चरितार्थ करते हैं। ४२५।

बेमन का बिआहु रचवन सग भौंरी।

जब कोई व्यक्ति परिस्थितिवश बेमन से कोई काम करता है, जिसे वह करना नहीं चाहता तो ठीक से नहीं करता। बेमन का विवाह चारपाई के पायों या मचवा के साथ भाँवर घूमने के समान है। वह पुरुष जो विवाह नहीं करना चाहता था और उसके साथ किसी लडकी का विवाह कर दिया गया तो वह व्यक्ति उस लडकी के लिए मचवा के समान ही निष्प्राण है। अर्थात बेमन विवाह करना मचवा के साथ विवाह करने के समान ही है। बेमन काम करना न करने के समान है। ४२६।

बैठे ते बेगार भली।

यह कहावत बडी ही सारगर्भित है। निठल्ले या सत्तार या बेकार बैठने से बेगार का काम करना भी अच्छा है। काम न करने से मनुष्य आलसी हो जाता है। और आलसी आदमी बिल्कुल निकम्मा होता है। काम न करने से आलस्य की आदत पड जाती है जो बहुत घातक होता है। काम करते रहने से काम करने की आदत बनी रहती है। अत बेगार या बेकार का काम करने से भी लाभ है क्योंकि जब अच्छा, फायदे का काम मिलता तो उसे वह बडी रुचि से करे। काम करने की आदत डालने की सीख इसमें है। ४२७।

बल चौंकना टुटही नाव।
ई कौनेओ दिन देहैं दांव ।।

चौंकने वाला बैल और टूटी हुई नाव किसी न किसी दिन जरूर धोखा देंगे। अत सावधान रहना चाहिए या स्थिति म सुधार लाने की कोशिश करनी चाहिए। चौंकन वाले बैल स छुटकारा पा लेना चाहिए और टूटी नाव को ठीक कर लेना चाहिए या नई नाव लेनी चाहिए। ४२८।

बैलन कूदा, कूदी गोनि।
यह तमासा देखै कौन ।।

सफेद झूठ बोलने का असफल प्रयत्न। बैल का कूदना और बोरे का कूदना या गिरना एक प्रकार का नही हो सकता। अधा व्यक्ति भी केवल ध्वनि या धमाके से समझ जायेगा। पर उसे समझाने के लिए झूठ बोला जाये। जिसके समक्ष यह झूठ बोला गया हो वह समझता हो कि यह झूठ है ता वह कहता है कि मुझे मत समझाओ की बोरा गिरा है मैं जानता हू बैल कूद गया है। यह झूठ किसी और को समझाना। ४२९।

बोली लोखरि फूली कांस।
अब नाहिन बरखा कै आस ।।

लोमडी बोलने लग गयी हो और कांस फूलने लग गया हो तो समझ लेना चाहिए कि अब वर्षा की आशा नही है। लोमडी सर्दी के लिए बिल खोदने की तैयारी म शोरगुल मचाने लगती हैं और कास वर्षा ऋतु हाने के बाद फूलता है। अस्तु यदि य दोनो लक्षण उपस्थित हो जायें तो समझना चाहिए कि वर्षा का समय बीत चुका है। और अब वर्षा नही होगी। ४३०।

ब्याहे न लाई पोति, गौने लाई जग जोति।

यह भी एक घरेलू कहावत है और प्राय बडी बूढियो के मुह से सुनी जाती है। यह सभी को अपेक्षा होती है कि जब बहू ब्याह कर आयगी ता अनेक प्रकार के आभूषण और वस्त्रादि लायेगी। उस समय सभी गाँव की औरतें देखने आती हैं। उस समय तो एक पोत का दाना भी लेकर नही आया तो औरतो को समझाया गया कि गौने मे लायेगी। तो स्त्रिया कहती हैं जब विवाह म कुछ नही लायी तो गौने मे क्या लायेगी। अवसर पर किसी बात के न होने पर यह कहावत चरितार्थ होती है। ४३१।

भरी जवानी माभा ढीला।

जवानी म अगर शरीर शिथिल हो गया तो आगे भगवान ही पार लगाये। किसी ढील ढाल कमजोर युवक पर तरस खाते हुए लोग इस कहावत का प्रयोग करते हैं। युवावस्था और शिथिलता ये दो विरोधी स्थितियाँ हैं, जो किसी का पसन्द नहीं। ४३२।

भरी नाव माँ सुप्पू भारी।

सूप बहुत हलकी चीज है जो नाव के बोझ को नहीं बढायेगा पर नाविक उसे नाव म रखने के लिए तैयार नहीं। अपने को वहाँ स्वीकृत कराने की अपील है। तमाम लोग किसी जलसे म शामिल हैं पर तु एक साधारण व्यक्ति को उसमें शामिल होने का अवसर नहीं दिया जाता। ऐसी स्थिति म कहा जा सकता है कि क्या भरी नाव मे सूप ही भारी है। सभी शामिल हैं, उसको भी शामिल हो जाने दिया जाय। ४३३।

भले मारि दीन्हयो रोअसिहो रहैं।

रोआसे आदमी को कोई बहाना चाहिए कि वह रोने लगे। किसी का मार देना उसके रोने का कारण बन जाता है, वस्तुत वह बिना मार के भी रोने वाला था। उसे इस मार म रोने का अच्छा बहाना मिल गया। जब कोई व्यक्ति कुछ करने के लिए पहले से ही तैयार होता है और उसके अनुकूल कोई कारण उत्पन्न हो जाता है तो वह उस कारण के बहाने स्वतन्त्र होकर वह काम करने लगता है। पर तु उसके इरादे छिपते नहीं और चतुर लोग भाँप लेते हैं कि असली कारण क्या है। ४३४।

भाँडन साथ खेती कीन गाय बजाय उनहिन लीन।

भाँडों के साथ खेती करना सब कुछ खो देने के समान है। भाँडों का पेशा ही नाच गान एव मनोरजन करना है। उनके साथ खेती करने पर अकेले सारा काम करना पड़ेगा और वे नाच गाकर तुम्हारा मनोरजन करेंगे जिसके पारिश्रमिक के रूप म वे खेत की सारी पैदावार ले लेंगे। अत खेती का परिश्रम तुम्हारा और फायदा उनका। ऐसे व्यक्तियों के साथ साझे का काम नहीं करना चाहिए। ४३५।

भागे भूत क लगोटिही सही।

छ पावना होता है पर मिलना असम्भव होता हो तो जो कुछ मिल बहुत समझना चाहिए। मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने कर्ज लिया ही। बहुत पीछे पड़ने पर वह भाग जाता है या अन्यत्र कहीं चला कुछ चीजें छोड़ जाता है। उन्हीं को लेकर कर्ज देने वाला सन्ताप चलो भाग भूत की लँगोटी ही सही। ४३६।

भूख भली कि पुतहू का जूठ ?

है जिसमें सकेत भी छिपा हुआ है। भूखे रहना ठीक है या पुत्र या कर भूख मिटा लेना ठीक है। उचित तो यही है कि भूख ाय और जूठ अन्न न खाने का मर्यादा का निर्वाह किया जाये पर क सलाह नहीं है। मर्यादा के निर्वाह म खतरा है अत ऐसी स्थिति प्रश्न को भूलकर जीवन निर्वाह का यत्न करना चाहिए। यही केत इस प्रश्न वाचक कहावत म छिपा हुआ है। आपद् धर्म भिन्न ३७।

भूखे बेर अघाने गाडा।
ता ऊपर मूरी का डाडा॥

ाबधी कुछ स्थूल नियम है। भूखे या खाली पेट बेर खाने चाहिए। ा होने पर गन्ना चूसना चाहिए और उसके ऊपर मूली खानी ंतु मूली और गन्ना खाली पेट खाने से पेट म गड़बड़ी करते हैं पर खाये जा सकते है। ४३८।

भुतन घर बहुरिया नहीं टिकती।

ष्ट प्रवृत्ति के लोगो क यहाँ अच्छी चीजें नहीं टिकती। दूसरा अर्थ ाता है कि जिस घर म कोई न हो या कोई मर्द न हो तो बहुएं नहीं ओं के टिकने के लिए अनुकूल वातावरण आवश्यक है। ाकिन्तु जब प्रतिकूलता के कारण कोई अच्छा आदमी छोड़ कर चला जाता है त का प्रयोग होता है। ४३९।

भेदिहा सेवकु सुन्दर नारि।
जीरन पट कुराज दुख चारि॥

घर का भेद देने वाला नौकर सुन्दर औरत, फटे कपड़े तथा कुराज्य, ये चार महान दुख के कारण है।४४०।

भेडिन नाल बधावा।

भेंड के पैरो में नाल नहीं लगायी जा सकती है, पर घोड़े की तरह दौडने वाली चलन का दिखावा करने के लिए देखा देखी भेड ने भी अपने पैरो में नाल लगवाया। यह व्यंग्य है। ऐसे व्यक्ति जो देखा देखी कुछ बडे काम करने की असफल चेष्टा करते हैं, इस कहावत को चरितार्थ करते हैं।४४१।

भै गति साँप छुँछूदर केरी।

दुविधा में पड जाने की स्थिति में इस कहावत का प्रयोग होता है। मानव जीवन में अनेक ऐसी धर्म सकट की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं कि समझ में नहीं आता कि क्या किया जाये। साँप चूहे के धोखे में छछूंदर निगल जाता है, पर उसकी गन्ध उस बर्दाश्त नहीं होती परन्तु न तो अब वह उगल सकता है और न हजम ही कर सकता है। दोनों सभावनाएँ लगभग समाप्त हो गया हैं। ऐसी विकट स्थिति में इस कहावत का प्रयोग होता है।४४२।

भैंसा बरध के खेती करैं, करजा काढि के खाय।
बैला खैंचे यह कती का, भैंसा अते ल जाय॥

घाघ की बुद्धिमत्ता का यह नमूना है। भैंसा और बैल की जोडी बनाकर खेती करने वाला कर्ज लेकर जीवन निर्वाह करने वाला अपने जीवन में सन्तुष्ट नहीं हो सकता। बैल अपनी ओर खीचता है और भैंसा अपनी ओर। साहूकार अपनी ओर खीचता है। इस तनावपूर्ण स्थिति में उसे कभी शान्ति नहीं मिल सकता।४४३।

भैंसि के आगे बीन बाजै भैंसि खडी पगुराय।

यह बहुत ही लोक प्रिय कहावत है। भैंस के सामने बीन बजायी जा रही है पर वह निश्चिन्त खडी पागुर कर रही है। अन्योक्ति के रूप में इसी स्थिति को मानव जीवन पर घटाया गया है। व्यंग्य रूप में यह ऐसे व्यक्ति पर लागू होती है

जिसमे कला के प्रति काई अभिरुचि नही हाती तथा किसी प्रकार का बौद्धिक परिष्कार नही होता, और किसी सुन्दर वस्तु की सराहना नही कर सकता। ऐसा व्यक्ति भस के समान ही है जो बीन के माधुर्य से असम्पृक्त है। ४४४।

(म)

मगर बुध उत्तर दिसि कालू,
सोम सनीचर पूरुब न चालू,
जो बेफ्फ का दक्खिन जाय,
बिना गुनाहै पनहीं खाय ॥

यात्रा शकुन की कहावत हे। मगलवार और बुधवार को उत्तर की ओर नही जाना चाहिए। सोमवार तथा शनिवार को पूव दिशा की ओर नही जाना चाहिए। और जो गुरुवार के दिन दक्षिण दिशा की ओर जाता है, वह निरपराधी होने पर भी दण्ड पाता है अर्थात् कष्ट पाता है। ये सामान्य विश्वास की बातें हैं, जिसम तर्क का कोई प्रश्न नही उठता। ४४५।

मघा क बरसे, माता के परसे।

धरती तभी तुष्ट होती है जब मघा नक्षत्र म मेघ की झड़ी लगता है और बालक तभी तृप्त होते हैं जब माँ प्यार से उन्हे परोस कर खिलाती है। हमारे क्षेत्र में मघा नक्षत्र म माँ विशेष रूप से सभी बच्चा को आमन्त्रित करता है और अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ बना कर तथा मगा कर खिलाती है। ४४६।

मघा भुम्मि अघा।

वही बात है। मघा नक्षत्र की वर्षा से भूमि अघाती अथवा तृप्त होती है। बात यह है कि जब साधारणत जोर की वर्षा हाती है तो पानी बह जाता है। धरती सोख नही पाती। मघा नक्षत्र म पानी धीरे धीरे बरसता रहता है, जो बह कर निकल नही जाता, बल्कि उसे धरती सोख लेती है। मघा म फुहारों की झडी कई दिनो तक लग जाती है। ४४७।

मडये माँ मैं, कि तो मोर ननदोय।

मण्डप के नीचे या ता मैं ही आकर्षक या महत्वपूर्ण हूँ या मेरा ननदोई जो

मरी ननद का ब्याह वर ल जायेगा। विवाह के अवसर पर सरहज का विशेष महत्व होता है। श्री वर जो स मजाक करने तथा उनके साथ जाने तक की इच्छा लेकर सरहज उस पर हर तरह से हावी होना चाहती है। मण्डप म कलेव के समय सरहज की महत्ता का कभी भी देखा जा सकता है। उसी निरीक्षण के आधार पर किसी व्यक्ति पर व्यग्य किया गया है जब वह आवश्यकता से अधिक महत्व पूर्ण बनने या दिखाने की कोशिश करता है। ४४८।

मन चगा तौ कठौती मा गगा।

मन साफ हो, पवित्र हो तो कठौती मे रखा हुआ साधारण पानी भी गगाजल के समान निर्मल हो सकता है। मन की शुद्धता एव पवित्रता पर बल देते हुए गगा की पवित्रता से उसकी तुलना की गयी है। मनुष्य गगा नहाने, पूजा पाठ करने तथा अन्य धार्मिक और चारित्रिताओं के करते हुए भी मन से अपवित्र एव दुष्ट भावनाओ वाला हो सकता है। उसका गगा स्नान व्यर्थ है और यदि मन पवित्र है तो गगा स्नान की आवश्यकता नहीं। अस्तु मन की पवित्रता ही मुख्य है। ४४९।

मरी बछिया बाह्मन के नाम।

हिन्दू कर्मकाण्ड म गौदान महत्वपूर्ण माना गया है। अनेक अवसरो पर गौदान की व्यवस्था है। परन्तु परम्परा पालन के अन्तर्गत उसका मूल प्रेरणा समाप्त हो गयी है। अस्तु किसी साधारण सी कमजोर बछिया या गाय का दान करके धर्म परम्परा का पालन कर लेते हैं। कर्मकाण्ड मे तो अब सवा रुपये मे गौदान हो जाता है। धर्म के नाम पर यह भूठ चल रहा है। तो ब्राह्मण को दान मे मरियल गाय ही मिलेगी। अत जब कभी कोई व्यक्ति किसी स कोई दान पाता है, परन्तु वह अच्छा नहीं होता तो वह इसी कहावत का उपयोग करता है। ४५०।

मरे पूत के बड़ी बड़ी आँखें।

बीत गयी स्थिति हमेशा बड़ी महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। यह स्वाभाविक है। बेटे के मर जाने के उपरान्त जो याद रहता है वह है स्नेहपूर्ण स्मृति जिसमें उसकी विशेषताएँ ही उभरती हैं। पर प्राय ऐसे मौकों पर लोग बहुत अधिक बढ़ा चढ़ा कर बातें करते हैं जो यथार्थवादियो को नहीं रुचता और वे इन शब्दों में कटाक्ष करने से नहीं चूकते। अर्थात बीती हुई चीज की बड़ी बातों पर यह कहावत गहरा आघात करता है। ४५१।

मर न माचा छोड ।

न मरता है और न खाट खाली करता है । जब लोग किसी से ऊब जाते हैं और उसस छुटकारा पाना असम्भव-सा पाते हैं तो उस समय प्राय म ाली के समान ऐसे अभद्र श द उनके मुह स निकल जाते हैं । कोई व्यक्ति वृद्ध है वर्षों स खाट म पडा रहता है और न मरता है तो सेवा करन वाला की ऊब इन शब्दो म व्यक्त हो जाता है । बहुत कठोर मन के भाव हैं । ४५२ ।

महा के घर कहाँ, जहा देखो तहाँ ।

जो व्यक्ति सवत्र पहुच जाता है और किसी प्रकार की अडचन का अनुभव नहीं करता, जिसे किसी प्रकार का सकोच नही होता, ऐसे व्यक्ति के बारे म यह कहावत ठीक लागू होती है । इस कहावत को पूरी तरह चरिताथ करन वाले नारद मुनि हैं जो सवत्र पहुचे रहते हैं । ४५३ ।

माँगि न आव भीख ।
तौ सुरती खाये सीख ॥

जिसे भीख मागना न आता हो वह तम्बाकू खाना शुरू कर दे भीख माँगना भी सीख जायगा । तम्बाकू की लत पड जाने पर उसका छोडना असभव है । अगर तम्बाकू पास म नहीं है तो वह बिना हिचक के माग कर खा लेगा और इस तरह मागना सीख जायेगा । ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब तम्बाकू चुक जाती है, तब मागने के सिवाय कोई चारा नहीं होता । यह एक व्यग्य ह तम्बाकू खाने वाला के सम्बन्ध मे । ४५४ ।

मागे बनिया गुड ना देय ।
घूसा मारे भेलो देय ॥

बनिया कजूस माना जाता है और उसके लिए यह स्वाभाविक ही है कि वह माँगने पर चीज न दे । अगर वह दान करता रहेगा तो व्यापार क्या करेगा ? अत मागने पर बनिया गुड नही देता । पर उसे धमकाओ या मारो तो वह बहुत सा भेली भर गुड दे देता है । इस उक्ति से बनियो के सम्बन्ध म दो बातें लक्षित होती हैं—एक तो यह कि वह कजूस होता है और दूसरी बात यह है कि वह डरपोक होता है । इसी बात को किसी के ऊपर भी लागू करते हुए यह सकेतित किया जाता है कि गुड चाहते हो तो बल प्रयोग करो मिल जायगा ऐसे नहीं । ४५५ ।

माघ मास जो पड न सात।
महँग नाजु जाग्यो मोरे मीत॥

माघ के महीने म यदि सर्दी न हुई तो यह समझना चाहिए कि अनाज महँगा होगा। ४५६।

माघ सकारे, जेठ दुपहरे, भादौं आधी रात।
इन समया मा भाडा लागै, मानौं छाती फाट॥

माघ के महीने म प्रात काल, जेठ के महान मे दोपहर म, भादौं की काली बरसाती रात म यदि टट्टी लगे तो मुसीबत ही है। माघ महीने मे सुबह बहुत सर्दी होती है, जेठ की दोपहर म कडी धूप होती है और भादौं की रात म जब पानी बरसता हो, पानी सर्वत्र भरा हो, साँप बिच्छुओं का डर हो उस समय टट्टी के लिए बाहर जाना पडा तो बहुत कष्ट होता है। शहरो म ऐसी कोई समस्या नही होती क्योंकि पाखाना घरो मे होते हैं। ४५७।

माघ पूस बहै पुरवाई।
तो सरसों का माहू धाई॥

पूस और माघ महीने म यदि पूर्वा हवा चली तो सरसो म माँहू (एक प्रकार कीडा) लग जायेगा और सरसो नष्ट हो जायेगी। पुर्वा हवा बहुत ही निकम्मा होता है। इसम नमी होती है और वह न केवल फसल को ही चौपट करती है, बल्कि मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी बुरा असर करती है। कामसूत्र के अनुसार पुर्वा हवा म समाधान का निषेध है। ४५८।

माटी का भवानी टीका टीका माँ बिलानी।

मिट्टी की बनी देवी की प्रतिमा, पूजा करते करते, टीका लगाते लगाते समाप्त हो गयी। किसी उपयोगी वस्तु के टिकाऊ न होने पर यह कहावत कही जाती है। ४५९।

माटी की भवानी पोना क नैवेद।

जैसा देवता वैसा ही पूजा। मिट्टी की भवानी हैं तो नैवेद्य भी पोना की है। (पोना का न के टाटे के हलर मीठे लड्डू। पोना का पिना भी कहते हैं। पिना के बारे म प्रचलित है—'पिनो दिम पत्तनम्')। अर्थात जैसा व्यक्ति

होता है वैसा ही उसका मान-सम्मान होता है। कोई व्यक्ति जब अपने बारे म बहुत शिकायत करता रहता है कि मुझे उचित सम्मान नहीं मिला तो चतुर लोग कहते हैं कि माटी की भवानी पीना को नौवेद्य। दूसरी खडी बोली की कहावत है—मुह देख कर थप्पड मारना। इसस अधिक भी न्यग्याथ हो सकता है। मिट्टी की देवी के लिए पीना की नैवेद्य? अथात किसी साधारण चीज की नैवेद्य होनी चाहिए। ४६०।

माय न जानैं मायकु लरिका पूछै निनाउरु।

जितना अधिकार औरत का अपने मायके पर होता है उतना और किसी का नहीं। परन्तु माँ को तो उसके माय के म कोई पूछता नहीं पर बेटा ननिहाल की चिन्ता मे है। अर्थात् जहाँ जिनका स्वाभाविक रूप से घनिष्ठ सम्बन्ध हो वहाँ उसकी पूछ न हो कन्दर ने हो—और दूसरा व्यक्ति जिसका इतना घनिष्ठ सम्बन्ध न हो वह उस सम्बन्ध के लिए अधिक उत्सुक हो तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं। मा को तो मायके वालो ने कभी पूछा नही और बेटा ननिहाल ननिहाल चिल्ला रहा है। ४६१।

मारा चोरु उपासा पाहुन फिर नहीं लौटत।

मार खाया हुआ चार और भूखा मेहमान कभी वापिस नहीं आता। चोट की वजह से रहस्य के खुलने के डर मे या हिम्मत हार जाने के कारण चोर फिर उसी जगह कभी नही जाता। मेहमान किसी के यहाँ यदि भूखा रह गया तो फिर दोबारा वह अपना अपमान कराने और भूख से मरने नही आयगा। यह एक प्रकार का नीति वाक्य है। ४६२।

मिभुकुरिन के सखरमा।

मेढकी को भी जुकाम होने लगा। मढकी तो हमेशा जल म रहती है। सर्दी और पानी ही उसका जीवन है और यदि उसे भी जुकाम होने लगे तो हद है। अस्तु, यदि कोई व्यक्ति कठिन परिस्थितियो गरीबी और मुसीबतो का आदी हो, और वह उन मुसीबतों की *शिकायत करता हो, और अपने को परेशान बतलाता* हो तो लोग कहते हैं कि मेढकीरो जुकाम पैगशुद।" अर्थात् मढकी को भी जुकाम हो गया जो हमेशा पानी म ही रहती है। ४६३।

मिभुकुरी मदारन चलीं।

जब कोई साधारण व्यक्ति कोई असाधारण काम करने के प्रस्ताव और प्रयत्न करता है तो कुछ सुविधा सम्पन्न व्यक्तियों को उसके उत्थान में प्रयत्न अच्छे नहीं लगते तब व्यग्य मे वे कहते हैं कि मढकी भी मदार पर चढने चली है। अपने को सबके बराबर बनाने के प्रयत्न में निम्न वर्ग के लोगों पर यह आक्षेप प्राय किया जाता है। ४६४।

मीठ और भरि कठौता।

एक तो मीठा और वह भी कठौता भर कर असभव है। गुण और मात्रा दोनों का लाभ एक साथ दुर्लभ-सा ही होता है। कोई चीज अच्छी हो और मात्रा म भी अधिक हो ऐसा कदाचित ही होता है। ४६५।

मुह देखि के थप्पड मारब।

अर्थात व्यक्ति को पहचान कर और अपने सम्बन्धों के अनुसार काम करना। मान लीजिए सत्यनारायण की कथा हुई है। सबको बताशे बाँट जा रहे हैं। सबको बराबर ही बताशे देने चाहिए, परन्तु यदि बाँटने वाला अपने मित्रों को अधिक और दूसरों को कम दे तो आक्षेप रूप म इसी कहावत के द्वारा अपने काय की निन्दा सुनेगा। ४६६।

मुह देखे का ब्यौहार।

जब तक व्यक्ति सामने है तब तक तो मीठी मीठी बातें और जाते ही उसको भूल जाना और फिर उसका आवश्यक कार्य भी न करना। ऐसे मुँह देखे या मुँह देखी प्रीति करने वाले 'तोता चश्म' आदमी बहुत होते हैं। इतना ही नहीं इससे बढ़ कर होते हैं। मुह पर तो प्रशसा करते हैं पर पीठ पीछे निन्दा। ४६७।

मुह माँ राम बगल माँ छुरी।

आचरण तो ऐसा करते हैं मानो बड़े भक्त हो पर निरन्तर कपट व्यवहार म तल्लीन रहते हैं। मुह से तो राम राम का जाप करते रहते हैं जिसम यह प्रमाण पडता है कि आदमी बड़ा धर्म भीरु और सच्चा है, पर वास्तविक रूप म वह कपटी और धोखे बाज है। ४६८।

मुए चाम ते चाम कटाव, भुई सकरी मा सोव।
घाघ कहैं ई तो पू भकुआ उढरि जाय औ रोवै।।

घाघ की यह उक्ति बहुत ही विख्यात है। मरे हुए चमड़े से अपना चमड़ा कटवाना—अर्थात जूते पहन कर पैरों को कष्ट देना (जूते काटते हैं) जमीन म साने पर भी तग या सकरा जगह म सोना, और उन्गी के चले जाने पर रोना यह बेवकूफी है। ब्याहता जाये तो रोना ठीक भी है पर उढरी तो जैसे आयी थी वैसे हो जा भी सकती है। ४६९।

मूड (भ्राटन) के मुडाये मुर्दा नही हलुकात।

शरीर की तुलना मे बालो का वोझ कुछ नही होता। इसलिए सिर के बालो या गुसाग के पास के बालो के बना डालने से मुर्दे का वोझ कम नही होगा। जिस समय कोई व्यक्ति किसी समस्या के सुलझान के लिए कोई ऐसा सुझाव पेश करता है जिससे समस्या का समाधान नही होता, तो इसी कहावत का प्रयोग करते हैं। अर्थात् ऊपरी समाधाना स कोई लाभ नही। ४७०।

मूड मुडाये दुई नफा।
गरदन मोटो सिर सफा।।

सिर के बाल बनवाये रखने से दो लाभ होते हैं एक तो गरदन मोटी होती है और दूसरे सिर साफ रहता है। बाल रखाना पिछली पीढ़ी तक विशेष रूप स ग्रामो म, अच्छा नही समझा जाता था। पर अब तो सभी बाप और बेटे बाल रखाये हुए मिलते हैं। अब अग्रेजी कट बालो को समाज मे स्वीकार कर लिया गया है। ४७१।

मूड़ मुडीत पाथर पर।

सिर मुँडाते ही ओले गिरे। बाल सिर की कुछ रक्षा कर सकते थे। पर वे ओले उस समय गिरे जब सिर के बाल साफ कर दिये गये थे। उस समय किसी कठिन स्थिति का उत्पन्न होना जब उसका प्रभाव सबसे अधिक भयानक हो सकता है। किसी कार्य के प्रारम्भ म ऐसी कठिन स्थिति का पैदा होना सबसे अधिक घातक होता है। फसल के काटते ही भारी वर्षा शुरू हो जाय तो अनाज सड जायगा और ओसाना और माडना असभव हो जायगा। ऐसी स्थिति म यही कहा जायगा मूड़ मुडीतै पाथर परे। ४७२।

मूँड मुँडावै औ छूराते डेराय।

सिर के बाल उस्तरे से साफ कराये तो उस्तरे के लगने से डरे, और जो सिर मुड़ाना ही नही है तो उस्तरे से क्या डरना। जहा जिस आघात या तकलीफ की संभावना ही नही है तो डरने की भी जरूरत नहीं है। अर्थात् ऐसा कोई काम न करना जिससे किसी दुःखद स्थिति के प्रकट होने की संभावना हो, तो इस कहावत का उपयोग किया जा सकता है। ४७३।

मैदे गोहूँ, ढेले चना।

जो खेत अच्छी तरह जोता पट्टाया गया है और जिसकी मिट्टी मैदा की भाँति बारीक होकर एक सा हो गयी है, उस खेत में गहूँ अच्छा पैदा होगा। अतः गेहू के लिए खेत को अच्छी तरह बनाना चाहिए। परन्तु चना ढेले वाले खेतो में खूब होता है। अतः चना पैदा करने के लिए अधिक परेशान होने की जरूरत नहीं। चना तो जुठैल खेत में भी खूब होता है। धान काट कर एक बार जोत कर उसी खेत में चना बो देने से भी खूब उगता है। ४७४।

मोर पिया मोरि बातौं न पूछै मोर सुहागिनि नाम।

पति अपनी पत्नी की बात भी नहीं करता और पत्नी है कि अपने पति पर बड़ा गर्व करती रहती है। जब ऐसी एक तरफा स्थिति मानवीय सम्बन्धो में उत्पन्न हो तो यह कहावत उपयोगी होती है। प्रायः हम बड़े सत्ताधारी एवं अधिकारी व्यक्तियो को अपना मित्र या रिश्तेदार बताते फिरते हैं परन्तु जिनकी हम चर्चा करते नहीं अघाते वे हमारी चिन्ता भी नही करते, कभी-कभी उन्हें हमारा नाम भी याद नही होता ऐसे सम्बन्ध के प्रति गर्व करने वालो पर उपर्युक्त कहावत चरितार्थ होती है। ४७५।

मोर पेट हाऊ मैं न दैहौं काऊ।

मेरा पेट बहुत बड़ा है। मैं किसी को नही दूँगा। स्वाभाविक है कि जब किसी व्यक्ति ने अपनी आवश्यकताओं को इतना अधिक बढ़ा लिया है कि वह उसकी पूर्ति नही कर पाता तो दूसरो की आवश्यकताओं को क्या पूर्ति करेगा? ऐसे पेटू स्वार्थी व्यक्ति पर यह व्यंग्यबाण है। ४७६।

(य)

यह मुह का चटनी ।
(बडा मुँह चटनी का)

चटनी इस मुँह के लिए नहीं है । जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु की अभिलाषा रखता हो और लोग उसे उसके योग्य नहीं समझते तो बडी निममता के साथ इस कहावत का प्रयोग करते हैं । ४७७ ।

यह ईगुर कै माया ।
कहूँ घाम कहूँ छाया ॥

ईश्वर की माया निराली है क्योंकि एक ही समय कहीं धूप है और कहीं छाया है । अनेक रूपी एव विविधतापूर्ण जगत की इन शब्दो म व्याख्या की गयी है । किसी को सुख और किसी को दुख—यही बहुरगी दुनिया है । प्राय सच्चे भल आदमी को दुख उठाने पडते हैं और झूठे एव मक्कार मजे करते हैं । ईश्वर की माया है, जिसके सामने मनुष्य की इच्छा अनिच्छा का कोई महत्व नहीं । ४७८ ।

(र)

ररा के आए ररा ।
खीस निपोरे परा ॥

निधन और निलज्ज व्यक्ति के यहाँ कोई दूसरा निधन और निलज्ज व्यक्ति आया पर उसे कोई चिन्ता नहीं । बेशर्म आदमी स्वागत सत्कार करने की बजाय हसता हुआ लेटा है । जसा मेहमान है वैसा ही मजबान भी है । ऐसे मेजबान के घर केवल बेशर्म महमान ही जायेंगे । अर्थात् जब दोनो एक ही प्रकार के सामर्थ्यहीन व्यक्ति हो और जिन्ह अपनी असमथता के प्रति कोई लज्जा का भाव न हो तब इस कहावत का उपयोग किया जाता है । ४७९ ।

रसरी आवत जात ते सिल पै होत निसान।

रस्सी मुलायम होती है और सिल (शिला) कठोर, परन्तु बार बार के घर्षण से मुलायम रस्सी भी पत्थर में गहरा निशान बना देती है। तात्पर्य यह कि बार बार के प्रयत्न से कठिन से कठिन कार्य साध्य हो जाते हैं। यह एक बहुत आशावादी एवं प्रेरणोत्पादक दृष्टान्त है। इसके जरिये निराश एवं थके हुए मन को बड़ा बल मिलता है। ४८०।

रसरी जरि गै मुदा ऐंठनि न गै।

रस्सी जल जाती है पर उसकी ऐंठन बनी रहती है। जब कोई अभिमानी व्यक्ति असफल होने पर भी अपनी स्थिति को न समझते हुए अभिमान करता है, तो समझदार समाज यही कह कर सन्ताप कर लेता है कि रस्सी जल गयी पर ऐंठन न गयी। झूठे अभिमान पर यह कटाक्ष है। ४८१।

रहैं का टटिया मा सपन महलन के।

स्थिति तो निधना की है, परन्तु आकांक्षाएँ एवं अभिलाषाएँ बड़ी ऊँची हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी वास्तविक स्थिति को भूल कर ऊँच ऊँच सपनों की दुनिया में विचरण करता रहता है, तो यथार्थ वादी समाज इस कहावत के जरिये उसके यथार्थ और कल्पना जगत के असमिलवतन को मिटाने का प्रयत्न करता है। ४८२।

रांड का सांड।

विधवा का हृष्ट-पुष्ट, राह चलते रार करने वाला बेटा। विधवा स्त्री के बेटे के सिवाय और कोई नहीं है। उसके पास जो कुछ धन-सम्पत्ति है वह अपने बेटे को खिलाने पिलाने में लगा देता है। बेटा भी अतः इस प्रकार के लालन पालन के कारण समाज के प्रति अपने साधारण दायित्वों को भूल जाता है। वह उद्दण्ड हो जाता है। लोगों को छेड़ता और सताता है। उस विधवा औरत का समाज कुछ बिगाड़ नहीं सकता क्योंकि पहले ही सब कुछ बिगड़ चुका है। उसे भी किसी प्रकार की चिन्ता नहीं। ऐसी स्थिति में दायित्वहीन आचरण करने वाले रांड के सांड की संज्ञा पाते हैं। ४८३।

रांड मेहरिया अन्ना भैंसा।
जो बिगरै सो होवै कसा॥

इसी बात को इस कहावत में आगे बढ़ाया गया है। विधवा औरत अगर

बिगड़े तो अर्नी मसा की तरह सबके लिए घातक हो सकती है। और जिस प्रकार अर्नी मसा को काबू म लाना असमव है उसी प्रकार विधवा औरत का नियत्रण म लाना असमव। उसके जीवन म चरम हताशा आ चुकी है। अत ऐसे हताश व्यक्तियो को समाज म यदि उचित मान सम्मान न मिला तो सारा समाज खतरे मे पड सकता है क्योंकि उन्हे समाज का चिन्ता क्यों सतायगी। ४८४।

राँड मरं न खण्डहर ढहैं।

बडा ही भावपूर्ण और गहरे अनुभव की कहावत है। अच्छे महलो और किलो का खण्डहर होने मे देर नही लगती पर खण्डहर ज्यो के त्यो बने रहते हैं। जिस प्रकार महल मिट कर खण्डहर बन गये उसी प्रकार खण्डहर मिट कर समाप्त हो नहीं जाते। खण्डहर बने रहते हैं। सधवा स विधवा हो जाती है पर विधवा बनी रहती है, वह जल्दी मरती भी नही। सधवाएँ मरती चली जाती हैं पर विधवाओ की अवस्था बढती ही जाती है। सामान्यत यह सत्य है कि विधवाए दीर्घजीवी होती है। जीवन का सौन्दर्य मिट कर कुरूपता म परिणत हो जाता है परन्तु यह कुरूपता नही मिटती। सौंदर्य मिट कर कुरूपता क रूप सचित एव अमर-सा हो जाता है। ४८५।

राई असि बिटिया माटा असि आखि।

अनुपातहीनता पर आक्षेप करते हुए इस कहावत का उपयोग किया जाता है। जब कोई व्यक्ति अपने सामर्थ्य से कहीं अधिक बडा काम उठाने की कोशिश करता है तो यह कहावत चरितार्थ होती है। लडका तो राई के समान छोटी है परन्तु आख बैगन के समान बडी है। इसी असमान अनुपात का सभव करने क असफल प्रयत्न म इस कहावत की उपयोगिता सार्थक होती है। ४८६।

राजा ते को कहै ढाकि लेओ।

राजा क सामने किसका साहस होगा कि कहे तुम नंगे दिखाई दे रहे हो, ढँक लो। कोई साधारण व्यक्ति कोई नग्नता प्रकट करे, कुछ अनुचित करे, तो उसे समझा बुझा कर ठीक मार्ग पर लाया जा सकता है पर यदि राजा ही ऐसी कोई भूल करे तो उसे कौन समझायेगा। प्रजा क आचरण को सुधारा जा सकता है पर राजा के दुराचार या आचरणहीनता को कैसे सुधारा जा सकता है। सत्ता सम्पन्न व्यक्ति का शक्तिहीन व्यक्ति उचित मार्ग कैसे दिखा सकता है? ४८७।

राजा रिसाई राज लेई, का मूड़ लेई।

राजा नाराज होगा तो अपना दिया हुआ अधिकार वापिस ले लेगा, और क्या जान लेगा ? यहा इस उक्ति मे विद्रोहात्मक भावना के साथ समर्पण की भावना छिपी हुई है। विद्रोह की भावना तो है क्योंकि उसे परवा नही कि राजा नाराज हो जायेगा, राजा नाराज होकर अपना दिया अधिकार वापस ले लेगा और क्या करेगा—मार तो नही डालेगा ? अर्थात् राज्य से बाहर जाने की भी सामर्थ्य नही है जान बची रहे—उसे अधिकार नही चाहिए। असमर्थ व्यक्ति होकर ऐसा उद्गार प्रकट करता है। ४८८।

रातिन छोटि कि च्वार भकुआ।

रात ही छोटी है कि चोर ही मूर्ख है कि सारी रात बीत गयी और अभी तक चोरी नहीं कर पाया ? आशय यह है कि चोर ही मूर्ख है, नहीं तो कितनी भी छोटी रात हो वह कुछ न कुछ तो अपना काम कर ही लेता। यह कथन बड़ी ही चतुराई से व्यक्ति की मूर्खता और अकुशलता पर व्यग्य करता है। बहुत सुदरता से व्यग्य को प्रस्तुत किया गया है। ४८९।

राह् बताव तौ आगे चल।

रास्ता बताने वाले को आगे चलना पडता है। केवल रास्ता दिखा देने से प्राय काम नही चलता। इसलिए जब कभी किसी को किसी की सहायता करने में अधिक परेशानी उठानी पड़ती है तो वह व्यग्य मे कहता है—ठीक है 'राह् बतावै तो आगे चल' केवल बताना काफी नही है। ४९०।

राह् मा हग ऊपर ले आखी गुरेर।

जब अपराधी व्यक्ति अपने अपराध को न स्वीकार करे और दूसरा पर शान भी जमाये तो यह कहावत चरितार्थ होती है। एसी ही एक अन्य कहावत है— 'उलटा चोर कोतवाल को डाँटे'। गाँवा मे विशेषरूप से बरसात में जब घास उग आती है तब ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। दिशा मैदान के लिए जाने वाला व्यक्ति साफ जगह की खोज मे शीघ्रतावश राह या पगडण्डी मे ही टट्टी कर देता है, और जब कोई डाँटता है तो वह उसे उलटा आँख दिखाता है और अपनी भूल को नहीं मानता। ४९१।

रोजु कुआ खोदब रोज पानी पियब ।

अर्थात रोज कमाना और रोज खाना । किसी दिन मेहनत-मजदूरी नहीं की तो पैसे नहीं मिलते और खाना मिलना भी दुर्लभ हो जाता है । अस्तु, जब व्यक्ति ऐसी स्थिति में होता है कि उसके पास जीवन निर्वाह के लिए कोई उचित प्रबंध नहीं होता और रोज कुछ कमा कर जीवन निर्वाह करना पड़ता है तो रोज कुआँ खोद कर पानी पीने के समान ही है । इसीलिए प्रत्येक गृहस्थ ऐसी व्यवस्था करता है कि उन दिनों भी उसे कठिनाई न उठानी पड़े । हमेशा तो हर आदमी में इतनी शक्ति नहीं होती कि वह मेहनत ही करता रहे । ४८२ ।

रोटी खाय घिउ सक्कर ते ।
दुनिया ठगै मक्कर ते ॥

यह चालाकी की बात है कि दुनिया को छल कपट से ठगो, पैसे कमाओ और ठाठ से घी शक्कर के साथ रोटी खाओ । बहुत ही अनैतिक एवं असामाजिक सीख है, पर अनुभवों पर आधारित है । दुनिया में यही दिखाई देता है कि जो झूठे बेईमान एवं धोखेबाज हैं वे चैन से जीवन व्यतीत करते हैं और बेचारे ईमानदार आदमी तकलीफ उठाते हैं । ४८३ ।

रोटी न कपरा सेंति का भतरा ।

न रोटी देना और न कपड़े पति बने रहना । कोई पत्नी अपने निखट्टू पति से ऊब कर ऐसा कहती है । कहावत रूप में आशय यह कि कर्तव्य तो एक भी न करना परन्तु अधिकारों का उपभोग करना । यदि पति के रूप में स्त्री पर आदमी के कुछ अधिकार हैं तो कुछ कर्तव्य भी हैं । यदि वह अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता और केवल अधिकार ही जताता रहता है तो वह मुफ्तखोर 'भतार' के समान है । ४८४ ।

लम्बे घूंघट चप्पे पाँय ।
घूंघट भीतर बड़े उपाय ॥

जो शालीनता का बड़ा प्रदर्शन करता है वह हमेशा सच्चा नहीं होता । उस आडम्बरपूर्ण आचरण के पर्दे में वह काफी दुराचारी भी हो सकता है । अस्तु जब अच्छा बनने का दिखावा किया जाता है, तो उसके भीतर बुराई पलती रहती है । कंठी माला धारण करने वाले प्रायः बड़े बेईमान होते हैं । कंठी माला उनकी बुराई को ढकने का आवरण मात्र होता है । बड़ा सा लम्बा घूंघट काढ़ने

वाला, बड़े दबे पाव चलने वाली स्त्री भीतर ही भीतर बडी भयकर भी हो सकती है। अस्तु दिखावा बुराई को छिपाने का प्रयत्न है। ४८८।

लहिलन का चबाव सहनाई का बजाउब।

चना चबाते हुए कोई शहनाई नही बजा सकता। चने चबाना वैसे ही कष्ट साध्य काय है फिर शहनाई बजाने के समय तो असभव ही है। दोनो काम ऐसे हैं जो एक साथ नही हो सकते। जब कोई व्यक्ति कठिन कार्यों को एक साथ करने का असफल प्रयास करता है तो समझदार व्यक्ति इसी कहावत के जरिये उसको इस व्यर्थ के प्रयत्न से रोकने का यत्न करते हैं। मुह म चने रख कर यदि शहनाई फूकी जायेगी तो चने शहनाइ म घुस जायेंगे। साँस नलिका म एक भी दाने के चले जाने म मृत्यु अवश्यम्भावी हैं। ४८६।

लातन के देव बातन ते नहीं मानत।

बिना मार खाय जो व्यक्ति बात को नहीं समझता उसके बारे मे यह कहा जाता है। प्राय बच्चो के साथ एसा होता है कि वे माँ बाप की बात नही मानते। उन्हें समझाते समझाते जब माँ-बाप थक जाते हैं, तब उन्हे गुस्सा आ जाता है और बच्चे को धमकाते हैं—‘बिना मार के तुम नही समझोगे। तुम्हारी पूजा लातो स करनी पड़ेगी।’ बच्चा समझे या न समझे पर मार के डर से वह बात को स्वीकार कर लेता है। इसी तरह इस धमकी का प्रयोग वयस्को के प्रति भी किया जाता है। जमीन्दारो के यहा इस कहावत का प्रयोग किसानों के लिए प्राय होता था। ४८७।

लादि देव, लदाय देव, लादनहारे साथ देव।

“राह बतावै तौ आग चलै” वाली कहावत का विस्तार इस कहावत म दिखाई देता है। एक तो कुछ सामान दो ऊपर स उसके लादने का प्रबध करो और लादने वालो को साथ भी भेजो। प्राय विवाहो म एसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। लडकी वाला बहुत सी चीजें दहेज म देता है। केवल देता ही नहीं, उनके लादने और लडके वाले के घर तक सुरक्षित रूप से भेजने का प्रबध भी करता है। देना भी दब प्रकार गुनाह हो जाता है। इसी प्रकार जब अच्छा काम करना भी अनेक अन्य कठिनाइयों के कारण कष्टसाध्य हो जाये तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ४८८।

लाल पियर जो होय अकास।
तौ नहीं बरखा क आस।।

यदि आसमान लाल-पीला हो जाये तो समझना चाहिए कि अब पानी नहीं बरसेगा। वैसे एक अन्य कहावत में कहा गया है कि 'लाल भरे ताल।' पता नहीं कौन ठीक है। वर्षा संबंधी अनेक संकेत सार्थक होते हुए भी कभी कभी गलत साबित हो जाते हैं। ४९९।

लाल भरे ताल।

जब आसमान में लाल बादल छाये हों तो समझना चाहिए कि वर्षा खूब होगी और तालाब भर जायेंगे। ५००।

लेव घुंघटाहो, लागे चिरकुटाहो।

फटे कपड़ों में घूंघट काढ़ने से लाज कैसे बचेगी? फटी हुई साड़ी से स्त्री के अंगों की लज्जा तो पहले ही उघड़ रही है घूंघट काढ़ने से लाज नहीं बच सकती है। यहाँ पर इस कहावत में ऐसी गरीब स्त्री के लज्जा न ढाँक सकने पर तरस नहीं खाया गया है, बल्कि क्रूर व्यंग्य किया गया है, कि पहनने ओढ़ने के लिए साबुत कपड़े तो हैं नहीं, पर घूंघट काढ़ कर लाजवती बनने का ढोंग करती है। केवल घूंघट काढ़ने से ही सामाजिक मर्यादा नहीं मिल सकती। गरीबी ऐसे प्रतिष्ठा प्रदर्शन को उघाड़ देती है। ५०१।

लोखरीवा का अस बिहान।

लोमड़ी रात के पहले पहर में बसेरा लेने के पहले बहुत शोर मचाती है। उससे यह कल्पना की गयी है कि वह रोज अपने घर के लिए परेशान होती है, और इसलिए ऐलान करती है कि सवेरा होने पर वह अपने बसेरे के लिए घर बना लेगी। रोज ऐसा ही होता है, घर कभी नहीं बनाती। कहावत इस प्रकार झूठे वायदे या एलान करने वाले के प्रति व्यंग्य रूप में कही जाती है कि तुम्हारा वायदा तो लोमड़ी की तरह का है, जो रोज शाम को घर बनाने की बात कहता है, पर पूरा कभी नहीं करती। ५०२।

(स)

सक्करे माँ समध्यान।

जहा बहुत लोगो ने अपने लड़के ब्याह रखे हो वहा सम्बन्ध करना सक्करे म समध्यान करने के समान है। अर्थात जहा जगह न हो वहा जगह बनाने का कष्टसाध्य प्रयत्न अधिक हितकर नही है। एक बेंच पर पहले से ही पाच आदमी बैठे हैं, और एक अन्य व्यक्ति उसी बेंच पर बैठने की कोशिश कर रहा है—वह सक्करे मे समध्यान कर रहा है। रलगाडियो म यात्रा के समय ऐसे बहुत स मौके आते ही रहते है। ५०३।

सदेसन खेती नहीं होति।

खेती तो उसी की ठीक होती है जो खुद करता है। हुकुम और सदेशो स खेती नही होती। खेतो म काम करने वाला तभी ठीक काम करगा जब कोई निगेहबान हो। बिना खुद की देख रेख के नौकरो की लापरवाही से खेती बिगड जाती है। खेत म कब पानी देना चाहिए कब निराना चाहिए कीडे तो नही लग रहे, इत्यादि बातो पर हमेशा ध्यान देना चाहिए तभी खेती अच्छी होती है। ५०४।

सकल चुड़लन कै मिजाज परिन के।

जब कोई कुरूप औरत बहुत नखरे करती है तो अन्य स्त्रिया को बर्दाश्त नही होता और वे गानी की तरह इस कहावत का प्रयोग करती हैं। ऐसी कहावतें पीठ पीछे गुराइ करने म बड़ा मजा करती हैं और गाँवो म स्त्रियाँ काफी चबाव करती रहती है। ५०५।

सगी सासु का सासु न कहैं घोबइन जीजो पैयाँ लागौं।

सासु-बहू के बिगडे हुए सम्बन्ध के कारण ऐसा हो जाता है कि नयी बहू का बाहर वालों स अधिक सहानुभूति पाने से उनके साथ अधिक घनिष्ठता हो जाता है। सासु का यह बर्ताव बुरा लगता है। बहू अपना कमी तो समझता नहीं। बहू बाहर वालो के साथ इतना ममता क्या रखती है इसस वह चिढ़ता है। अगर सासु बहू के साथ अच्छा व्यवहार करे तो बहू सासु को सबसे अधिक सम्मान

देगी पर अनेक कारणों से ऐसा नहीं होता, और बहू के लिए धोबिन भी जीजी के समान हो जाती है। घरेलू चित्र उपस्थित करने वाली कहावत है। ५०६।

सत्तारी बुढ़िया खेलै धुरिया।

सत्तारी बूढ़ी औरत क्या करे—धूल में बच्चों के समान चित्रकारी करे—यानी धूल से खेल। सामान्यता कम ही बूढ़ी औरतें दिखायी देंगी जो काम में न लगी रहती हों। परन्तु शरीर से शिथिल हो जाने के कारण वे कोई काम नहीं करती तो धूल में ही खेलती रहती हैं। आखिर समय व्यतीत करने के लिए कुछ तो चाहिए ही। ५०७।

सबके पाँय नउनिया धोवै आपन धोवत लजाय।

छोटे ही बड़ों के पैर धोते हैं। कभी कोई बड़ा छोटे के पैर नहीं धोयेगा। सबके पैर धोकर छोटी बनने पर भी नाइन को लाज नहीं लगती, पर अपने पैर धोने में वह लजाती है मानो वह अपने पैर धोने से छोटी हो जायगी। अर्थात दूसरों का छोटा काम करने में लाज नहीं लगती परन्तु अपना काम करने में लाज आती है। अपने घर या गाँव में अपनी शान बनाये रखने के लिए बहुत से लोग ऐसे काम नहीं करते जिन्हें शहरों में जाकर दूसरों के लिए करते हैं। बहुत से लोग शहरों में बर्तन चौका करते हैं पर अपने गाँव लौटने पर अपने घर का चौका बर्तन भी नहीं करते। ५०८।

सबै जन दाढ़ी रखा लेहैं तो चूल्हु को फूकी ?

दाढ़ी रखा लेने पर चूल्हा फूँकने में दाढ़ी के जल जाने का खतरा रहता है। अतः दाढ़ी की हिफाजत के बहाने दाढ़ी वाला रसोई के काम से मुक्त हो जाता है। पर यदि सभी दाढ़ी रखा लेंगे तो चूल्हा कौन फूकेगा ? जीवन में हर तरह की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिनका सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कुछ ऐसे भी काम होते हैं जो किसी को अच्छे नहीं लगते पर यदि उन्हें कोई न करेगा तो काम कैसे चलेगा। फिर खाने पकाने का काम यदि कोई न करना चाहेगा तो भोजन कैसे मिलेगा ? ५०९।

सब गुन भरी बदरा सौंठि।

वैद्य की सोंठ सभी गुणों से पूर्ण होती है। जब कोई व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होने का प्रयत्न करता है तो न होने पर यह व्यंग्य किया जाता है, और इस कहावत

का प्रयोग किया जाता है। बहुत चालाक आदमी की चालाकी पर भी इस कहावत से कभी कभी व्यंग्य कर दिया जाता है। ५१०।

सब गुरू लोटा होइगा।

गुड बनाते समय चासनी ठीक न बनने से कभी कभी ऐसा होता है कि भेली नही बनती और गुड बहने लगता है। कभी-कभी सीलन की जगह में रखने की वजह से भी गुड लाटा या लपिटा हो जाता है, जिसे बच्चे बहुत पसंद करते हैं। ऐसी ही एक अन्य कहावत है— 'सब गुर गावर होइगा।" सारा गुड बिगड गया। अर्थात् जब लगभग बना बनाया काम बिगड जाय तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ५११।

सब धान बाईस पसेरी।

अच्छे-बुरे मे भेद न करने पर इस कहावत का प्रयोग होता है। अच्छे और बुरे सभी धान एक ही भाव बिकेंगे तो उनके गुण मे अंतर क्या हुआ। यदि अच्छे और बुरे आदमी के साथ समाज एक सा ही व्यवहार करेगा तो फिर अच्छा बनने की क्या आवश्यकता ? व्यक्ति के गुणो का सम्मान होना ही चाहिए और उसकी बुराइयो की कदथना भी होना चाहिए, तभी समाज मे अच्छाई बढेगी और बुराई घटेगी। ५१२।

सत्तारा बनिया का करै।
यह कोठी के धान वोहि कोठी धर ॥

बुड्ढी औरत की तरह बनिया भी सत्तारा या निठल्ला बैठा नही रह सकता। बिना काम के उसे बहुत कष्ट होता है। अत सत्तारा होने पर यदि और कोई काम न मिला तो वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर चीजो को रखता उठाता रहता है। परन्तु यह बेकार का काम है। अस्तु जब कोई इसी प्रकार का बेकार का काम करता दिखाई देता है, तो लोग व्यंग्य करते हैं कि सत्तारे बैठे-बैठे क्या करे यहा रही। ५१३।

सभा पराई की बठक मा चहिऐं एक कौनि दुइ भाय।
एकु ते बातैं होवइ लाग दूसर खचि लेय तरवारि ॥

यह आदर्श वह स उचित है। दूसरे की सभा म उसी समय उपस्थित होना ठीक है, जब दो भाई साथ हों। जब तक एक स गर्मा गर्मी की बातें होने लगें

तब तक दूसरा तलवार खीच ले। दूसरे के राज्य म अकेले नही जाना चाहिए और जो साथी हो वह भी ऐसा हो जैसे सहोन्दर भाई, जो तुरत मरने मारन के लिए तैयार हो। राजपूती शान के समय की बात है। ५१४।

समरथ का नहिं दोस गोसाईं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस कथन म जावन के घोर मत्य का उद्घाटन किया है। जो व्यक्ति समथ एव शक्तिशाली है वे कुछ भा करें उन्हें काई दोपी नहीं ठहरा सकता। आजकल पैसे वाले और सत्ताधारी कुछ भी करें उनका कोई कुछ नही बिगाड सकता। समथ यक्ति अपने समस्त दोपा एव भूला पर पर्दा डाल सकते हैं। समाज म उनकी बुराई की यदि कोई चर्चा करता भी है तो दूसरे यही कह कर आगे बढ़ जाते हैं कि वे तो बडे लोग हैं उनको सब माफ है। ५१५।

सरग ते गिरा खजूर मा अँटका।

किसी कठिन काय म सफलता प्राप्त करते करते माग म फिर बाधा उपस्थित हो जाय। स्वग से तो चीज चली पर खजूर म अटक गया। काम बनते बनते रह जाये तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। एक बाधा दूर हुई तो दूसरी आ गई। ५१६।

सापौं मरि जाय और लाठिउ न टूटै।

कोई भी काय हा ऐसी चतुराई स करना चाहिए कि काम भी बन जाये और किसी प्रकार का नुकसान भी न हो। साप मारने मे यदि लाठी टूट गयी तो कोई चतुराई या कुशलता की बात न हुई। ऐसी हाशियारी स साँप को मारना चाहिए कि साँप मर भी जाये और लाठी भी न टूट। बिना किसी प्रकार के नुकसान उठाय कार्य को सम्पान्न कर लने पर उपयुक्त कहावत चरिताथ होती है। ५१७।

सापन की लडाई मा जीभिन का लपलपौआ।

साँप की लडाई म और क्या होगा सिवाय जीभ लपलपान के। बहादुर लोग लडते हैं तो लाश गिर जाती हैं तलवारें चलती हैं, परन्तु यदि चालाक बेईमान लोग लडते हैं तो केवल मुह स। उनकी केवल जीभ चलती है। जीभ की लडाई भी कोई लडाई है ? वह ता मुह लडाना है—भगना है। तो जब कही

लोग मुह लटान लगते हैं तो कुछ बहादुर लोग कहते हैं, 'अरे कुछ न होगा सब जवानी जमा खर्च है। साँपो की लडाई मे जीभ लपलपाने के सिवाय और क्या होगा ? ५१८।

साझे कै खेती गदहौ न खाय।

साझे म खेती नही करनी चाहिए। उसम अनेक प्रकार के झगडे खडे हो जाते हैं। ऐसी खेती गधे के भी काम की नही होती। ५१९।

सारा पजावै खझड़ है।

पजावा ईंटो के पकान का भट्ठा। सारी ईंटें अधिक पक कर अनगढ बन गयी हैं। अर्थात् पजावे की सारी ईंटें खराब हो गयी हैं। जब अप्रत्याशित रूप स किसी जगह की सभी चीजें अथवा किसी समुदाय अथवा किसी परिवार के सभी लोग बुरे निकलें तो इस कहावत का प्रयोग करते हैं। एक-दो बुरे हो तो कुछ कहा सुना जाय या कुछ किया जाय परन्तु जब सभी खराब हो तो क्या किया जा सकता है ?। ५२०।

सावन के अंधरे का हरै हरा सूझत है।

सावन म अधे होने वाले को हमेशा हरा हरा ही दिखाई देता है क्योंकि आँखो न आखरी दृश्य हरा हरा ही देखा था। वह वैसा ही समझता है। अत्यधिक आशावादी दृष्टिकोण के कारण जब कोई व्यक्ति किसी खराबी को नहीं देख पाता और हमेशा यही समझता है कि सब कुछ बिलकुल ठीक है तो इसी कहावत को चरितार्थ करता है। हमेशा हरा भरा दिखाई दे तो बडे आनन्द की बात है, परन्तु यथार्थ जीवन म ऐसा नहीं होता। आशावादी होना अच्छा तो है, परन्तु यथार्थ को न देख पाना भी अच्छा नही है। ५२१।

सावन घोडी भादौं गाय, माघ मास जो भसि बिआय।
घाघ कहैं यह पक्की बात, आपु मर कि मलिक खात॥

घाघ की कही सगुन सबन्धी कहावत है। सावन में घोडी भादो म गाय और माघ मास म भस का बियाना अच्छा नहीं होता। या तो वह स्वयं मर जायगी या मालिक की मृत्यु का बहाना बनगी। अत ऐसी घोडी, गाय और भस को दान म दे देना चाहिए। परन्तु य जानवर इतने अच्छे और मंहगे होते हैं कि लोग असगुन को जानते हुए भी उन्हे न बेचते हैं और न दान में देते हैं। ५२२।

"ससुरारि सुख क सारि !"
"जो रहे दिना दुई चारि ।"
"जो रहै एकु पखवारा !"
तौ हाथ मा खुरपी बगल मा खारा ।"

ससुराल सुख की सार है। जीवन की असली एव पूर्ण सुख ससुराल म ही मिलता है। पर शर्त यह है कि दो चार रोज ही ठहरे ज्यादा नही। जो एक पखवाडा (१५ दिन) रहा तो हाथ म खुरपी और बगल म खारा लेकर घास छीलने जाना पडेगा। यह वार्तालाप घाघ और उनकी पतोहू के बीच का बताया जाता है। कही भी अधिक दिनो तक खातिर नही हो सकती। अधिक सम्पर्क स मान घटता है। कोई कहा तक न्निाव के लिए सेवा करता रहेगा ?। ५२३।

सासु त बरु नग्न से नाता।
एसि बहुरिया न देय बिधाता।।

सगी सासु का मासु न कहैं धोनइन जीजी पैया लागौ। ' दाना कहावतें एक हा भाव को व्यक्त करती हैं। सासु। बहू का अच्छा सम्बन्ध नही बन पाता क्योकि जिस अधिकार से सासु बहू क साथ बर्ताव करती है वह उसे सुखकर नही होता। अस्तु स्वाभाविक ही है कि वह अयन ऐसे सम्बन्ध खोजे जहां उसे कुछ अपनत्व या प्यार मिल सके। सासु के कारण हा उत्पन्न होने वाली यह स्थिति सासु को बहुत बुरी लगती है। इस कहावत म सासु बहू के इसी व्यवहार पर ताना मार रही है। ५२४।

सासी पदनी ननदो पदनी हमरेहे पादे होय बेबादु।

सासु बहू के सम्बन्ध का एक और भाकी इस कहावत मे प्रस्तुत होती है। सासु और बहू के बिगडे हुए सबन्ध को ननद और भी बिगाड देती है। बहू एसी स्थितिया पर कह बैठती है कि भूल सासु ननद सभी करती हैं पर कोई नहीं बोलता जब मुझसे कोई भूल हो जाती है तो सभी लोग विरोध करने लगते हैं। पादने के समान हा भूल करना भी मनुष्य के लिए स्वाभाविक है। परन्तु वह कहती है कि अपनी भूलो पर सासु और ननद कोई ध्यान नही देती मेरी भूल पर मुझे तानें देती हैं। ५२५।

सिहा गरजै हथिया लरजै।

है। अर्थात इन दोना नक्षत्रा मे खूब वर्षा होती है। ये वर्षा ऋतु के नक्षत्र हैं। ५२६।

सिकार की बेरिया कुतिया हगासी।

जिस समय जिसकी जरूरत हो, वह उसी समय गैरहाजिर हो जाये तो यह कहावत बहुत अच्छा साबित होती है। शिकार के समय कुत्ते की सबसे अधिक जरूरत होती है और कुत्ता उसी समय गायब हो जाता है। अक्सर क्रोध मे आकर यह कहावत कही जाती है, जिसम से गाला का सा प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। ५२७।

सियारन के मनाए डगरु न मरी।

सियार अमगल के प्रतीक हैं। ऐसे दुष्टा की इच्छाएँ कभी पूरी नही होती। डगर अर्थात भेडिया या बाघ, ऐसो के मनाने स नही मर सकता। बाघ अपनी शक्ति से जीता है वह शक्तिशाली है। वह सियारो की बददुआ या इच्छा से नही मरेगा। कमजोर आदमी प्राय अपनी विवशता मे शक्तिशाली लोगा को गलियाँ देते रहते हैं या उनकी अहित कामना करते है पर तु शक्तिसम्पन्न व्यक्तियो का उनकी अहित कामना से कुछ नहीं बिगडता। ५२८।

सीधी अगुरी घिउ नहीं निकरत।

सर्दियो म जब घी जम जाता है और सख्त हो जाता है तब घी बडा मुश्किल से निकलता है। ऐसी कहावत है कि घी निकालने में भी फासें लगती हैं। इस प्रकार जमे हुए घी मे सीधी अगुली नही घँसती। अँगुलियाँ टेढी करके बकोट से निकालना पडता है। अन्योक्ति रूप म यह कहावत काम को कठिनाई की ओर सकेत करती है और सुभाव पेश करती है कि सीधे या आसानी से यह काम नही होगा। इस काम को पूरा करने के लिए कुछ हिम्मत लगानी होगी और हो सकता है कि कुछ टेढा या बुरा भी बनना पड़े। किसी उलझे हुए मुश्किल कार्य को पूरा करन के लिए जब कुछ अनुचित उपाय करने की जरूरत महसूस हो तो इस कहावत म सकेत किया जाता है। ५२९।

सीधे का मुँह कुकुर चाट।

सीधे आदमी को कोई भी परवाह नहीं करता, यहाँ तक कि कुत्ता भी उसका मुह चाटता है। इस विचित्र दुनिया में उसी की कदर होती है जो सबग होता

है। लोग आतंकित होकर सम्मान करते हैं। इसीलिए तुलसी दास जी ने ठीक ही कहा है कि "बिन भय होत न प्रीति।" लोगों के मन में भय पैदा करो, लोग मानने लगेंगे, और स्नेह एवं सम्मान भी देंगे। सीधे बने रहने पर कोई नहीं पूछता कैसी विचित्र बात है पर कितनी सच। ५३०।

सुखन बोधो पीना नहीं खातों।

खुशी से कोई पीना नहीं खाता क्योंकि उसका स्वाद अच्छा नहीं होता। परन्तु धार्मिक एवं परम्परागत ऐसी अन्य बाध्यताएं उत्पन्न हो जाती हैं कि विवश होकर खाना पडता है। जब कोई व्यक्ति जबरदस्ती बेमन कोई काम करता है, और अन्य व्यक्ति उसकी प्रशंसा में कुछ कहता है तो जानकार व्यक्ति परिस्थिति को स्पष्ट करते हुए उसे बताता है कि वह खुशी से ऐसा नहीं कर रहा है। करने के लिए विवश है। दूसरा अर्थ भी लगभग ऐसा ही है कि व्यक्ति खुशी से काम नहीं करता जब जोर डाला जाता है तो मजबूर होकर करने लगता है। अर्थात दबाव से ही काम होता है खुशी से नहीं। ५३१।

सुक्बार की बादरी, रही सनीचर छाय।
ऐसा बोल भड्डरी बिन बरसे न जाय॥

इस कहावत पर लोगों को बहुत विश्वास है। वर्षा के दिनों में तो इस कहावत का प्रयोग अक्सर ही सुनाई देता है। शुक्रवार के दिन की आयी बदली यदि शनिवार को भी छाया रही तो भड्डरी का ऐसा कहना है कि वह बिना बरसे नहीं जायगी। शुक्रवार और शनिवार के बादल जरूर बरसते हैं। ५३२।

सूत न कपास कोरीवा ते लट्ठम लट्ठा।

निराधार बड़ी बड़ी बातें करना। न सूत है न कपास, कपडा बिनाने के लिए व्यर्थ में कोरी से विवाद किया जा रहा है। कभी-कभी लोग बड़े-बड़े सपनों के महल बनाते रहते हैं कभी कभी लोग भविष्य की चिंता में बेमतलब परेशान होते रहते हैं कभी कभी लोग बेमतलब किसी से झगड़ा मोल ले लेते हैं इन सभी स्थितियों में इस कहावत का उपयोग किया जाता है। कोरी से बात करना तभी सार्थक होगा जब सूत हो या कपास हो जिससे कपड़ा बिना जा सके। अब तो बहुत करके यह पेशा ही बन्द हो गया है। ५३३।

सूप का उलारा सूपै माँ न रही।

बच्चा जब पैदा होता है तब सूप म लिटाया जाता है। धीरे धीरे वह बढता है और इतना बडा हो जाता है कि वह सूप म नही लेट सकता। विकास के कारण जो परिवर्तन आ गया है उसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है। कभी कभी लोग भोलेपन मे किसी व्यक्ति का हमेशा एक सा समझते हैं परन्तु भिन्न रूप म पाकर चकित होते हैं तो वही व्यक्ति या कोई अन्य उसे समझाता है कि भाइ सूप का उछाला सूप मे हा नही रहगा बाहर जायेगा, बढेगा। ५३४।

सूप बोलै तौ बोल चलनी का बोलै जेहिमा बहत्तर छेद।

यह कहावत बडी ही दिलचस्प है। सूप प्रतीक निर्दोषिता का और चलनी प्रतीक है मानवीय भूलो का। जो व्यक्ति निर्दोष है वह अगर दूसरे के दोषो की निन्दा करे तो ठीक है पर यदि स्वय दोषी है तो दूसरे के दोषो की निन्दा करना उसे शोभा नही देता। ऐसी स्थिति म जब कोइ दोषी व्यक्ति किसी अन्य की भूलो का बखान करता है तो कोई टोक देता है कि सूप बोले चलनी क्या बोले जिसम बहत्तर छेद। उसके दोष तो सूप की अपेक्षा छेदो के रूप म प्रकट हैं। सूप म तो एक भी छेद नही। ५३५।

सेतुआ माँ गडवा करै नहीं जानत।

जब कोई आदमी बिलकुल भोला या अनजान या निर्दोष बनने का नाटक करता है तो व्यग्य रूप म यह कहावत सुनना है। आप इतने भोले हैं कि आपको सत्तू म गड्ढा करना भी नही आता। सत्तू म गड्ढा करके उसम नमक या शक्कर और पानी डाला जाता है और उसे सान कर खाया जाता है। गड्ढा करने की बात म थोडा सैक्स सबधी सकेत भी हो सकता है। ५३६।

सेर भरे के बाबा सवा सेर क सद्ध।

जब कोइ व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से अधिक काय करने की कोशिश करता है तो इसी कहावत को चरितार्थ करता है। कभी कभी लोग बहुत अधिक बोझ उठाने की कोशिश करते हैं। बाबा तो स्वय तो सेर भर के हैं पर शख सवा सेर का लादे घूमते हैं। इसका दूसरा व्याख्या भी है जो महत्त्वपूर्ण है। कभी-कभी लोग प्रदर्शन के लिए अथवा अपनी विशिष्टता के लिए अपनी सामर्थ्य से बाहर का दिखावा करते हैं, जो लोगो की समझ म शीघ्र ही आ जाता है।

अपने साधुत्व का विश्वास दिलाने के लिए बाबा जी बड़ा भारी शंख बाँधे घूमते हैं। ५३७।

स I कहैं पतनी, मैं बलि बलि जाना।

मूर्ख लोग प्राय यह नहा समझ पाते कि उनकी बुराई हो रहा है या प्रशंसा। कभी कभी अपनी बुराई को भी व अपनी प्रशंसा समझ लेते हैं और दुनिया भर को सुनाते फिरते हैं। लोग सुनते हैं और उनका मूर्खता पर हसते हैं। पति न अपनी मूर्खा पत्नी को कुछ व्यंग्य म बुरा कहा, वह समझी कि उसके पति ने उसकी बडी बडाई की—वह बडा खुश हुई। सयां तो बुराई कर रहा है और बोआ जो खुशी से फूली नहीं समाती। ५३८।

सयां भये कोतवाल अब डर काहे का।

जब अपने सयां ही शहर के कोतवाल हो तब डर किस बात का? शहर मे कोतवाल का राज्य होता है, फिर उसकी पत्नी के क्या कहने? जब कोई व्यक्ति सत्तारूढ दोस्त या रिश्तेदार की शक्ति के बल पर मनमाना करने लगता है तो लोग व्यंग्य से इस कहावत का उपयोग करते हैं। किसी अन्य की शक्ति के आधार पर जब कोई साधारण शक्तिहीन अनाधिकार और अनुचित कार्य करने लगता है, तो लोग व्यंग्य कसे बिना नही रहते। ५३९।

सो जीत जो पहिले मार

पहले मारने वाला जीतता है। अँग्रेजी म भी कहावत है —ofence is the best defence। मार के मामले में पहला हाथ मारने से विपक्षी पर धाक जम जाती है। वह कुछ डर जाता है। और जब बदले मे मारने लगता है तब बहुत से लोग एकत्र हो जाते हैं और उसके विपक्ष म जनमत तैयार हो जाता है। अथवा बीच बचाव कर देते हैं और वह बदला नही ले पाता। जो मार ल गया सो मार ले गया जीत गया। फिर दूसरी कहावत भी तो है कि 'मारि कै टरि रहे।' फिर मार ऐसी भी लग सकती है कि व्यक्ति उलट कर मारने लायक ही न रहे। अनुभव जगत की यह बात सर्वथा सच्ची है। ५४०।

सोनु जान कसे, मनई जान बसे।

सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से ही होती है और आदमी की परीक्षा उसके साथ या पडोस मे रहने से। दूर रहते हुए आदमी अच्छा बनने का सफल

प्रदर्शन कर सकता है पर जब नित्य प्रति अच्छाई की परीक्षा होगी तब पता चलेगा। थोड़े समय में दूर दूर रहते हुए कोई व्यक्ति किसी के संबंध में सही राय कायम नहीं कर सकता। अनुभव से ही व्यक्ति को जाना और परखा जा सकता है। ५४१।

सौख बड़ी घर कोलिया माँ।

शौक तो बड़े है पर क्या करें—घर सँकरी गली में है। बेचारे शौकीन बाबू की सारी शौकीनी उनके मकान की स्थिति से बिगड़ जाती है। जब कोई व्यक्ति अपनी सुरुचि का बहुत प्रदर्शन करता है और बना-बना घूमता है, तो यथार्थवादी समाज उसके इस प्रदर्शनकारी रूप से प्रभावित नहीं होता बल्कि उसके झूठ का भण्डाफोड़ कर देता है। रहना तो कोलिया (सँकरी गली में) और शान दिखाना ऐसी मानो किसी राजपथ पर अवस्थित बँगले में रहते हों। ५४२।

सौतीन बुढ़िया चटाई का लहगा।

इस कहावत का उपयोग उपर्युक्त कहावत की भाँति ही होता। यहाँ इस कहावत में किसी बुढ़िया की शौक पर व्यंग्य किया गया है। बुड्ढी इतनी शौकीन है कि विशेष दिखने के लिए चटाई का लहँगा पहने हुए है। बुड्ढा शौकीन तो बहुत है पर लहगा चटाई का बना हुआ है। यह कहावत भी व्यक्ति की प्रदर्शनकारी वृत्ति पर कटाक्ष है। इस कहावत की विशेषता यह है कि इसमें स्त्री का आधार लिया गया है। व्यंग्य और भी मार्मिक हो जाता है जब बुढ़िया की शौकीनी की चर्चा की जाती है। स्त्री बुड्ढी होने पर भी शृंगार प्रिय होती है। ५४३।

(ह)

हंसा रहें सो मरि गए, कौआ भए देवान।
जाहु विप्र घर आपने, को काको जजमान ॥

हँस विवेक और उदारता का प्रतीक है और कौआ स्वार्थलिप्सा, कुरूपता और चालाकी का प्रतीक है। इसी आधार पर यह दोहा कहा गया है कि जब तक हंस राजा के दीवान थे तब तक सबको यथायोग्य समुचित मान-सम्मान प्राप्त होता था और अब उनकी मृत्यु के उपरान्त कौआ दीवान हुआ है अतः अब कौन किसका सम्मान करेगा ? हे ब्राह्मण देवता अब तुम लौट जाओ। राज्य

ावश्यकताओ की ओर ध्यान नही देते तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। ५५२।

हाथन कै अरसई मुँह मा मोछा जाय।

इस कहावत मे आलसी आदमी पर व्यग्य किया गया है। मुच्छ के बाल प्राय बडे होने के कारण मुँह के भीतर चले जाते हैं ता हाथ से उन्हें हटा दिया जाता है। पर आलसी आदमी इसकी चिता नही करता और मुह मे मुच्छ के बालो को जाने देता है। जरा सी बात है और वह अपने लिए ही, पर आलसी आदमी अपने लिए भी हाथो को इतना कष्ट नही देना चाहता जब कि पशु भी पूँछ हिला कर अपनी मक्खियाँ हाँकते रहते है। ५५३।

हाथ कगन का आरसी का।

जो हाथ म कगन पहन हुए है उसे दर्पण को क्या जरूरत है—जब चाहा जडे हुए कगन के हीरो म (काँच म) मुह देख लिया। प्रत्यक्ष प्रमाण की आवश्यकता नही होती। प्रमाण देने की निरर्थकता की बात इस कहावत म कही गयी है क्योकि उसकी सत्यता स्वत प्रकट है। ५५४।

हाथिन साथ गाडा खाय।

बडे लोगो के साथ बराबरी का व्यवहार करना और किसी दिन मुसीबत म पडना। हाथी किसी खेत मे घुस कर गन्ना खाता है—बेचारा किसान उस हाथी का कुछ नही कर सकता। वह डरता है। परन्तु उसी के साथ कोई अन्य छोटा पशु गन्ना खायेगा तो किसान उसको ठिकाने लगा देगा। अन्य व्यक्ति की शक्ति के सहारे कुछ ही समय तक आराम मिल सकता है। अन्ततोगत्वा ऐसे व्यक्ति को कष्ट ही उठाना पडेगा। इस कहावत म ऐसी ही चेतावनी है और व्यग्य भी। ५५५।

हाथी का पेटु पिराय,गदहा दागा जाय।

कमजोर और सीधे व्यक्ति को ही इस दुनिया म तकलीफें उठानी पडती हैं। दद हाथी के पेट में है जिसका इलाज होना चाहिए। पर इलाज के लिए हाथी को दागने की किसी मे हिम्मत नही अत उसके इलाज के लिए बेचारे गधे को दागा जाता है। बहुत यथार्थ है। बडे आदमी से सभी डरते हैं अत। उनसे कुछ नही कह सकते, परन्तु उनकी भूलो के लिए किसी सीधे सादे व्यक्ति को दण्डित करते हैं। जीवन म प्राय ऐसा होता रहता है। ५५६।

हित अनहित पसु पच्छिम जाना।

तुलसीदास जी की चौपाई का अश है। कोई कितना भी मूर्ख या अनानी क्यों न हो अपना हित अनहित सब कोई पहचानता है। पशु पक्षी भी जानते हैं कि कहा उनके लिए खतरा है, और कहा सुख। अपने हित-अनहित को सभी पहचानते हैं। ५५७।

हिया कुम्हड बतिया कोऊ नाहीं।

लक्ष्मण जी के प्रख्यात वचन हैं जब वे परशुराम से बातें कर रहे हैं। वे परशुराम के फरसा से न डरते हुए, निर्भीक होकर कह रहे हैं कि यहा कोई कुम्हड़ (कासा फल) की बतिया नही, कि अंगुराने (अंगुलिनिर्देश मात्र) से मुरझा जाय। ऐसी लोक मान्यता है कि कुम्हडा की बतिया की ओर अंगुली नही उठानी चाहिए नहीं तो बतिया नहीं बढ़ेगी—कुम्हला जायेगी। इसी लोक मान्यता का तुलसीदास जी ने यहा पर सुदर उपयोग किया है। ५५८।

हिसकन पाद भण्ड कै घोडी।

भण्ड पतित—अशुद्ध व्यक्ति। ऐसे व्यक्ति की घोडा देखा-देखी या होडहाडी पादता है। किसी को देख कर कोई व्यक्ति पाद नही सकता। परन्तु यह आदमी ऐसा है कि नकलबाजी से बाज नही आता। पाद नहीं आ रहा फिर भी पाद रहा है। बिना जरूरत जब कोई किसी की देखा देखी करता है, जिससे उसको कोई लाभ नही होता तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। इस कहावत में नकलबाजी की निन्दा की गयी है। कभी कभी कुछ लोग दूसरो की देखा-देखी अपने को बीमार तक बताने लगते हैं जो कि बीमार नही होते। ५५९।

हिसकन हिसकन गदही बियानि,
गदही के बच्चा मरि मरि जायँ।

नकलबाजी से कोई काज किसी तरह हो तो गयी पर उसको सम्हाल कर न रखा जा सका। देखा देखी मान लो गदही ब्यायी पर बच्चे मर मर जाते हैं। इस कहावत में भी नकलबाजी पर कठोर कटाक्ष किया गया है। दूसरे की नकल से कुछ प्रारम्भिक सफलता मिल भी गयी तो क्या अन्त में तो वही होगा जिसकी योग्यता व्यक्ति में होगी। अयोग्य व्यक्ति नकल के सहारे हमेशा सफल नहीं हो सकता। ५६०।

होइहै वही जो राम रचि राखा।

तुलसीदास जी की चौपाई का अंश है। उनका राम पर अटल विश्वास था। उनकी इच्छा के विपरीत पत्ता भी नहीं हिलता। वही होगा जो राम ने सोच रखा है या जिसकी योजना प्रभु के मस्तिष्क में है। मनुष्य के सोचने विचारने से कुछ नहीं होता यदि राम की इच्छा नहीं होती। तुलसीदास जी की इसी मनोवृत्ति का दर्शन हमारे देश में सामान्य रीति से होता है। यही भाग्यवादी मनोवृत्ति है। ५६१।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

होनहार लोगों के व्यवहार से पहले ही आभास मिलने लगता कि आदमी होनहार होगा। पूत के पाँव पालने में ही दिखाई देने लगते हैं। किसी अच्छे व्यक्ति की अच्छाई पहले से ही प्रकट होने लगती है। ५६२।

होम करत हाथ जरति हैं।

अच्छा काम करने में भी जब मनुष्य को कष्ट उठाने पड़ते हैं तो इस कहावत का उपयोग किया जाता है। जीवन में प्रायः ऐसी स्थितियाँ आती हैं जबकि अच्छे इरादों से अच्छे काम करने वालों को भी अपयश भोगना पड़ता है। अग्नि में आहुति डालने में हाथ कुछ जलते ही हैं अतः कष्टों से घबरा कर अच्छा काम करना बन्द नहीं कर देना चाहिए। ५६३।